नूर[1] मैं नूर है तेज मैं तेजहि, ज्योति मैं ज्योति मिले मिलि जैये।
क्या कहिये कहते न बनै कछु, जो कहिये कहतेहि लजैये ॥१॥
जो कहूं है सब मैं वह एक तु, सो कहँ कैसो है आँखि दिखैये।
जो कहूँ रूप न रेख दिसै कछु, तौ सब झूंठ कि मानि[2]हि कैये॥
जो कहूँ सुंदर नैननि माँझ तु, नैन रु बैन गये पुनि हैये।
क्या कहिये कहते न बनै कछु, जो कहिये कहतेहि लजैये ॥२॥
होत बिनोद जितो अभिअंतर, सो सुख आप मैं आपहि पैये।
बाहिर कूँ उमँग्यो पुनि आवत, कंठ तैं सुंदर फेर पठैये॥
स्वाद निवेर निवेर्यो न जात सु, मानहुं गुड़ गूँगे नित खैये।
क्या कहिये कहते न बनै कछु, जो कहिये कहतेहि लजैये ॥३॥
ब्योमको ब्योम अनंत अखंडित, आदि न अंत सु मध्य कहाँ है
को परमान करै परिपूरण, द्वैत अद्वैत कछू न जहाँ है॥
कारण कारज भेद नहीं कछु, आप मैं आपहि आप तहाँ है।
सुंदर दीसत सुंदर माहिं सु, सुंदरता कहि कौन उहाँ है ॥४॥

॥ प्रश्नोत्तर

एक कि दोइ ? न एक न दोइ।
उही कि इही ? न उही न इही है॥
सून्य कि स्थूल ? न सून्य न स्थूल।
जिही कि तिही ? न जिही न तिही है॥
मूल कि डाल ? न मूल न डाल।
वही कि मँही ? न वही न मँही है॥
जीव कि ब्रह्म ? न जीव न ब्रह्म।
तु है कि नहीं ? कछु है न नहीं है ॥ ५ ॥

(१) प्रकाश। (२) अर्थ।

॥ प्रश्नोत्तर ॥

एक कहूँ तु अनेक सु दीसत, एक अनेक नहीं कछु ऐसो ।
आदि कहूँ तहाँ अंतहु आवत, आदि न अंत न मध्य सु कैसो॥
गोप्य[1] कहूँ तुअगोप्य[2]कहाँयह,गोप्यअगोप्यनऊभोनबैसो[3]
जोइकहूँ सोइ है नहिं सुंदर, है तु सही परि जैसेको तैसो ॥६॥

॥ मनहर छंद ॥

एक को कहै जु कोऊ, एकही प्रकासत है ।
दोऊही कहै जु कोऊ, दूसरोहू देखिये ॥
अनेक कहै जु कोऊ, अनेक आभासै ताहि ।
जा के जैसो भाव तैसो, ता कूँ ही बिसेखिये ॥
बचन बिलास कोऊ, कैसेही बखानि कहै ।
व्योम माहिं चित्र कहौ, कैसे करि लेखिये ॥
अनुभव किये एक, दोय न अनेक कछु ।
सुंदर कहत ज्यूँ है, त्यूँही ताहि पेखिये ॥ ७ ॥

बचनहिं वेद विधि, बचनहिं सास्त्र पुनि ।
बचन समृति अरु, बचन पुराण जू ॥
बचनहिं और ग्रंथ, बचनहिं व्याकरण ।
बचनहिं काव्य छंद, नाटक बखान जू ॥
बचनहिं संसकृत, बचनहिं पराकृत ।
बचनहिं भाषा सब, जगत मैं जान जू ॥
बचन के परे है सो, बचन मैं आवै नहीं ।
सुंदर कहत वही, अनुभौ प्रमान जू ॥ ८ ॥

इंद्रि नाहिं जानि सकै, अलप ज्ञान इंद्रिन को ।
प्राणहु न जानि सकै, स्वास आवै जाइ है ॥

---

(१) गुप्त । (२) प्रगट । (३) न खड़ा न बैठा ।

मनहुँ न जानि सकै संकल्प बिकल्प करै ।
बुद्धिहु न जानि सकै, सुन्यो सो बताइ है ॥
चित्त अहंकार पुनि, एकहु न जानि सकै ।
सब्दहु न जानि सकै, अनुमान पाइ है ॥
सुंदर कहत ताहि, कोऊ नहिँ जानि सकै ।
दीवा करि देखिये सो, ऐसा नहिँ लाइ है ॥९॥

॥ इंदव छंद ॥

स्रोत्र न जानत चच्छु न जानत, जानत नाहिँ जु सूँघत घ्रानै।
जानि सपर्स त्वचा न सकै पुनि,जानत नाहिँ जु जीभ बखानै
मन्न न जानत बुद्धि न जानत, चित्त अहं कर क्यूँ पहिचानै।
सुंदर सब्दहु जानि सकै नहिँ,आतम आपकूँ आपहि जानै॥१०
सूर के तेज तैँ सूरज दीसत, चंद्र के तेज तैँ चंद्र उजासै ।
तारे के तेज तैँ तारेहु दीसत, बीजुल तेज तैं बीजु प्रकासै ॥
दीप के तेज तैँ दीपक दीसत, हीरे के तेज तैँ हीरोहि भासै ।
तैसेहि सुंदर आतम जानहु,आपके ज्ञान तैँ आप प्रकासै ॥११
कोउ कहै यह सृष्टि स्वभाव तैँ, कोउ कहै यह कर्म तैँ सृष्टी।
कोउ कहै यह काल उपावत, कोउ कहै यह ईसुर तिष्टी[1]॥
कोउ कहै यह ऐसेहि होवत, क्यूँ करि मानिये बात अनिष्टी[2]।
सुंदर एक किये अनुभौ बिनु,जानि सकै नहिँ बाह्य[3]हि दृष्टी१२
कोउ तौ मोक्ष अकास बतावत,कोउ तौ मोक्ष पताल के माहीँ ।
कोउ तौ मोक्ष कहै पृथिवी पर,कोउ कहै कहुँ और कहाहीँ ॥
कोउ बतावत मोक्षसिला पर,कोउक मोक्ष मिटै परछाहीँ ।
सुंदर आतम के अनुभौ बिनु,और कहूँ कोइ मोक्षहि नाहीँ॥१३
मूए तैँ मोक्ष कहैँ सब पंडित, मूए तैँ मोक्ष कहैँ पुनि जैना ।
मूए तैँ मोक्ष कहैँ ऋषि तापस, मूए तैँ मोक्ष कहैँ सिव सैना॥

(१) रचित । (२) नास्तिकी । (३) बाहरी ।

मूए तैं मोक्षमलेक्ष कहैं पुनि, धोखेहि धोखे बखानत बैना ।
सुंदर आतम को अनुभौ सोइ, जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥१४

॥ मनहर छंद ॥

कोऊ तौ कहत ब्रह्म, नाभि के कमल मध्य ।
कोऊ तौ कहत ब्रह्म, हृदय मैं प्रकास है ॥
कोऊ तौ कहत कंठ, नासिका के अग्र भाग ।
कोऊ तौ कहत ब्रह्म, भृकुटी मैं बास है ॥
कोऊ तौ कहत ब्रह्म, दसवैं दुवार बीच ।
कोऊ तौ कहत भ्रमर-गुफा मैं निवास है ॥
पिंड मैं ब्रह्मांड मैं, निरंतर बिराजै ब्रह्म ।
सुंदर अखंड जैसे, व्यापक आकास है ॥ १५ ॥
पाँव जिन गह्यो सो तौ, कहत हैं ऊखर[१] सौं ।
पुच्छ जिन गह्यो तिन, लाव[२] सौं सुनायो है ॥
सूँड़ जिन गही तिन, दगले[३] की बाँह कही ।
दंत जिन गह्यो तिन, मूसर दिखायो है ॥
कान जिन गह्यो तिन सूप सौं बनाय कह्यो ।
पीठ जिन गही तिन, बिटौरा[४] बतायो है ॥
जैसो है तैसो ही ताहि, सुंदर सु अक्षि जानै ।
आँधरौं ने हाथी देखि, झगरो मचायो है ॥ १६ ॥
न्याय सास्त्र कहत है, प्रगट ईसुरवाद ।
मीमांसाहि सास्त्र माहिं, कर्मवाद कह्यो है ॥
वैसेषिक सास्त्र पुनि, कालवादी है प्रसिद्ध ।
पातंजलि सास्त्र माहिं, योगवाद लह्यो है ॥

---

(१) ओखली । (२) लाठी । (३) लबादा । (४) उपलों का ढेर ।

सांख्य सास्त्र माहिँ पुनि, प्रकृति पुरुष वाद ।
वेदांत जु सास्त्र तिन, ब्रह्मवाद गह्यो है ॥
सुंदर कहत षटसास्त्र माहिँ भयो वाद ।
जाके अनुभव ज्ञान, वाद मैँ न बह्यो है ॥ १७ ॥
प्रज्ञानमानंद[1] ब्रह्म, ऐसे ऋगवेद कहै ।
अहं ब्रह्म अस्मि[2] इति, यजुर्वेद यूँ कहै ॥
तत्त्वमसि[3] इति, सामवेद यूँ बखानत है ।
अयं[4] आतमा ब्रह्म, कहि अथर्वण यूँ लहै ॥
एक एक बचन मैँ, तीन पद हैँ प्रसिद्ध ।
तिन को बिचार करि, अर्थ तत्त्व कूँ गहै ॥
चारि वेद भिन्न भिन्न, सब को सिद्धांत[5] एक ।
सुंदर समुझि करि, चुप चाप ह्वै रहै ॥ १८ ॥
इंद्रिन के भोग जब, चाहै तब आय रहै ।
नासवंत ता तैँ, तुच्छानंद यूँ सुनायो है ॥
देवलोक इंद्रलोक, ब्रह्मलोक सिवलोक ।
बैकुंठ के सुख लैाँ, गणितानंद गायो है ॥
अक्षय अखंड, एक रस परिपूरण है ।
ताहि तैँ पूरणानंद, अनुभो तैँ पायो है ॥
याहि के अंतरभूत, आनँद जहाँ लैाँ और ।
सुंदर समुद्र माहिँ, सर्व जल आयो है ॥ १९ ॥
एक तो माया विलास, जगत प्रपंच यह ।
चारि खानि भेद पाय, द्वैत भासि रह्यो है ॥

(१) जो ज्ञान मैँ मगन है। (२) मैँ ब्रह्म हूँ। (३) तुम तत्त्व हो। (४) यह।
(५) मतलब।

दूसरो विषै विलास, इंद्रिन के विषै पंच ।
सब्द सपरस रूप, रस गंध रह्यो है ॥
तीसरे वाक्य विलास, सो तौ सब वेद माहिँ ।
बरणि के जहाँ लगि, बचन तैं कह्यो है ॥
चौथो ब्रह्म को विलास, तिहूँ को अभाव जहाँ ।
सुंदर कहत वह, अनुभै तैं लह्यो है ॥ २० ॥
जीवतही देवलोक, जीवतही इंद्रलोक ।
जीवतही जन तप, सत्यलोक आयो है ॥
जीवतही विधिलोक, जीवतही सिवलोक ।
जीवत बैकुंठ लोक, जो अकुंठ[1] गायो है ॥
जीवतही मोक्ष सिला, जीवतही भिस्त माहिँ ।
जीवतही निकट, परमपद पायो है ॥
आतमा को अनुभव, जिन कूँ जीवत भयो ।
सुंदर कहत तिन, संसय मिटायो है ॥ २१ ॥
छिति भ्रम जल भ्रम, पावक पवन भ्रम ।
व्योम भ्रम तिन को, सरीर भ्रम मानिये ॥
इंद्रिय दसहु भ्रम, अंतःकरण भ्रम ।
तिनहीं के देवता, सो भ्रम तैं बखानिये ॥
सत रज तम भ्रम, पुनि अहंकार भ्रम ।
महत्तत्त्व प्रकृति पुरुष, भ्रम मानिये ॥
जोई कछु कहिये सो, सुंदर सकल भ्रम ।
अनुभव किये एक, आतमाहीं जानिये ॥ २२ ॥
भूमिहु विलीन होइ, अपहू विलीन होइ ।
तेजहु विलीन होइ, वायु जो बहतु है ॥

(१) खुला हुआ ।

व्योमहु विलीन होइ, त्रिगुण विलीन होइ।
सब्दहु विलीन होइ, अहं जो कहतु है॥
महत्तत्त्व लीन होइ, प्रकृति विलीन होइ।
पुरुष विलीन होइ, देह जो गहतु है॥
सुंदर सकल लोक, कहिये सो लीन होइ।
आतमा के अनुभव, आतमा रहतु है॥ २३॥
माया की अपेक्षा ब्रह्म, रात्रि की अपेक्षा दिन।
जड़ की अपेक्षा करि, चेतन बखानिये॥
अज्ञान अपेक्षा ज्ञान, बंध की अपेक्षा मोक्ष।
द्वैत की अपेक्षा सो तौ, अद्वैत प्रमानिये॥
दुख की अपेक्षा सुख, पाप की अपेक्षा पुन्न।
झूँठ की अपेक्षा ताहि, सत्य करि मानिये॥
सुंदर सकल यह, बचन विलास भ्रम।
बचन रहित अवचन, सोई जानिये॥ २४॥
आतमा कहत गुरु, सुद्ध निरबंध नित।
सत्य करि मानै सो तौ, सब्दहू प्रमान है॥
जैसे व्योम व्यापक, अखंड परिपूरण है।
व्योम उपमा तैं, उपमान सो प्रमान है॥
जा की सत्ता[1] पाइ सब, इंद्रिय चेतन्य होइ।
याही अनुमान तैं, अनुमानहू प्रमान है॥
अनुभव जानै तब, सकल सँदेह मिटै।
सुंदर कहत यह, प्रत्यक्ष प्रमाण है॥ २५॥

(१) शक्ति।

एक घर दोय घर, तीन घर चार घर ।
पंच घर तजै तब, छठो घर पाइये ॥
एक एक घर के, आधार[1] एक एक घर ।
एक घर निराधार, आपही दिखाइये ॥
सो तैा घर साक्षीरूप, घर घर मैं अनूप ।
ताहू घर मध्य, कोऊ दिन ठहराइये ॥
ता के परे साक्षी न असाक्षी न सुंदर कछु ।
बचन अतीत कहुँ, आइये न जाइये ॥ २६ ॥
एक तैा स्रवण ज्ञान, पावक ज्यूँ देखियत ।
माया जल परसत, वेगि बुझि जात है ॥
एक है मनन ज्ञान, बिजली ज्यूँ घन मध्य ।
माया जल बरषत, ता मैं न बुझात है ॥
एक निदिध्यास ज्ञान, बड़वा अनल जैसे ।
प्रगट समुद्र माहिं, माया जल खात है ॥
अनुभव साक्षात ज्ञान, प्रलय की अगिन सम ।
सुंदर कहत द्वैत, प्रपंच विलात है ॥ २७ ॥
भोजन की बात सुनि, मन मैं मुदित भयो ।
मुख मैं न परै जौ लैाँ, मेलिये न ग्रास है ॥
सकल सामग्री आनि, पाक कूँ करन लागो ।
मनन करत कब, जीमहुँ[2] ये आस है ॥
पाक जब भयो तब, भोजन करन बैठो ।
मुख मैं मेलत जाइ, यही निदिध्यास है ॥

(१) सहारे से । (२) खाउँ ।

भोजन पूरन करि, तृपत भयो है जब ।
सुंदर साक्षातकार, अनुभव प्रकास है ॥ २८ ॥
स्रवण करत जब, सब सूँ उदास होइ ।
चित्त एकाग्र आनि, गुरुमुख सुनिये ॥
बैठि के एकांत ठौर, अंतःकरण माहिँ ।
मनन करत फेर, उहै ज्ञान गनिये ॥
ब्रह्म अपरोक्ष जानि, कहत है "अहं ब्रह्म" ।
सोहं सोहं होइ सदा, निदिध्यास धुनिये ॥
सुंदर साक्षातकार, कीटही तैँ होइ भृंग ।
यह अनुभव यह, स्वस्वरूप भनिये ॥ २९ ॥
जबही जिज्ञासा होइ, चित्त एक ठौर आनि ।
मृग ज्यूँ सुनत नाद, स्रवण सोँ कहिये ॥
जैसे स्वाँति बुँदहू कूँ, चातक रटत पुनि ।
ऐसेही मनन करै, कब बुँद लहिये ॥
राति मैँ चकोर जैसे, चंद्रमा को धरै ध्यान ।
ऐसे जानि निदिध्यास, दृढ़ करि गहिये ॥
यहै अनुभव यहै, कहिये साक्षात्कार ।
सुंदर पारे[1] तैँ गलि, पानी होइ रहिये ॥ ३० ॥
काहू कूँ पूछत रंक, धन कैसे पाइयत ।
कान देके सुनत, स्रवण सोई जानिये ॥
उन कह्यो धन हम, देख्यो है फलानी ठौर ।
मनन करत भयो, कब घर आनिये ॥

(१) पाला, हिम ।

फेरि जब कह्यो धन, गड़्यो तेरे घर माहिँ ।
खोदन लाग्यो है तब, निदिध्यास ठानिये ॥
धन निकस्यो है जब, दारिद गयो है तब ।
सुंदर साक्षातकार, नृपति बखानिये ॥ ३१ ॥
चकमक ठोके तैँ, चमतकार होत कछु ।
ऐसे ही स्रवण ज्ञान, तब ही लौँ जानिये ॥
कफ[1] माहिँ लागै जब, प्रगटै पावक ज्ञान ।
सुलगत जाइ वह, मनन बखानिये ॥
वर्त्तमान भये काठ, कर्मन कूँ जरावत ।
यही निदिध्यास ज्ञान, ग्रंथन मैँ गानिये ॥
सकल प्रपंच यह, झारि के समाइ जात ।
सुंदर कहत यह, अनुभौ प्रमानिये ॥ ३२ ॥

इति आतम अनुभव को अंग संपूर्ण ॥ ३३ ॥

३४—आश्चर्य को अंग ।

॥ मनहर छन्द ॥

वेद को बिचार सोई, सुनि कै संतन मुख ।
आपहू बिचार करि, सोइ धारियतु है ॥
जोग की जुगति जानि, जग तैँ उदास होइ ।
सून्य मैँ समाधि लाइ, मन मारियतु है ॥
ऐसे ऐसे करत, करत केते दिन बीते ।
सुंदर कहत अजहूँ, बिचारियतु है ॥
कारो ही न पीरो न तौ, तातो ही न सीरो कछु ।
हाथ न परत ता तैँ, हाथ झारियतु है ॥ १ ॥

(१) सोफ्ता

मन को अगम अति, बचन थकित होत ।
बुद्धिहू बिचार करि, बहु खंडियतु है ॥
स्रवण न सुनै ताहि, नैनहू न देखै कछु ।
रसना को रस सब, रस छाड़ियतु है ॥
त्वक को सपर्स नाहिं, घ्राण को न बिषै होइ ।
पगनहू करि, जित तित हिंडियतु[1] है ॥
सुंदर कहत अति, सूक्षम स्वरूप कछु ।
हाथ न परत ता तैं, हाथ मींडियतु[2] है ॥ २ ॥

गुफा कूँ सँवारत हैं, आसनहू मारि करि ।
प्राणही कूँ धारि, धारणा कसोटियतु[3] है ॥
इंद्रिन कूँ घेरि करि, मनहू कूँ फेरि पुनि ।
भृकुटी मैं हेरि हेरि हियो चोटियतु है ॥
सब छटिकाय पुनि, सून्य मैं समाय तहाँ ।
समाधि लगाय करि, आँख मीटियतु[4] ॥
सुंदर कहत हम, और हू किये उपाय ।
हाथ न परत ता तैं, हाथ छीटियतु है ॥ ३ ॥

बोलै ही न मौन धरै, बैठो है न गौन करै ।
जागै ही न सोवै न तौ, दूर है न नेरो है ॥
आवै है न जाय न तौ, थिर अकुलात पुनि ।
भूखो है न खात कछु, तातो है न सीरो है ॥
लेत है न देत कछु, हेत न कुहेत पुनि ।
स्याम ही न स्वेत अरु, रातौ[5] है न पीरो है ॥

(१) ढूँढ़ना । (२) मींजना, मलना । (३) कसना, रोकना । (४) मींचना । (५) लाल ।

दूबरो न मोटो कछु, लाँबो न छोटो ता तैं।
सुंदर कहत कछु, काँचही न हीरो है ॥ ४ ॥
भूमिही न आप न तौ, तेजही न ताप न तौ।
वायुही न व्योम न तौ, पंच को पसारो है ॥
हाथही न पाँव न तौ, नैन बैन भाव न तौ।
रंकही न राव न तौ, बृद्धही न वारो है ॥
पिंडही न प्राण न तौ, ज्ञान न अज्ञान न तौ।
बंध निरबान न तौ, हरवो[१] न भारो है ॥
द्वैत न अद्वैत न तौ, मीत न अमीत न तौ।
सुंदर कह्यो न जाइ, मिल्योही न न्यारो है ॥५॥

॥ इंदव छंद ॥

पाप न पुन्न न स्थूल न सून्य, न बोलै न मौन न सोवै न जागै।
एक न दोइ न पुर्ष न जोइ, कहै कहाँ कोइ न पीछे न आगै ॥
वृद्ध न बाल न कर्म न काल, न ह्रस्व बिसाल[२] न जूझै न भागै।
बंध न मोक्ष अमोक्ष न प्रोक्ष, न सुंदर है न असुंदर लागै ॥६॥
तत्त्व अतत्त्व कह्यो नहिं जात, जु सून्य असून्य उरै न परै है।
ज्योति अज्योति न जान सकै कोउ, आदि न अंत जिवै न मरै है॥
रूप अरूप कछू नहिं दीसत, भेद अभेद करै न हरै है।
सुद्ध असुद्ध कह्यो पुनि कौन जु, सुंदर बोलै न मौन धरै है ॥७॥
खोजत खोजत खोजि गये पुनि, खोजत है अरु खोजहि आनै।
गावत गावत गाइ रहे सब, गावत है पुनि गाइहि गानै॥
देखत देखत देखि थके सब, दीसे नहीं कछु ठौर ठिकानै।
बूझत बूझत बूझि के सुंदर, हेरत हेरत हेर हिरानै॥ ८॥

(१) हलका। (२) न छोटा न बड़ा।

पिंड मैं है पर पिंड मिलै नहिं, पिंड परे पुनि त्यूँहि रहावै ।
स्रोत्र मैं है पर स्रोत्र सुनै नहिं, दृष्टि मैं है पर दृष्टि न आवै ॥
बुद्धि मैं है पर बुद्धि न जानत, चित्त मैं है पर चित्त न पावै ।
सब्द मैं है पर सब्द थक्यो कहि, सब्दहु सुंदर दूर बतावै ॥

एकहि ब्रह्म रह्यो भरपूर तो, दूसर कौन बतावनहारो ।
जो कहि जीव करै परमान तो, जीव कहा कछु ब्रह्म तैं न्यारो ॥
जो कहि जीव भयो जगदीस तैं, तौ रबि माहिं कहाँ को अँधारो ।
सुंदर मौन गही यह जानि कै, कौनहु भाँति न है निरधारो ॥१०॥

भूमिहु तैसेहि आपहु तैसेहि, तैसेहि तेज रु तैसेहि पौना ।
व्योमहु तैसेहि आहि अखंडित, तैसेहि ब्रह्म रह्यो भरि भौना ॥
देह संयोग बियोग भयो तब, आयो सो कौन गयो तौ हि कौना ।
जो कहिये कहते न बनै कछु, सुंदर जानि गही मुख मौना ॥११

जो हम खोज करैं अभिअंतर, सो वह खोज उरेहि बिलावै ।
जो हम बाहिर कूँ उठि दौरत, तौ कछु बाहिर हाथ न आवै ॥
जो हम काहू कूँ पूछत हैं पुनि, सो हि अगाध अगाध[1] बतावै ।
ताहि तैं कोउ न जानि सकै तिहिं, सुंदर कौन सि ठौर रहावै ॥१२

नैन न बैन न चैन न आस न, बास न खास न प्यास न याते ।
सीत न घाम न ठौर न ठाम न, पुर्ष न बाम न मात न ताते ॥
रूप न रेख न सेस[2] असेस, न स्वेत न पीत न स्याम न राते ।
सुंदर मौन गही सिध साधक, कौन कहै उसकी मुख बाते ॥१३

वेद थके कहि तंत्र थके कहि, ग्रंथ थके निसि बासर गाते ।
सेस थके सिव इंद्र थके पुनि, खोज कियो बहु भाँति बिधाते[3] ॥

(१) अथाह । (२) बाक़ी । (३) ब्रह्मा

पीर थके पुनि मीर थके पुनि, धीर थके बहु बोलि गिराते।
सुंदर मौन गही सिध साधक, कौन कहै उसकी मुख बाते ॥१४॥
जोगि थके कहि जैन थके ऋषि, तापस थाकि रहे फल खाते।
संन्यासि थके बनबासि थके जु, उदासि थके बहु फेर फिराते॥
सेखहु सालिक[1] और हु लाइक, थाकि रहे मन में मुसकाते।
सुंदर मौन गही सिध साधक, कौन कहै उसकी मुख बाते ॥१५

इति आश्चर्य को अंग संपूर्ण ॥ ३४ ॥

॥ इति सुन्दरबिलास समाप्त ॥

(१) उपदेशक
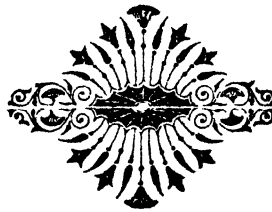
फ़िहरिस्त छपी हुई पुस्तकों की

पुस्तक		मूल्य
कबीर साहिब का साखी-संग्रह (२१५२ साखियाँ)	... ...	॥)॥
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन		॥)
,, ,, ,, भाग २	... ...	॥=)
,, ,, ,, भाग ३	... ...	।)
,, ,, ,, भाग ४	... ...	=)
,, ,, ज्ञान-गुदड़ी व रेखते	... ...	≡)
,, ,, अखरावती	... ...	-)
,, ,, अखरावती का पूरा ग्रंथ जिस में १७ चौपाई दोहे और सोरठे विशेष हैं	... ...	-)॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	... ...	।=)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १		॥)
,, ,, ,, ,, भाग २	...	॥)
,, ,, रत्न सागर मय जीवन-चरित्र	...	॥।=)
,, ,, घट रामायन दो भागों में, मय जीवन-चरित्र पहिला भाग	...	१)
,, ,, दूसरा भाग	...	१)
गुरु नानक साहिब की प्राण-संगली सटिप्पण, जीवन-चरित्र सहित पहिला भाग	...	१)
,, ,, ,, ,, दूसरा भाग	...	१)
दादू दयाल की बानी भाग १ (साखी)	... ...	१-)
,, ,, भाग २ (शब्द)	... ...	॥।-)
सुंदर बिलास और सुंदरदास जी का जीवन-चरित्र	...	॥≡)
पलटू साहिब की शब्दावली (कुंडलिया इत्यादि) और जीवन-चरित्र, भाग १		॥)
,, ,, ,, भाग २	... ...	।-)॥
जगजीवन साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १	...	॥-)
,, ,, ,, भाग २	... ...	॥-)
दूलन दास जी की बानी और जीवन-चरित्र	...	छप रहा है
चरनदासजी की बानी और जीवन-चरित्र, भाग १	... ...	॥)॥
,, ,, ,, भाग २	. ...	।≡)॥
गरीबदास जी की बानी और जीवन-चरित्र	... ...	॥।=)
रैदासजी की बानी और जीवन-चरित्र	... ...	।-)॥

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... |-)

" " के चुने हुए पद और साखी ... ≋)॥

दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... |)॥

भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... |≈)

गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥-)॥

बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≈)

गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ...)॥

यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ... -)॥

बुल्ला साहिब का शब्द सार और जीवन-चरित्र ... ... ≈)॥

केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ... -)

धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... |)

मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ... |-)॥

सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ... |-)

दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≈)॥

अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ... =)

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद।

Printed at The Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

गुलाल साहब की बानी

जीवन-चरित्र सहित

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर और भक्ति बढ़ाने वाले पद और साखियाँ शोध कर मुख्य मुख्य अंगों में रक्खी गई हैं

और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद

बैलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन् १९१०

२५४ सफ़हा] [दाम ॥-)॥

Printed at the Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

निवेदन

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी व उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। अब तक जितनी बानियाँ हम ने छापी हैं उन में से बिशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और कोई २ जो छपी थीं तो ऐसे छिन्न भिन्न, बेजोड़ और अशुद्ध रूप में कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हम ने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ ऐसे हस्त-लिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक पिछले पाँच बरस के उद्योग से हो सका असल या नक़ल कराके मँगवाये और यह कार्रवाई बराबर जारी है। भर सक तो पूरे ग्रंथ मँगा कर छापे जाते हैं और फुटकर शब्दों की हालत में सर्ब साधारन के उपकारक पद चुन लिये जाते हैं। कोई पुस्तक बिना कई लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी जाती, ऐसा नहीं होता कि औरों के छापे हुए ग्रंथों की भाँति बेसमझे और बेजाँचे छाप दी जाय। लिपि के शोधने में प्रायः उन्हीं ग्रंथकार महात्मा के पंथ के जानकार अनुयायी से सहायता ली जाती है और शब्दों के चुनने में यह भी ध्यान रक्खा जाता है कि वह सर्ब साधारन की रुचि के अनुसार और ऐसे मनोहर और हृदय-बेधक हों जिन से आँख हटाने का जी न चाहे और अंतःकरन शुद्ध हो।

कई बरस से यह पुस्तक-माला छप रही है और जो जो कसरें जान पड़ती हैं वह आगे के लिये दूर की जाती हैं। कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत नोट में दे दिये जाते हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा जाता है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के संक्षेप बृत्तांत और कौतुक फुट नोट में लिख दिये जाते हैं।

सूचीपत्र

फ

ब

भ

शब्द	म	पृष्ठ

' यह पद पृष्ठ ४ में दिया है यहां कुछ बदली हुई टेक के कारन भूल से फिर छप गया।

शब्द	पृष्ठ

जीवन-चरित्र

गुलाल साहब जाति के छत्री बुल्ला साहब के गुरुमुख चेले, जगजीवन साहब के गुरुभाई, और भीखा साहब के गुरू थे जैसा कि उस बंशावली से जो दूसरे पृष्ठ पर दी हुई है प्रगट होगा। इन के जीवन का कुछ हाल नहीं मिलता यद्यपि इन के स्थान भुरकुड़ा ज़िला ग़ाज़ीपुर और दूसरी जगहों में खोज की गई। लेकिन जोकि यह जगजीवन साहब के सहकाली थे इनके जीवन का समय बिक्रमी सम्बत १७५० और १८०० के दरमियान में पाया जाता है।

गुलाल साहब ज़िमींदार थे और इनके गुरू बुल्ला साहब जिनका असल नाम बुलाकीराम था पहले उनके नौकर हल चलाने वग़ैरह के काम पर थे। बुल्ला साहब जब किसी काम को जाते, भजन ध्यान में लग जाने से अक्सर देर कर देते थे। इन की सुस्ती की शिकायत लोगों ने गुलाल साहब से की और गुलाल साहब कई बार इन पर ख़फ़ा हुए। एक दिन का ज़िक्र है कि बुल्ला साहब हल चलाने को गये थे और वहाँ भगवंत का ध्यान और मानसी साध सेवा में लग गये। उसी समय गुलाल साहब मौक़े पर पहुंच गये और बैलों को हल के साथ फिरते और बुल्ला साहब को खेत की मेंड़ पर आँख बंद किये हुए बैठा देख कर समझे कि वह ऊँघ रहे हैं और क्रोध में भर कर एक लात मारी। बुल्ला साहब एक बारगी चौंक उठे और उनके हाथ से दही छलक पड़ा। यह कौतुक देख कर गुलाल साहब हक्के बक्के होगये क्योंकि पहले उन्हों ने बुल्ला साहब के हाथ में दही नहीं देखा था। पर बुल्ला साहब बड़ी आधीनता से गुलाल साहब से बोले कि मेरा अपराध छिमा करो मैं साधों की सेवा में लग गया था और भोजन परोस चुका था केवल दही बाक़ी था उसे परोस ही रहा था जो आप के हिला देने से हाथ से छलक गया। यह गति अपने नौकर की देख कर गुलाल साहब चरनों पर गिरे और उनको अपना

गुरू धारन किया। गुलाल साहब तअल्लुक़ा बसहरि ज़िला ग़ाज़ीपुर के ज़िमींदार थे और वहीं पैदा हुए और गृहस्थ आश्रम में रह कर वहीं चोला छोड़ा। इसी तअल्लुक़े के एक गाँव का नाम भुरकुड़ा है जहाँ गुलाल साहब सतसंग करते व कराते रहे। गुलाल साहब की साध गति थी और उनका तीव्र बैराग और प्रचंड भक्ति उनकी अति कोमल और मधुर बानी से टपकती है॥

बावरी साहब | दिल्ली

बीरू साहब

यारी साहब

बुल्ला साहब | भुरकुड़ा, ज़िला ग़ाज़ीपुर

जगजीवन साहब | गुलाल साहब

दूलमदासजी | भीखा साहब

गोबिन्द साहब | अहिरौली, ज़िला फ़ज़ाबाद

पलटू साहब | अयोध्या

गुलाल साहब की बानी

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

रे मन मूढ़ अज्ञानियाँ,
तोहिं सुधियो न आय ।
निस बासर भरमत फिरै,
दौड़त दिन जाय ॥१॥
प्रबल पाँच पायक* लिये,
बहु सेन† बनाय ।
काया गढ़ बैठो कुतवलिया,
हासिल‡ ले सब दाम गनाय ॥ २ ॥
किरषी§ करत बार बहु लागो,
हाथैं स्वाद कछू नहिं आय ।
त्रस्ना कै गुन|| धोखे तोलत,
भोंदू निर्मल जन्म गँवाय ॥ ३ ॥
डहकत¶ फिरत नेक नहिं मानत,
अपने हर दम हुकुम चलाय ।
काहू संत के फंद परहुगे,
चिटुकी देत सो प्रगट नचाय ॥ ४ ॥
गुरु कै सब्द तहाँ लै बाँधहु,
त्रासित** कबहुँ न छूटन पाय ।
दास गुलाल दया सतगुरु कै,
थाक्यो मन तब गइल बलाय ॥ ५ ॥

*प्यादे । †फ़ौज । ‡आमदनी । §खेती । ||गोन, बोरा जो बैल पर लादा जाता है । ¶ठगाना । **डरा हुआ ।

॥ शब्द २ ॥

मन मैं निर्गुन गति जो आवै ।
हानि न होय जीव की कबहीं,
गगन मँडल घर छावै ॥ १ ॥
राजा रंक छत्र-पति भूपति,
.. .. ।
नाना सुख तजि भयो है दिवाना,
पंडित बेद न भावै ॥ २ ॥
सन्यासी बैरागी तपसी,
तीरथ रटि रटि* धावै ।
आतम राम न जानहिं प्रानी,
तन कहँ त्रास दिखावै ॥ ३ ॥
संसय मेटि करै सतसंगति,
प्रेम पंथ पर धावै ।
सुन्न नगर मैं आसन माँड़ै,
जगमग जोति जगावै ॥ ४ ॥
आवागवन न होइ है कबहीं,
सतगुरु सत्त लखावै ।
कहैं गुलाल यह लगन हमारी,
बिरला जन कोई पावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हरि नाम न लेहु गंवारा हो ।
काम क्रोध मैं रटत* फिरत हौ, कबहुं न आप संभारा हो ॥१

*घूमना ।

आपु अपन कै सुधि नहिं जानहु, बहुत करत बिस्तारा हो।
नेम धरम ब्रत तीर्थ करतु है, चौरासी बहु धारा हो ॥२॥
तस्कर* चोर बसहिं घर भीतर, मूसहिं सहन† भँडारा हो।
सन्यासी बैरागी तपसी, मनुवाँ देत पछारा हो ॥ ३ ॥
धंधा धोख रहत लिपटाने, मोह रतो संसारा हो।
कहँ गुलाल सतगुरु बलिहारी, जग तेँ भयो नियारा हो॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम जात न जान गँवारा हो।
को तुम आहु कहाँ तेँ आयो, झूठो करत पसारा हो॥१
माटी के बुंद पिंड कै रचना, ता मेँ प्रान पियारा हो।
लोभ लहरि मेँ मोह को धारा, सिरजनहार बिसारा हो॥२॥
अपने नाह‡ को चीन्हत नाहीं, नेम धरम आचारा हो।
सपनेहुं साहब सुधि नहिं जान्यौ, जम दुत देत पछारा हो॥३॥
उलट्यो जीव ब्रह्म में मेल्यो, पाँच पचीस धरि मारा हो।
कहँ गुलाल साधु मेँ गनती, मनुवा भइल हमारा हो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

अबधू निर्मल ज्ञान बिचारो।
ब्रह्म सरूप अखंडित पूरन, चौथे पद सोँ न्यारो ॥ १ ॥
ना वह उपजै ना वह बिनसै, ना भरमै चौरासी।
है सतगुरु सतपुरुष अकेला, अजर अमर अबिनासी ॥२
ना वाके बाप नहीं वाके माता, वाके मोह न माया।॥
ना वाके जोग भोग वाके नाहीं, ना कहुं जाय न आया॥३॥
अद्भुत रूप अपार बिराजै, सदा रहै भरपूरा।
कहँ गुलाल सोई जन जानै, जाहि मिलै गुरु सूरा ॥ ४॥

*डाँकू। †आँगन। ‡पति।

॥ शब्द ६ ॥

अबधू सो जोगी गुरु ज्ञानी ।
भजै राम जगत हू न्यारा, ब्रह्म सरूप पिछानी ॥ १ ॥
काम को मारि क्रोध को जारै, धोखा दूरि बहावै ।
मन गजंद* ज्ञान करि सींकर, पकरि के जेर भरावै॥ २ ॥
सील संतोष कै आसन माँडै, सत्त सरूप बिचारै ।
जीव ब्रह्म जब मेला होवै, आवागवन निवारै ॥ ३ ॥
अछय अमर अनुभव अनमूरत, कोई संत जन पावै ।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, फिर यह लोक न आवै॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मन तूँ हरि गुन काहे न गावै ।
तातेँ कोटिन जन्म गँवावै ॥ १ ॥
घर में अमृत छोड़ि कै, फिरि फिरि मदिरा पावै ।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु, बहुरि न ऐसो दावै ॥२॥
पाँच पचीस नगर के बासी, तिनहिं लिये सँग धावै ।
बिन पर उड़त रहै निसि बासर, ठौर ठिकान न आवै ॥३
जोगी जती तपी निर्बानी, कपि† ज्यौं बाँधि नचावै ।
सन्यासी बैरागी मौनी, धै धै नरक मिलावै ॥ ४ ॥
अब की बार दाव है मेरो, छोड़ौं न राम दोहाई ।
जन गुलाल अबधूत फकीरा, राखौं जँजीर भराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन मैं प्रीत करहु निज नाम ।
यह संसार अगम भवसागर, बहत है आठो जाम ॥ १ ॥
अपने घर की सुधि नहिं जानत, जल पत्थर परमान ।

*हाथी । †बंदर ।

इनकी ओट जनम जहँड़ावहु,* मनुवाँ फिरत हेवान॥२॥
पाँच पचीस से प्रबल चोर हैं, तीन देव बेइमान ।
कुल की कानि अंध नहिं सूझत, मुवले कहाँ समान॥३॥
अगम निगम जिन पंथ निहास्यो, पछिम उगायो भान।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, निकलि गयो असमान॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

भजन करु मनुवाँ वैरागी ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद ममता त्यागो, प्रभु चरनन महँ पागी १
सुत हित नारि बन्धु परिजन जन, डहत† हैं स्वारथ लागी २
झूठी सेव सेमर‡ फल चाखो, अमृत फल काहे त्यागी ॥३
बिष भोजनहिं पाइ मत सोवहु, सत्त सब्द हिये जागी ४
जन गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन मेलो मन लागी ॥५

॥ शब्द १० ॥

राम मोर पुँजिया राम मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ॥ टेक ॥
आठ पहर तहँ सुरति निहारी,
जस बालक पालै महतारी ॥ १ ॥
धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गर्भ मूल सब चल्यो गँवाय ॥ २ ॥
बहुत जतन भेख रचो बनाय,
बिन हरि भजन इँदोरन पाय ॥ ३ ॥
हिंदू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी मेँ रहि लिपटाय ॥ ४ ॥

*ठगाना । †डाहते हैं । ‡एक फल का नाम है जो देखने में सुंदर लाल रंग का होता है पर बहुत कड़ुवा ।

कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी,
जाति पाँति अब छुटल हमारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मूढ़हु रे निर्फल दिन जाय,
मानुष जन्म बहुरि नहिँ पाय ॥ १ ॥
कोइ कासी कोइ प्राग नहाय,
पाँच चोर घर लुटहिँ बनाय ॥ २ ॥
करि अस्नान राखहिँ मन आसा,
फिरि फिरि नरक कुंड मेँ वासा ॥ ३ ॥
खोजो आप चितै कै ज्ञाना,
सतगुरु सत्त बचन परवाना ॥ ४ ॥
समय गये पाछे पछिताव,
कहैँ गुलाल जात है दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

नगर हम खोजिलै चोर अबाटी* ।
निस बासर चहुँ ओर धाइलै, लूटत फिरत सब घाटी १
काजी मुलना पीर औलिया, सुर नर मुनि सब जाती ।
जोगी जती तपी सन्यासी, धरि मार्यो बहु भाँती॥२॥
दुनिया नेम धर्म करि भूल्याँ, गर्व माया मद माती ।
देवहर पूजत समय सिरानो, कोऊ संग न जाती॥ ३ ॥
मानुष जन्म पाय कै खोइले, भ्रमत फिरै चौरासी ।
दास गुलाल चोर धरि मारिलौँ, जावँ न मथुरा कासी ॥४॥

*कुराह चलने वाला ।

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम नेक गहहु चित राम ॥ टेक ॥
जासु नाम सुर नर नहिं पावहिं, संत महा सुख धाम ।
पाँच पचीस तीन हैं मूसिद, उन कहं ग्राम न ठाम॥१॥
जारहिं सहर लुटहिं बिनु लसकर, निसि दिन आठो जाम।
जालिम जोर नेक नहिं मानत, परजा दुखित बेराम† २
सत्त संतोष काया गढ़ भीतर, गहि लो सुरति सोँ नाम।
उर्ध पवन लै धरहु गगन मँ, बाँधि करहु बिसराम ॥३॥
जम जीतो घर नौबति बाजै, कियो है जोति मोकाम ।
जन गुलाल करहिं बादसाही, नूर तजल्ली नाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

जो पै कोउ चरन कमल चित लावै ।
तबहीं कटै करम के फंदा, जमदुत निकट न आवै ॥१॥
पाँच पचीस सुनि थकित भये हैं, तिरगुन ताप मिटावै ।
सतगुरु कृपा परम पद पावै, फिर नहिं भव जल धावै॥२
हर दम नाम उठत है करारा, संतन मिलिजुलि पावै ।
मगन भयो सुख दुख नहिं ब्यापै, अनहद ढोल बजावै ३
चरन प्रताप कहाँ लगि बरनौं, मो मन उक्ति न आवै ।
कहँ गुलाल हम नाम भिखारी, चरनन में घर पावैं ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

अगम पुर नौबति धुनि जहँ बाजई ।
घन गरजै मोती तहँ बरसै, उलट गगन चढ़ि गाजई ॥१
ससि औ सूर तहाँ नहिं दिखियत, एकै ब्रह्म बिराजई ।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, कुहुकि कुहकि मन पागई२

*लुटेरे †बीमार

जाको गुन सुर नर मुनि गावहिं, ध्यावहिं भावहिं जागई ।
सकल मनोरथ पूरन पायो, निर्गुन छत्र सिर छाजई ॥३॥
इकछत राज करो काया गढ़, काहू सोभ* न भागई ।
कहैं गुलाल सुनो रे मूढ़ मन, दुनिया हाथ न लागई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

जो पै कोई साँच सहज धुनि लावै ।
काटै सकल भरम भौसागर, जमदुत निकट न आवै ॥१॥
यह संसार सकल जग अंधा, नेकु दृष्टि नहिं पावै ।
पूजहिं पाथर देवखरी† लीपहिं, घर तजि घूर बुतावै ॥२
जोगी जती तपी सन्यासी, ये बहु भेख बनावै ।
राम नाम की सुधि नहिं जानै, भ्रमि भ्रमि जन्म गँवावै ३
मानुष जन्म पाय का खोवै, अबहूँ जिव समझावै ।
पाँच पचीस करहु बस अपने, निकट परम पद पावै ॥४॥
गगन मँडल अनहद धुनि बाजै, उनमुनि प्रीत लगावै ।
जन गुलाल सतगुरु को चेला, सहजहिं सुन्न समावै ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

कोउ नहिं कइल मोरे मन कै बुझरिया‡ ।
घरि घरि पल पल छिन छिन डोलत,
डालत साफ अँगरिया§ ॥ १ ॥
सुर नर मुनि डहकत सब कारन,
अपनी अपनी बेरिया ।
सबै नचावत कोउ नहिं पावत,
मारत मुँह मुँह मरिया ॥ २ ॥

*किसी के सामने । †देई देवता का देवखरा । ‡शाँति । §आग ।

अब की बेर सुनो नर मूढ़ो,
बहुरि न ल्यो अवतरिया।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी,
भवसिंधु अगम गम तरिया॥ ३ ॥

तन मेँ राम और कित जाय।
घर बैठल भेटल रघुराय ॥१॥
जोगि जती बहु भेख बनावैँ।
आपन मनुवाँ नहिँ समुझावैँ ॥२॥
पूजहिं पत्थल जल को ध्यान।
खोजत धूरहिँ कहत पिसान* ॥३॥
आसा तृस्ना करैँ न थीर।
दुबिधा मातल फिरल सरीर ॥४॥
लोक पुजावहिँ घर घर धाय।
दोजख कारन भिस्त गँवाय ॥५॥
सुर नर नाग मनुष औतार।
बिनु हरि भजन न पावहिँ पार ॥६॥
कारन धैधै रहत भुलाय।
तातेँ फिर फिर नरक समाय॥ ७ ॥
अब की बेर जो जानहु भाई।
अवधि बिते कछु हाथ न आई ॥८॥
सदा सुखद निज जानहु राम।
कह गुलाल न तो जमपुर धाम ॥९॥

* आटा।

॥ शब्द १९ ॥

सहज सुख दिन दिन हो, भजि लेहु आनँदराय ॥टेक॥
प्रेम प्रीत धरि रीत चरन सौँ, इत उत चित नहिँ जाय।
सुरति निरति ले गवन किये। है,काल निकट नहिँ आय॥१॥
आपु अपन को चीन्हत नाहीं, निसि दिन धंधे धाय।
मोर तोर मैँ लपट रह्यो है, भौँदू भटका खाय ॥२॥
संत साध की रीति न जाने, देवहरि पूजे धाय।
लोक बेद महँ अरुझि रह्यो है, जन्म पदारथ जाय ॥३॥
अगम अगोचर गोचर करि कै, सतगुरु बचन सहाय।
कहै गुलाल तब जन्म सुफल भयो, घरही मैँ घर पाय ॥४

॥ शब्द २० ॥

हे मन धोवहु तन कै मैली।
यह संसार नहीँ सूझत घट, खोजत निसु दिन गैली ॥१॥
नहीँ नाव नहिँ केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐली।
पाँच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिय भैली ॥२॥
गुरु परताप साध की संगति, प्रान गगन चढ़ि सैली।
कहैँ गुलाल नाम भयो मेला, जन्म सुफल तब कैली ॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

हे मन सुन्दर सेत सोहाई।
उदित उजल छबि बरनि न आवे, सेत फटिक रोसनाई ।१॥
अजर जरे औ बरे अधर मैँ, मानिक जोति जगाई।
कोटिन चंद सूर छबि कोटिन, चरनन की बलि जाई ।२॥
पूरन ब्रह्म मिल्यो अबिनासी, उलटि निरंतर छाई।
सिव के संग सक्ति गुन गावहिँ, उमँगि उमँगि रस पाई ॥३॥

ऐसो प्रभु भागन हम पायो, सतगुरु की बलि जाई ।
जन गुलाल राम को सेवक, मिल्यो निसान बजाई ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

सुमिरहु रे रामराय चरना,
जेहि सुमिरे छुटि आवा गवना ॥टेक॥
पाँचहिं बाँधि पचीसो बाँधहु,
तीन देव बसि करु अपना ॥१॥
काम क्रोध कै मसल मेटावहु,
दुबिधा दुमति दूरि करना ॥२॥
मन राजहिं बसि करि समुझावहु,
माया मोह पकरि धरना ॥३॥
सहज समाधि हृदय महँ लावहु,
ज्ञान ध्यान सुचि* दृढ़ करना ॥४॥
सत्त सरूप सदा भरि निरखहु,
लपटि रहो गुरु के चरना ॥५॥
कहे गुलाल सुनो भाई संतो,
बहुरि न होय जरा मरना ॥६॥

॥ शब्द २३ ॥

राम राम राम राम जेकरे जिय आवै ।
प्रेम पूर्न दृढ़ बिराग सोई यह पावै ॥१॥
सतगुरु जब दियो प्रसाद प्रीत हूं लगावै ।
तन मन न्योछावरि वारि चरन मैं समावै ॥२॥

* निर्मल ।

लोक लाज चारि गारि मनुवाँ नहिँ गावै ।
काम क्रोध जारि मारि तब लै लगावै ॥३॥
उनमुनि धुन धरै ध्यान गगना गरजावै ।
चमक चमक जोति जोति नूर झरि लगावै ॥४॥
अगम ध्यान ब्रह्म ज्ञान सोई यह पावै ।
तिन की बलिहारि जाउँ जन गुलाल गावै ॥५॥

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

अँखिया खोलि देखु अब, दुनिया है रँग बौर* ॥टेक॥
यह तन जीवन दिवस चारि को, धन जोबन कहे मोर ।
पाँच तीन के फेर लगो है, मनुवाँ लेत अँकोर† ॥१॥
नेकु न रहत डहत निसि बासर, मनुवाँ है सठ घोर‡ ।
ऊँच नीच कहि खावन जानत,भरि भरि बिषै हिलोर ॥२
मुदगर§ मारि कायागढ़ लीन्हो, परो अमरपुर सोर ।
कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन बाँधो गयो जोर ॥३॥

॥ शब्द २ ॥

नाहक गर्ब करे हो अंतहि,
खाक में मिलि जायगा ॥ टेक ॥
दिना चारि को रंग कुसुम है, मैं मैं करि दिन जायगा ।
बालु क मंदिल ढहत बार नाहिँ, फिर पाछे पछितायगा ॥१

*आम का फूल जो छिन में झर जाता है। †रस । ‡बहुत बड़ा। §मुगदर ।

रचि रचि मंदिल कनक बनायो, ता पर कियो है अवासा*।
घर मँ चोर रैनि दिनि मूसहिँ कहहु कहाँ है बासा ॥२॥
पहिरि पटंबर भयो लाड़िला, बन्यो छैल मद माता।
गैबी चक्र फिरै सिर ऊपर, छिन मँ करै निपाता ॥३॥
नेकु धीर नहिँ धरत बावरे, ठौर ठौर चित जाते।
देवहर पूजत तीर्थ नेम ब्रत, फोकट† को रंग राते ॥४॥
का से कहूं कोउ संग न साथी, खलक सबै हैराना।
कहैँ गुलाल संतपुर बासी, जम जीतो है दिवाना ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

करु मन सहज नाम ब्यौपार,
छोड़ि सकल व्यौहार ॥टेक॥
निसु बासर दिन रैन ढहतु है,
नेक न धरत करार।
धंधा धोख रहत लपटानो,
भ्रमत फिरत संसार ॥ १ ॥
मात पिता सुत बंधू नारी,
कुल कुटुम्ब परिवार।
माया फाँसि बाँधि मत डूबहु,
छिन मँ होहु सँघार ॥२॥
हरि की भक्ति करी नहिँ कबहीँ,
संत बचन आगार।
करि हंकार मद गर्ब भुलानो,
जन्म गयो जरि छार ॥ ३ ॥

---

*बास। †छिलका।

अनुभव घर कै सुधियो न जानत,
का सोँ कहूं गँवार ।
कहै गुलाल सबै नर गाफिल,
कैान उतारै पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हे मन ऐसी बनिज लदावो ।
पाँच पचीस तीनि आपा मैँ,
कसि कै गगन गुफा ठहरावो ॥ १ ॥
सुन्न सिखर पर बाजन बाजै,
सुनत सुनत मन भावो ।
लवकै* बिजुली मोती बरसै,
चूँगत चुँगत अघावो ॥ २ ॥
चाँद सूर तहवाँ नहिँ दिखियत,
निसु दिन आनँद भावो ।
काम क्रोध की गरदन मारो,
अनुभव अमल चलावो ॥ ३ ॥
उमँगि उमँगि प्रभु के रँग रातो,
पुलकित† कंठ लगावो ।
जन गुलाल पिय प्यारी खसम की,
जम सिर डंक‡ बजावो ॥ ४ ॥

---

* चमकती है । † उमग से । ‡ डंका ।

॥ शब्द ५ ॥

नर करबौ कवन बिचार, लोगवा पाहुन ॥टेक॥
साँझ सकार रैन दिन धावहि, सबहि करत ब्योहार ।
भर ढिँढ़* खाइन जनम गवाइन, काहू न आपु सँभार १
पाँच पचीस नगर के बासी, मनुवाँ है फउदार† ।
मारि लूटि कै डाँड़ लेतु है, का तुम करब गँवार ॥ २ ॥
समय गये कोउ संग न साथी, धन जोबन परिवार ।
जम राजा जब धै लै चलिहैँ, छुटि है सकल पसार ॥३॥
कुसुम सिँगार पहिरि मति भूलो, ढरत न लागै बार ।
कहत गुलाल सबै नर गाफिल, जम का करिहै हमार ।४

॥ शब्द ६ ॥

लागो रँग झूठो खेल बनाया ।
जहँ लगि ताको सबै पसारा, मिथ्या है यह काया ॥१॥
मोर तोर छूटत नहिँ कबहीँ, काम क्रोध अरु माया ।
आतम राम नहीँ पहिचानत, भोँदू जन्म गँवाया ॥ २ ॥
नेम कै आस धरत नर मूढ़हु, चढ़त चरख दिन जाया ।
घुमत घुमत कहिँ पार न पावै,का लै आया का लै जाया३
साध संगति कीन्हे नहिँ कबहीँ, साहब प्रीति न लाया ।
कहैँ गुलाल यह अवसर बीते, हाथ कछू नहिं आया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अभि‡ अंतर ही लै लाव मना,
ना तो जन्म जन्म जहड़ाई§ हो ॥टेक॥

---

*पेट। †सैनापति । ‡घट । §भरमना ।

घन दारा सुत देखि कै, काहे बैाराई हो।
काल अचानक मारिहै, कोउ संग न जाई हो ॥१॥
धीरज धरि संतोष करु, गुरु बचन सहाई हो।
पद पंकज अंबुज करु नवका, भवसागर तरि जाई हो २
अनेक बार कहि कहि के हारो, कहँ लग कहैां बुझाई हो।
जन गुलाल अनुभैा पद पावो, छुटलि सकल दुनियाई हो ॥३

मन माया का अंग

॥ शब्द १ ॥

मन तुम काहे न हरि गुन गावो,
कोटिन जन्म भुलावो ॥ टेक ॥
घर मैँ अमृत छोड़ि के रे,
फिरि फिरि मदिरा पावो।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु,
बहुरि न ऐसो दावो ॥ १ ॥
पाँच पचीस नगर के बासी,
उन्हैँ लिये सँग धावो।
बिनु पर उड़त रहत निसु बासर,
ठौर ठिकान न आवो ॥ २ ॥
जोगी जती तपी निर्बानी,
कपि ज्यूँ बाँधि नचावो।
सन्यासी बैरागी मैानी,
धरि धरि नर्क मैँ नावो ॥ ३ ॥

अब की बार दाव है मेरो,
छोड़ौं न राम दोहाई ।
कहै गुलाल अवधूत फकीरा*,
राखौं जँजीर भराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

संतौ नारि सकल जग लूटा ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव सनादिक,
सुर नर मुनि नहिं छूटा ॥ १ ॥
नवो नाथ सिद्ध चौरासी,
नारद रिषि दुरवेसा ।
जोगी जंगम तपि वैरागी,
गन† गंधर्ब अरु सेसा ॥ २ ॥
लक्ष चौरासी जीव जहाँ लग,
ज्ञान बुद्धि हर लीन्हा ।
तीन लोक में जाल पसारो,
मोह के बसि सब कीन्हा ॥ ३ ॥
बज्र बाँध सब ही को बाँध्यो,
बाँधी बाँधि नचाया ।
कहैं गुलाल कोऊ जन बाचे,
जिन सतगुरु पूरा पाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

संतो नारि सैाँ प्रीति न लावै ।
प्रीति जो लावै आपु ठगावै,
मूल बहुत को गावै ॥ १ ॥

*फकीर । †छोटे छोटे देवता जो शिव जी की सेवा में रहते हैं

गुरु को बचन हृदय लै लावै,
पाँचौ इंद्री जारै ।
मनहिँ जीति माया बसि करिकै,
काम क्रोध को मारै ॥ २ ॥
लोभ मोह ममता को त्यागै,
तृस्ना जीभि निवारै ।
सील सँतोष सो आसन माड़ै,
निसु दिन सब्द बिचारै ॥ ३ ॥
जीव दया करि आपु सँभारै,
साध संगति चित लावै ।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी,
बहुरि न भवजल आवै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

संतो कठिन अपरबल नारी ।
सबहीँ बरलहि* भोग कियो है,
अजहूं कन्या क्वारी ॥ १ ॥
जननी ह्वै के सब जग पाला,
बहु बिधि दूध पियाई ।
सुंदर रूप सरूप सलोना,
जोय† होइ जग खाई ॥ २ ॥

*बिबाह करके । †जोरू ।

मोह जाल सोँ सबहिँ बझायो,
जहँ तक है तन धारी ।
काल सरूप प्रगट है नारी,
इन कहँ चलहु सँभारी ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान सब हीं हर लीन्हो,
काहु न आपु सँभारी ।
कहै गुलाल कोऊ कोउ उबरे,
सतगुरु की बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अधम मन जानत नाहीँ राम ।
भरमत फिरै आठ हूं जाम ॥ १ ॥
अपनो कहा करतु है सबही, पावत पसु आराम ।
घुरबिनिया* छोड़त नहिं कबहीँ,
होइ भोर भा साम ॥ २ ॥
ऊड़त रहत बिना पर जामे, त्यागि कनक ले ताम† ।
नीक बस्तु के निकट न लागे, भरत है झोरी खाम‡ ॥ ३
अब की बार कहा करु मेरो, छोड़ो अपनी हाम§ ।
कह गुलाल तोहिं जियत न छोड़ौं, खात दोहाई राम ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अधम मन राम न जान गँवारो ।
या मन तँ केते अरुझाने, माया झूठि बिस्तारो ॥ १ ॥
यहि परिपंच देखि जनि भूलहु, कारन सबै बिचारो ।
हर दम पलक थीर नहिं पैहैा, छिन महँ काल सँघारो २

*कूड़ा चुनने की आदत । †ताँबा । ‡कच्ची । §हँगता ।

काम क्रोध मद लोभ न छूटत, धर्महीन औतारो ।
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहौ, कहत हौं बारंबारो ॥३॥
जे नर सरन राम की आये, ता को कौन बिगारो ।
कहै गुलाल राम को सेवक, संतो कइल बिचारो ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मोर मन मतवलवा रहल लोभाय ॥ टेक ॥
बटिया न चलत उबट* देत पाँय ।
तजि अमृत बिषही फल खाय ॥१॥
छोड़लस घर बन फिरत बहाय ।
अकरम काम करत न लजाय ॥२॥
का सोँ कहौँ दुख कहल न जाय ।
करत अनीत न अंग समाय ॥३॥
कह गुलाल हम सतगुरु पाये ।
मन बाँधल हम सहज समाये ॥४॥

करम भरम कुल-कान आदिक का निषेध और उपदेश गुरु व शब्द भक्ति का

॥ शब्द १ ॥

अस मन रहु गुरु चरन पास,
चित चकोर जस चंद आस ॥१॥
गुरु मरजादा† कहि न जाय,
कोटि जतन जो रचि बनाय ॥२॥

---

*कुराह । †बड़ाई ।

जिन जाना सिर चरन रेनु,
गुरु के बचन जस काम धेनु ॥३॥
अष्ट जाम जाके बरत जोत,
बिमल बिमल धुनि उदित होत ॥४॥
गगन मँडल में बजत तूर,
धन सतगुरु वहाँ रहत पूर ॥५॥
अति आनँद वहाँ उठत बसंत,
गुरु कै फागु लै खेलत संत ॥६॥
कह गुलाल मेरी पुजलि आस
सतगुरु बुल्ले दिहल बास ॥७॥

॥ शब्द २ ॥

मन तुम कपट दूर लुटाव।
भटक को तुम पंथ छोड़ो, सुरत सब्द समाव ॥१॥
करत चाल कुचाल चालत, मकर मेल सुभाव।
तीन तिरगुन तपत दिनकर, कैसहू बुझलाव ॥२॥
अति अधीन मलीन माया, मोह मैं चित लाव।
अगम घर की खबरि नाहीं, मूढ़ता सच पाव ॥३॥
सुन्न सिखर सरोज* फूलो, बंक नालहि जाव।
कह गुलाल अतीत पूरन, आपु मैं घर पाव ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

भाई रे धोखे सब अरुझाना।
सब्द सरूप नहीं पहिचानहिं, तीरथ ब्रत लिपटाना ॥१॥

*कँवल।

कोउ पँच अगिन अधोमुख झूलै, कोऊ तारी लावै ।
कोउ जल सैन पवन धुनि* लावै, बाँह उठाय सुखावै॥२
माला पहिरै तिलक बनावै, काथा† गूदर नावै ।
मन मुरीद होवै नहिं जब लै, बिरथा भेख बनावै ॥३॥
कोऊ जोग जज्ञ तप ठानै, कोऊ गुफा मैं बासा ।
षट दरसन से जाय न पारे, सब को काल गरासा ॥४॥
झूँठि आस बिस्वास करत है, सुन्न‡ सदा लपटाना ।
कह गुलाल कोउ कहन न मानै, भरमत फिरत दिवाना ।

॥ शब्द ४ ॥

काह कहौं कछु कहत न आवै, नाहक जग बौराई हो ।
अपनो नाह§ नेक नहिँ जानहिँ, पर पूरुष पहँ जाई हो१
घर घर कलस लेइ अग्र राखहिँ, बहु बिधि रचहिँ बनाई हो।
गावहिँ पचरा‖ मूड़ कँपावहिं, बोरलहिँ¶ सकल कमाईहो॥२
ऊँच नीच जिव सबहीं मारहिँ, बैठहिँ देव की नाईं** हो ।
झूँठ बचन कहि कै मन लावहिँ, जस अंधा बिपिन††
भुलाई हो ॥३॥
आपु अपन को चीन्हत नाहीं, कुल की लाज लजाई हो ।
काल दंड धैकै जब मिसिहै‡‡, भुलिहै सब चतुराई हो ॥४॥
आपु अपन के सबहिँ सयाने, हम बौराये भाई हो ।
कहै गुलाल बहि गये सयाने, हमरे कही न जाई हो॥५॥

---

*स्वाँसा से सोहं का जाप । †कथरी । ‡ख़ाली । §ख़सम । ‖देवीपूजा में जो गीत गाई जाती है । ¶डुबा दी । **तरह । ††बन । ‡‡मलैगा ।

॥ शब्द ५ ॥

नाम रस अमरा है भाई, कोउ साध संगति तेँ पाई ॥टेक॥
बिन घोटे बिन छाने पीवे, कौड़ी दाम न लाई ।
रंग रँगीले चढ़त रसीले, कबहीँ उतरि न जाई ॥१॥
छके छकाये पगे पगाये, झूमि झूमि रस लाई ।
बिमल बिमल बानी गुन बोलै, अनुभव अमल चलाई ॥२
जहँ जहँ जावै थिर नहिँ आवै, खोलि* अमल लै धाई ।
जल पत्थल पूजन करि भानत, फोकट गाढ़ बनाई† ॥३॥
गुरू परताप कृपा तेँ पावै, घट भरि प्याल‡ फिराई ।
कहँ गुलाल मगन ह्वै बैठे, भगिहै हमरि बलाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

देखो संतो एक अजगूता§, सुंदर घर लूटहिँ जमदूता ॥१
इहवाँ देखो उहवाँ अंध, उहवाँ देखो इहवाँ फंद ॥२॥
काटै मूड़ चढ़ावै देवा, इह देखो उह का करि सेवा ॥३॥
जन्म जाति बैठो बहु भाँती, इहँ देखा उहँ जाति न पाँती ॥४
सुत धन मात पिता अरधंग, इहँ देखो उहँ काको संग ॥५
कहँ गुलाल यह मन को फेर, मन जीते सो पूरा सेर ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो जन राम नाम भजिये,
एक सिवाय और सब तजिये ॥१॥
आदि ब्रह्म की उपजी इच्छा,
तब ऊठो चेतन्न परिच्छा ॥२॥
चेतन सब्द भयो इक ठाँई,
पाँच तत्त ले जग उपजाई ॥३॥

*थोथा । †सैंत में गढ़ के बनाया है । ‡प्याला । §अचरज ।

चारि खान को किया पसार,
सुर नर नाग सबै औतार ॥ ४ ॥
माया मोह सब रच्यो बनाई,
चढ़त चरख फेरत दिन जाई ॥ ५ ॥
लोक बेद के परे हैं ख्याल,
बाझि मुए नर माया जाल ॥ ६ ॥
सकी बकी* सब गइल हिराई,
प्रभु विन तोकहँ कौन छोड़ाई ॥ ७ ॥
अनेक रंग को सुखद बनाया,
निरचै जानु ठगिन है माया ॥ ८ ॥
घर घर फाँस लिये कर धाई,
बच्यो सोई जो गुरु सरनाई ॥ ९ ॥
विनु हरि भजन न होवै थीर,
संगति होय जो पावै पीर† ॥ १० ॥
तब यह धोखा मिटै रे भाई,
नहिं तौ घूमत फिरै बहाई ॥ ११ ॥
जो जिय जानै एकै रूप,
भटक न करू कहिं अवर सरूप ॥ १२ ॥
तृस्ना तामस बुरा रे भाई,
सत्त बिना कछु काम न आई ॥ १३ ॥
जंत्र मंत्र करै कर्म अनेक,
अपने अपने कुल कै टेक ॥ १४ ॥

*सुधि बुधि। †गुरू।

याही मत संसार भुलाई,
    ज्ञान हीन कैसे गति पाई ॥ १५ ॥
जोग जज्ञ जो करै कराई,
    दान धर्म्म में बहु मन लाई ॥ १६ ॥
कहै गुलाल यह पाखँड भाई,
    आपु न चीन्हहु का बौराई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

रसना राम नाम लव लाई ।
अंतरगते प्रेम जो उपजै, सहज परम पद पाई ॥ १ ॥
सतगुरु बचन समीर* थीर धरि, भाव सो बंद लगाई ।
उड़ै हंस गगन चढ़ि धावै, फाटि जाय भ्रम काई ॥ २ ॥
जोग यज्ञ तप दान नेम ब्रत, यह मोहीं नहिं आई ।
संतन को चरनोदक लै लै, गिरा† जूँठ मैं पाई ॥ ३ ॥
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बौराई ।
कहैं गुलाल राम नहिं जानत, खुझिहै‡ हमरी बलाई ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

मोर मतवलवा नाम मद मातल,
    प्रेम लगन हिये लाई हो ।
आठो जाम रैन दिन मातल,
    श्रोर कहूं नहिँ जाई हो ॥ १ ॥
उनमुनि धुनि लै भाठी साज्यो,
    षट रस अधर चढ़ाई हो ।
लैा की पवन फेरत जल भरि भरि,
    सींचत मूल सोहाई हो ॥ २ ॥

---

*वायु । †पड़ा हुआ । ‡झुँझलाना ।

चूवत सिखर भरत घट भरि भरि, धै के सुरत उतारी हो।
चाखत मनुवाँ मगन मन माने, लेत है अमी करारी हो ॥३॥
सत्त सब्द कै नेजा बाँध्यो, ओगरत* नाम अगारी† हो।
कहैं गुलाल संत जन पीवहिं, वाही लगन हमारी हो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

नाम रस भला है रे भाई।
कोइ सानि जोगेसर खाई ॥ टेक ॥
काया कूँड़ी साफ बनायो, तिरबिधि बिजया‡ नाई।
घोटा§ पवन को सितल बनाये, छानु सिखर पर जाई ॥१॥
चाखत मनुवाँ भयो है दिवाना, छकि छकि अमल छकाई।
हर हर लहर लेहि रस भरि भरि, अनतहिं जाइ बलाई ॥२॥
जिन पाये तिन हीं को भाये, आलम‖ रहल लजाई।
माया मोह मैं लपटि रहो है, काँटहिं काँट अरुझाई ॥३॥
संत सभा मैं फिरत करारी, अपनी अपनी भाई¶।
कहैं गुलाल सादर बिनती करि, किछु किछु हमहूं पाई ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

सत्त सब्द तहँ होय बेनु तहँ उठै बधावा ॥१॥
बाजै अनहद घंट बंसी रव** सुन में भावा ॥२॥
बैठि सिंघासन जाय दसहुं दिसि मानिक छावा ॥३॥
कहैं गुलाल सोइ भक्त अभैपुर डंक बजावा ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

झूँठ सेवा नर करत आस, नाम बिना नहिं पैहै बास ॥१॥
तीरथ बरत देव आराध, केहु पूँछहि ना जम बाँधहि बाध††२

*टपकती है। †शराब। ‡भाँग। §सोँटा। ‖संसार। ¶भाव। **शब्द।
††रस्सी।

यहि बिस्वास भुलै मत कोय, माँझ धार में बोरिहँ सोय ॥३॥
लोक बेद महँ रत संसार, राम न चीन्हहिं मुरख गँवार॥४॥
ऐसहि समय गये दिन बीति, बार न ढहत बालु कै भीति ॥५॥
कहँ गुलाल मूढ़ हम भाई, सबहिँ सयाने हम बौराई ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

ससि औ सूर पवन भरि मेला, दृढ़ करि आसन बैठु अकेला१
उलटै नाल गगन घर जावै, बिगसै कँवल चंद दरसावै॥२॥
घंटा रव तहँ बाज निसाना, अनहद धुन सुनियत बिनु काना
सुन्न असुन्न में डोर बँधाना, उड़े हंस चढ़ि करत पयाना ॥४॥
अगम अगोचर अबिगत खेला, प्रान पुरुष तहँ करत है मेला५
मन अरु पवन सहज घर आयो, ऐसी गतिसंतन मनभायो६
मेटल सुन्न मिलल परगासा, जन्म जन्म कै पूजलि आसा॥७८
जनगुलालसतगुरु बलिहारी, जातिपाँतिअबछुटलहमारी॥

॥ शब्द १४ ॥

हमरे राम नाम बस्तू है, खलक लेन चहे घौंगा* ।
हमरे कटक फौज कछु नाहीं, हमरे धन सुत जोगा ॥१॥
हमरे मुलुक खजाना नाहीं, रैयत नहिँ बस लोगा ।
हमरे पूरन नाम भरो धन, दुनिया देखि मरै सोगा ॥२॥
हमरे संग साथ नहिँ कोई, अंध भये सब खोजत लोगा ।
हमरे बेद कितेबौ नाहीं, हमरे ब्रत नहिँ भोगा ॥३॥
राजा रंक छत्रपति देखो, काल खड्ग मारत सब खोजा ।
कहै गुलाल निःकल्प रूप भयो, जगत मुए करि रोजा ॥४॥

*घौंघा, कौड़ी ।

॥ शब्द १५ ॥

रे मन नामहिं सुमिरन करै।
अजपा जाप हृदय लै लावो, पाँच पचीसो तीन मरै॥१॥
अष्ट कमल में जीव बसतु है, द्वादस मैं गुरु दरस करै।
सोरह ऊपर बानि उठतु है, दुइ दल अमी झरै॥२॥
गंगा जमुना मिली सरसुती, पदुम झलक तहँ करै।
पछिम दिसा ह्वै गगन मँडल में, काल बली सोँ लरै॥३॥
जम जीतो है परम पद पायो जोती जगमग बरै।
कह गुलाल सोइ पूरन साहब, हर दम मुक्ति फरै॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

ऊठत नाम मनोरवा हो, संतन कै यह ज्ञान ॥ टेक ॥
याहि सुफल जिन्ह जान्यो हो, बाजत अभय निसान ॥ १ ॥
अष्ट कमल पर फूलिब हो, दसो दिस ऊगे भान ॥ २ ॥
गगन मँडल गुन गाइब हो, निझर झरे असमान ॥ ३ ॥
सत्त सब्द में समाइब हो, कह गुलाल मन मान ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सरूप समाइब हो, निर्गुन रूप अपार ॥ टेक ॥
अति अथाह नहिं पाइब हो, ऊठत लहर करार ॥ १ ॥
सहज सरोवर गुल फूलल हो, बिनु डाँड़ी बिनु तार ॥ २ ॥
पुलकि पुलकि मन लाइब हो, आवागवन निवार ॥ ३ ॥
जन गुलाल घर छाइब हो, बाझि मुवल संसार ॥ ४ ॥

प्रेम ।

॥ शब्द १ ॥

अबिगत जागल हो सजनी ।
खोजत खोजत सतगुरु पावल,
ताहि चरनवाँ चितवा लागल हो सजनी ॥ टेक ॥
साँझ समय उठि दीपक बारल,
कटल करमवा मनुवा पागल हो सजनी ॥१॥
चललि उवटि* बाट छुटलि सकल घाट,
गरजि गगनवा अनहद बाजल हो सजनी ॥२॥
गइली अनँदपुर भइली अगम सूर,
जितली मैदनवा नेजवा† गाड़ल हो सजनी॥३॥
कहैँ गुलाल हम प्रभुजी पावल
फरल लिलरवा पपवा भागल हो सजनी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

लागलि नेह हमारी पिया मोर ॥ टेक ॥
चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावौं,
करौं मैं मंगलचार ।
एकौ घरी पिया नहिं अइलैं,
होइला मोहिं धिरकार ॥ १ ॥
आठौ जाम रैन दिन जोहौं,
नेक न हृदय बिसार ।
तीन लोक कै साहब अपने,
फरलहिं मोर लिलार ॥ २ ॥

*कठिन । †भाला ।

सत्त सरूप सदा हौं निरखौं,
　　संतन प्रान अधार ।
कहैं गुलाल पावौं भरि पूरन,
　　मौजै मौज हमार ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आजु मोरे अनँद बधावा जियरा कुहकैला,
　　सुनत सुनत सुख पाय ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तिनि* चाचरि गावहिं,
　　सो सुख बरनि न जाय ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो है,
　　झमक रहो है छाय ॥ २ ॥
प्रेम पियारा प्रगट भयो जब,
　　ब्रह्म पदारथ पाय ॥ ३ ॥
थकित भयो सुधि बुधि हर लीन्ह्यो,
　　इत उत कहीं न जाय ॥ ४ ॥
कहैं गुलाल भक्ति बर पायो,
　　छूटलि सबहि बलाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मैं बलि बलि जावँ मेरो मन लागल प्रभु पंथा ॥ टेक ॥
प्रेम नेम लै लावल हो पावल गुरु रीती ।
पुलकि पुलकि छबि देखल गावल निर्गुन गीती ॥१॥
या तन समय सुहावन हो जानहु परतीती ।
राम बिना कस जीवन हो बालू ज्यों भीती ॥२॥

*तीन ।

सासु सोहागिन बिलसहिं* हो ननदी बिपरीती ।
गाँव कै लोग नहिं आपन हो सवति करै चीती† ॥३॥
सुनहू सखियाँ सहेलरि हो जो करै कहल हमार ।
भवजल नदिया भयावनि हो कैसे उतरब पार ॥४॥
उलटि पवन घर सोधल हो सब रहल लजाय ।
जगमग जगमग त्रिकुटी हो देखि रहल लोभाय ॥ ५ ॥
गंग जमुन बिच मंडप हो घर अगम अवास ।
बिनु पर हंसा उड़ि गवन्यो तहँ भूख न प्यास ॥ ६ ॥
पाप पुन्न नहिं दुख सुख हो नहिं रोग न सोग ।
सुखमन सार अमी रस हो तहँ जोग न भोग ॥ ७ ॥
गगन मगन धुनि गाजै हो देखि अधर अकास ।
जन गुलाल बसि हरि पद हो तहँ करहिं निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

आजु झरि बरखत, बुंद सोहावन ।
पिया कै रीति प्रीति छबि निरखत,
पुलकि पुलकि मन भावन ॥ १ ॥
सुखमन सेज जे सुरति सँवारहिं,
झिलमिलि झलक दिखावन ।
गरजत गगन अनंत सब्द धुनि,
पिया पपीहा गावन ॥ २ ॥

*बिलास करती है । †चिट्टा लड़ाना ।

उमग्यो सागर सलिल नीर भरो,
चहुं दिसि लगत सोहावन।
उपज्यो सुख सन्मुख तिरपित भयो,
सुधि बुधि सब बिसरावन ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ छुट्यो सब,
अपनेहि साहब भावन।
कह गुलाल जंजाल गयो तब,
हर दम भादौं सावन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हरि सँग लागत बुंद सोहावन।
समय जानि सब जीव मगन भे,
गृह आपन सब छावन ॥ १ ॥
चहुं दिसि तेँ घन घेरि घटा आई,
सुन्न भवन डरपावन।
बोलत मोर सिखर के ऊपर,
नाना भाँति सुहावन ॥ २ ॥
आनँद घट चहुं ओर दीप बरै,
मानिक जोति जगावन।
रीझ रीझ पिया के रँग राते,
पल्कन चँवर डोलावन ॥ ३ ॥
मंडौ* प्रेम मगन भइ कामिनि,
उमँगि उमँगि रति भावन।
कह गुलाल सन्मुख साहब मिल्यो,
घर मारो है रावन ॥ ४ ॥

*छाय रहा।

॥ शब्द ७ ॥

पिय सँग जुरलि सनेह सुभागी ।
पुरुब प्रीति सतगुरु किरपा कियो, रटत नाम बैरागी ॥१॥
आठ पहर चित लगै रहतु है, दिहल दान तन त्यागी ।
पुलकि पुलकि प्रभु सोँ भयो मेला, प्रेम जगो हिये भागी ॥२॥
गगन मँडल में रास रचो है, सेत सिँघासन राजी ।
कह गुलाल घर में घर पायो, थकित भयो मन पाजी ॥३॥

॥ शब्द ८ ॥

जो पै कोइ प्रेम को गाहक होई ।
त्याग करै जो मन कि कामना, सीस दान दै सोई ॥ १ ॥
और अमल की दर* जो छोड़ै, आपु अपन गति जोई ।
हर दम हाजिर प्रेम पियाला, पुलिक पुलिक रस लेई ॥२॥
जीव पीव महँ पीव जीव महँ, बानी बोलत सोई ।
सोइ सभन महँ हम सबहन महँ, बूझत बिरला कोई ॥३॥
वा की गती कहा कोइ जानै, जो जिय साँचा होई ।
कह गुलाल वे नाम समाने, मत भूले नर लोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जनम सुफल भैलो हो हम धन पिया की पियारी ॥ टेक ॥
सोरहो सिँगार सँपूरन पहिरल देखल रूप निहारी ।
तत्त तिलक दे माँग सँवारल बिनवल अँचरा पसारी ॥१॥
आठ पहर धुनि नौबति बाजै सहज उठै झनकारी ।
रीझि रीझि नेवछावर वारौं मुक्ता भरि भरि थारी ॥२॥

*ठाँव ।

गनग मँडल में परम पद पावल जमहिं कइल घर छारी ।
जन गुलाल सोहागिन पिय सँग मिलली भुजा पसारी॥३

॥ शब्द १० ॥

अब मो सौं हरि सौं जुरलि सगाई ।
ब्रह्मा बेद उचारत निसु दिन
अनुभव तूर बजाई ॥ १ ॥
संत साध मिल लगन धराई
प्रेम कै बात चलाई ।
सुन्न सिखर पर माड़ो छावो
सहज के रूप लगाई ॥ २ ॥
गगन मँडल में कोहबर राचो
लीखत चित्र बनाई ।
सुरति निरति लै सखि सब गावहिं
घर ही नव निधि पाई ॥ ३ ॥
लोक बेद नेवछावरि वारौँ
जुग जुग मैल बहाई ।
कहैँ गुलाल परम पद पावो
सतगुरु ब्याह कराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मन मोर बोलै हरि हरि राम ।
और देव से नाहीं काम ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति नितहीं चित लाय,
रैन दिवस कतहूं नहिँ जाय ॥ २ ॥

पाँच पचीस लै बैठि अकास,
केल करत कोउ संग न पास ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर पर करि बहु रंग,
दसौ दिसा में उठत तरंग ॥ ४ ॥
कृपा कियो गुरु भयो निस्तार,
जन गुलाल भजि उतरहिँ पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राम राम राम नाम सोई गुन गावै ।
आपु मारि पवन जारि गगना गरजावै ॥ १ ॥
अतिही आनंद कंद* बानि हूं सुनावै ।
सतगुरु जब दया जानि प्रेम हूं लगावै ॥ २ ॥
अगम जोति झरत मोति झिलमिल झरि लावै ।
चित चकोर निरखि जोति आपु में समावै ॥ ३ ॥
काम क्रोध लोभ मोह तन मन बिसरावै ।
सोई सुधित† धीर सोइ फकीर सोइ कहावै ॥ ४ ॥
जाति मान कुल कै कान गरब हूं गँवावै ।
कह गुलाल सोई संत आपु हीं कहावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम सदा चरन चित लाय ।
जासु नाम सुर नर मुनि तारे, निरखत कलुख‡ नसाय॥१॥
पाँच पचीस तीन लइ बाँधो, उलटो नाव चलाय ।
तिरबेनी तट आसन माँडो, गगन मँडल मठ छाय ॥२॥

*समूह । †सुबुद्धि । ‡पाप ।

बरत जोति आखंडित धारा, भरो* दसहुं दिसि छाय ।
त्रिनु सिर बैठि अमी रस अँचवै, लै लै लहरि समाय॥३॥
नहिं तहँ थाह न आदि अंत नहिं, सतगुरु सत्त लखाय ।
दास गुलाल भये तहँ सेवक, आनँद ढोल बजाय ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

भजु मन राम नाम निज सार ।
जासु भजे किरपिन† डर छूटत, ज्ञान उठत उजियार ॥१॥
जो प्रभु कृपा करैं दासन पर, पलकन पलक न छाँड़ ।
सुखमन सेज प्रभू पौढ़ावो, गावो मंगलचार ॥२॥
अछै अमर अनुभौ अनमूरत, संतन प्रान अधार ।
कह गुलाल मेरे घर आये, तिहुं पुर की छबि वार ॥३॥

॥ शब्द १५ ॥

राम चरन चित अटको ।
सहज सरूप भेख जब कीन्ह्यो,
प्रेम लगन हिय लटको ॥ १ ॥
लागि लगन हिय निरखि निरखि छबि,
सुधि बुधि बिसरी अटके नयन ।
उठत गुंज नभ गरजि दसहुं दिसि,
निरझर झरत रतन ॥ २ ॥
भयो है मगन पूरन प्रभु पायो,
निर्मल निर्गुन सत तटनी ।
कह गुलाल मेरे याही लगन है,
उलटि गयो जैसे नटनी ॥ ३ ॥

*भरपूर । †कंजूस, यह नाम जमराज को भी दिया जाता है ।

॥ शब्द १६ ॥

अब हम छोड़ दिहल चतुराई, दुनिया गर्बभु लाई ॥टेक॥
सहज सरूप साहब घर पावल, अंते* जाय बलाई ।
सुरति निरति ले आसन माँड्यो, जोग जुगति बनि आई ॥१॥
जन्म जन्म के पातक धोये, सतगुरु मैल बहाई ।
सत्त सुकृत कै नाव चलावो, बैठु अगम घर जाई ॥२॥
नहीं आदि नहिं अंत मध्य नहिं, नहिं आवै नहिं जाई ।
अनुभै फल पावो परिपूरन, अभय निसान बजाई ॥३॥
अब की बार मारो ये बाजी, संतन साथ लगाई ।
जन गुलाल अलूफा† पावो, मनुवहिं बाँधि ले आई ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

आनँद बरखत बुन्द सोहावन ।
उमँगि उमँगि सतगुरु बर राजित समय सोहावन भावन॥१
चहूं ओर घन घोरि घटा आयो सुन्न भवन मन भावन ।
तिलक तत्त बुँदी पर झलकत जगमग जोति जगावन ॥२॥
गुरु के चरन मन मगन भयो जब बिमल बिमल गुन गावन।
कहैं गुलाल प्रभु कृपा जाहि पर हर दम भादों सावन ॥३॥

॥ शब्द १८ ॥

आजु हरि हमरे पाहुन आये, करौं मैं अनँद बधाव ॥ टेक ॥
मन पवना कै सेज बिछावल, बहु बिधि रचल बनाय ।
ताहि पलँग पर स्वामी पवढ़लहिं‡ हम धन बेनिया§ डोलाय
सुरति सोहागिन करहि रसोई, नाना भाँति बनाय ।
घर में लवल्योँ|| अरथ दरब सब, सैं कै सनमुख जाय ॥२॥

---

*और जगह । †साधुवाँ के पहिरने की अलफ़ी ? ‡लेटे । §पंखा ।
||जला दिया ।

प्रेम प्रीत कै भोजन कीन्ह्यो अमृत पत्र जँवाय ।
अनत जन्म पर पाहुन आये, संत उधारन राय ॥३॥
कह गुलाल साहब घर आये, सेव करब चित लाय ॥४॥
अधर महल पर बैठक पायौं, अंते* जाय बलाय ॥५॥

॥ शब्द १९ ॥

अँखियाँ प्रभु दरसन नित लूटी ।
हौं तुव चरन कमल में जूटी ॥१॥
निर्गुन नाम निरंतर निरखौं अनंत कला तुव रूपी ।
बिमल बिमल बानी धुनि गावौं कह बरनौं अनुरूपी ॥२॥
बिगस्यो कमल फुल्यो काया बन, झरत दसहुँ दिस मोती ।
कह गुलाल प्रभु के चरनन सों डोरि लगी भर† जोती ॥३॥

॥ शब्द २० ॥

हौं अनाथ चरनन लपटानो ।
पंथ और दिस सूझत नाहीं छोड़ो तो फिरौं भुलानो ॥१॥
जासु चरन सुर नर मुनि सेवहिं कहा बरनि मुख करों बयानो।
हौं तो पतित तुम पतित-पावन गति औगति एको नहिं जानो ॥२॥
आठो पहर निरत धुनि होवै उठत गुंज चहु दिसा समानो ।
झरि झरि परत अगार‡ नैन भरि, पियत ब्रह्म रुचि अमी अघानो ॥३॥
बिगस्यो कमल चरन पायो जब यह मत संतन के मन मानो ।
जन गुलाल नाम धन पायो निरखत रूप भयो है दिवानो ॥४

*और जगह । †तक । ‡शराब का फूल ।

॥ शब्द २१ ॥

मेरो मन प्रभु सोँ लागल हो,
जागल प्रेम मन पागल हो ॥ १ ॥
घड़ि घड़ि पल पल जोति मिलो रहै,
काम क्रोध मद त्यागल हो ।
अगम अगोचर सत्त निरंजन,
बाजन अनहद बाजल हो ॥ २ ॥
एकै सत्त दसा एकै लिये,
एकै ब्रह्म बिराजल हो ।
आनँद एक भाव निस बासर,
एक भक्ति हम माँगल हो ॥ ३ ॥
अगम भेद सूझत नहिं बूझत,
सहज सहज होइ जागल हो ।
कह गुलाल साहब किरपा कियो,
दै कै तिलक निवाजल* हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

हरि पुर चलु याही बिधि जहँ संतन बास ॥ टेक ॥
सतगुरु सत्त लखावल पावल मत मूल ।
प्रेम प्रीत चित लावल मन देखल अस्थूल ॥ १ ॥
चंद सूर घर आयल तिरबेनी तीर ।
निरखि निरखि गति साजल दरसन रघुबीर ॥ १ ॥
सुरति निरति ले जाइब घर अगम अवास ।
तहवाँ प्रान अनादित काटल जम फाँस ॥ ३ ॥

---

*बख़्शिश की ।

लोक पुनित* तीरथ व्रत राखहिं सब आस ।
जन गुलाल सत बोलहिं चरनन बिस्वास ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

अरे मोर छैला भँवरा गैलो काहू न बुझाय ॥ टेक ॥
इक अँधियारी मग चलल न जाय ।
बाझल भँवरा कौनी गति लाय ॥ १ ॥
बिरह कै बाँधल भँवरा खसि खसि जाय ।
सँग लागल भँवरा भैल बलाय ॥ २ ॥
प्रेम बझावल भँवरा चरन लगाय ।
घर आय भँवरा रहल लोभाय ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल थकलीं बृज नारी ।
हम धन मिललीं भुजा पसारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

पावल प्रेम पियरवा हो ताहि रे रूप ।
मनुवा हमार बियाहल हो ताहि रे रूप ॥ १ ॥
ज्ञान कै गछवा† लगावल हो ताहि रे तर ।
मनमत कइल बधावर हो ताहि रे तर ॥ २ ॥
ऊँच अटारी पिया छावल हो ताहि रे पर ।
गुरु गम गाँठि दियावल हो ताहि रे पर ॥ ३ ॥
अगम धुनि बजन बजावल हो ताहि रे पर ।
मोतियन चौक पुरावल हो ताहि रे पर ॥ ४ ॥
दुलहिन दुलहा मन भावल हो ताहि रे मन ।
भुज भर कंठ लगावल हो ताहि रे मन ॥ ५ ॥

*पवित्र । † पेड़ ।

गुलाल प्रभू बर पावल हो ताहि रे पद ।
मनुवा प्रीत लगावल हो ताहि रे पद ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सुन्न सिखर चढ़ि जाइब हो, बाजत अनहद तार ॥टेक॥
उमँगि उमँगि सखि गावहिँ हो, मानिक देव लिलार ॥१॥
उलटी नदिया सोहावन हो, सत्त सुखमना बास ॥२॥
दृढ़ कै सुरति लगावल हो, सतगुरु संग निवास ॥३॥
जीव कै ऊब* निवारहु हो, पाँच पचीस मन मार ॥४॥
यहि विधि ध्यान लगावहु हो, करम मेटो संसार ॥५॥
गावल निर्गुन मनोरवा हो, जन गुलाल मिलो यार ॥६॥

॥ शब्द २६ ॥

मन मोरा गरज समानो मन मोरा ॥टेक॥
अष्ट जाम को खेल बनो है थकित भयो तन जोरा ॥१॥
पाँच सखिन मिलि मंगल गावहिं सहजहि उठै झकोरा ॥२॥
सिव सक्ती मिलि स्याम घटा पर नीझर झरत हिलोरा ॥३॥
धधकि धधकि सुंदर बर राजिल सतगुरु कियो गठजोरा ॥४॥
कह गुलाल पिय संग सोहागिनि अचल है सेँदुर मोरा ॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

छिन छिन प्रीति लगी मोहिँ प्रभु की ॥१॥
आठ पहर चित लगै रहतु है, मिटलि सकल डर उर की ।२॥
उमँगि उमँगि उज्जल जल झलकत, अनुभै मानिक बर की॥३
कह गुलाल घर अनँद मगन भो, चढ़ि सुमेर भव तर की ॥४।

---

* चिन्ता, घबराहट ।

॥ शब्द २८ ॥

प्रभु जी सोँ लागल प्रीति नई ।
निरखत रूपहिं भई बावरी तन सुधि सबै गई ॥१॥
अष्ट जाम चित लगै रहतु है, प्रभुजी के परलुँ पई* ।
सहज सरूप सब्द को सेहरा, सो मोहिं आन भई ॥२॥
गगन मँडल में बानि उठतु है, हर दम नाम नई ।
अबकी बेर कृपाल दया निधि, लोचन लाल दई ॥३॥
सोई सहीद मगन मन मौला, दोजख भिस्त गई ।
कह गुलाल घर अनँद मगन भो, प्रभु सिर तिलक दई॥४

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु कै परताप तो अनँद बधावरा ।
आजु मोरे गुरु अतिथि† करब हम भाँवरा ॥१॥
पाँच पचीसो सखियाँ चैाक पुरावहीं ।
गुरु जी कै चरनोदक लै छिरकावहीं ॥२॥
तीन जना मिलि इक मत भाँवर नावहीं ।
चन्द्र बदन सिर सँदुर माँग बनावहीं ॥३॥
जुग जुग अचल सोहाग तो प्रीति लगावहीं ।
दुलहा बनल निरबान तो कंठ लगावहीं ॥४॥
मोतियन माड़ो छइया बजन बजाइया ।
दास गुलाल सोहागिनि कंत रिझाइया ॥५॥

॥ शब्द ३० ॥

अजर बियाह कैसे बनि आई ।
गुरु के बचन सुनि लगन लगाई ॥ १ ॥

* चरनोँ पड़ी । †पाहुन ।

सुनत सुनत जिव बर मन भाई ।
बाम्हन मत बुधि नहिं ठहराई ॥ २ ॥
बर मोर तिरबिधि जोग न आई ।
माय मोरि अरुझैलै बाप अरु भाई ॥ ३ ॥
ऐसो नहिँ कोइ ब्याह कराई ।
डोरिया लगलि अब कस छुटकाई ॥ ४ ॥
सनमुख ह्वै प्रभु लगन लगाई ।
अष्ट जाम धुनि नौबति बजाई ॥ ५ ॥
तिरबेनी तीरहिँ कलस धराई ।
बिपरीती* माँडौ रच्यो बनाई ॥ ६ ॥
जरि गैल माँडो उदित सोहाई ।
तबै प्रभु सेँदुर अचल धराई ॥ ७ ॥
कह गुलाल हम पतिबर पाई ।
जावै नइहर हमरि बलाई ॥ ८ ॥

बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

दीनानाथ अनाथ यह, कछु पार न पावै ।
बरनौँ कवनी जुक्ति से, कछु उक्ति न आवै ॥ १ ॥
यह मन चंचल चोर है, निस बासर धावै ।
काम क्रोध मेँ मिलि रह्यो, ईहै मन भावै ॥ २ ॥
करुनामय किरपा करहु, चरनन चित लावै ।
सतसंगति सुख पाय कै, निसु बासर गावै ॥ ३ ॥

*उलटा

अब कि बार यह अंध पर, कछु दाया कीजै ।
जन गुलाल बिनती करै, अपनो कर लीजै ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभुजी हूजिये जन को दयाल ।
जन अपराधी कोटि औगुनी, तौ करिये प्रतिपाल ॥१॥
सुरग पताल मृतलोक जहाँ लग, यह सब तुम्हरो ख्याल ।
जहँ पगु देउँ जहाँ लगि निरखौं, तौ बड़ ही जंजाल ॥२॥
हर दम नाम तुम्हारो लीये, फिरौं तौ तुम्हरी नाल* ।
घाटि बाढ़ि एकौ न चलायो, लह्यौं न एकौ हाल ॥३॥
बकसो सील छिमा से दयानिधि, यह बर देहु गुलाल ।
करिये कृपा बिरद निज जन पर, चलिये अपनी चाल ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

तुम्हरी मोरे साहब क्या लाऊँ सेवा ।
अस्थिर काहु न देखऊँ सब फिरत बहेवा ॥१॥
सुर नर मुनि दुखिया देखौं सुखिया नहिं केवा।
डंक मारि जम लुटत है लुटि करत कलेवा ॥२॥
आपने अपने ख्याल में सुखिया सब कोई ।
मूल मंत्र नहिं जानहीं दुखिया भै रोई ॥३॥
अबकी बार प्रभु बीनती सुनिये दे काना ।
जन गुलाल बड़ दूखिया दीजै भक्ती दाना ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रभुजी बरषा प्रेम निहारो ।
ऊठत बैठत छिन नहिं बीतत याही रीत तुम्हारो ॥१॥

*साथ ।

समय होय भा* असमय होवै भरत न लागत बारो ।
जैसे प्रीति किसान खेत सोँ तैसा है जन प्यारो ॥२॥
भक्त-बछल है बान† तिहारो गुन औगुन न बिचारो ।
जहँ जहँ जावँ नाम गुन गावत जम को सोच निवारो ॥३॥
सोवत जागत सरन धरम यह पुलकित मनहिं बिचारो ।
कह गुलाल तुम ऐसा साहब देखत न्यारो न्यारो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रभु को तन मन धन सब दीजै ।
रैन दिवस चित अनत न जावै नाम पदारथ पीजै ॥१॥
जब तेँ प्रीत लगी चरनन सोँ जग संगत नहिं कीजै ।
दीन-दयाल कृपाल दया-निधि जो आपन करि लीजै ॥२॥
ढूँढत फिरत जहाँ तहँ जग में काहू बोध न कीजै ।
प्रभु कै कृपा औ संत बचन ले हिरदे में लिख लीजै ॥३॥
कह बरनौं बरनत नहिं आवै दिन दिन चरची न पसीजै ।
कह गुलाल याही बर माँगौं संत चरन मोहिं दीजै ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु तुम ऐसे दीन-दयाल ।
हम अस अधम कुटिल चंडाल ॥१॥
केतिक अधम कहाँ लगि बरनौं करम धरम की जाल ।
मोर मोर करत दिन बीतल मारि लेत जमकाल ॥२॥
अधम होत जो कारज सीझत पगल माय के ख्याल‡ ।
सुमति कुमति निसु बासर भोजन सोवत परो बेहाल ॥३॥
तुम अस ठाकुर परगट देखत करत सबै प्रतिपाल ।
मेरु धरनि जल थल में साहब का जानै वह हाल ॥४॥

*या । †बाना, सुभाव । ‡माया के ख्याल में पगा हुआ ।

सुमति सरीरहिं आवत नाहीं डालत गर में माल ।
हिंदू तुरुक मज़ब* में लागो सुद्धि बिसरि गइ हाल ॥ ५ ॥
हम अबला बल कछु हम नाहीं प्रभु तुम ऐसो लाल ।
अब की बार यही बर पावौं लखिये अधम गुलाल ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

प्रभु तेरी माया अगम अपार ।
तुम जानहु सब सिरजनहार ॥ १ ॥
सिव ब्रह्मा सब देव मुनि मोहे कीन्हो न किनहूँ बिचार ।
धोखा धोख सभन में उपुजो काहु न आपु सँभार ॥ २ ॥
छिन में पालो छिन में पोखो छिन में करत सँघार ।
तुम्हरे मोह न तुम्हरे माया मूरुख कहत हमार ॥ ३ ॥
जो जन चरन सरन लपटानो सबहिं लड़ायो† भार ।
मन क्रम बचन अवर नहिं जाने ता को लीन्ह उबार ॥४॥
धन्न धन्न तुम धन्न प्रभू जी साध सदा रखवार ।
कह गुलाल राम को सेवक अब को सकत निहार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

गति पूरन प्रभुराया हो ।
कह बरनौं बरनी नहिं आवै तुम अनंत जग गाया हो ॥ १ ॥
अधम-उधारन सठ-निस्तारन खल-पावन पद पाया हो ।
जा को नाम रटत सनकादिक भक्ति किसोर बढ़ाया हो ॥२॥
गोरखदत्त बसिष्ट ब्यास मुनि सुकदेव आदि जनाया हो ।
अनेक साध संतोष सत्त लिये मन को ध्यान लगाया हो ॥३॥

*मज़हब । †गिराया ।

सिव ब्रह्मा जा को थाह न पावहिं नर बपुरा कत पाया हो।
जा पर कृपा कियो सतगुरु ने सहजहिँ हरिहिँ मिलाया हो।४।
हौं अनाथ नाथ तुम चरनन का को विनय सुनाया हो।
कह गुलाल साहब आपन कियो अनहद ढोल बजाया हो।५।

भेद का अंग

॥ शब्द १ ॥

जो पै साँचि लगन हिय आवै।
काटै सकल करम के फंदा, आनँदपुर घर छावै ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन बस करिकै, सुखमन सेज बिछावै।
सुरत सोहागिन उड़ै गगन-मुख, तब चंदा दरसावै ॥२॥
मूल चक्र गहि कै दृढ़ बाँधै, बंक नाल चढ़ि धावै।
अबिगत सौं यह खेल बनो है, आवागवन नसावै ॥३॥
रीझि रीझि दसहूं दिसि पूजै, पारब्रह्म में समावै।
जन गुलाल भइ प्यारी खसम की, रहसि रहसि गुन गावै।४

॥ शब्द २ ॥

उलटि देखो, घट में जोति पसार।
बिनु बाजे तहँ धुनि सब होवै, बिगसि कमल कचनार॥१॥
पैठि पताल सूर ससि बाँधो, साधो त्रिकुटी द्वार।
गंग जमुन के वार पार बिच, भरतु है अमिय करार ॥२॥
इँगला पिँगला सुखमन सोधो, बहत सिखर-मुख धार।
सुरति निरति ले बैठु गगन पर, सहज उठै झनकार ॥३॥
सोहं डोरि मूल गहि बाँधो, मानिक बरत लिलार।
कह गुलाल सतगुरु बर पायो, भरो है मुक्ति भँडार ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

चित धरि, करहु आपु सँभार ।
सुरति डोर लगाउ गगनहिं, उठत है झनकार ॥१॥
चंद सूरज रैन दीवस, नाहिं धर्म अचार ।
मरन जीवन संग साथी, ऐसोई ब्योहार ॥ २ ॥
ह्वाँ कौन देखै कौन सूनै, गुन न वार न पार ।
अगम घर पर जाय बैठो, यह घर नाहिं पगार* ॥३॥
प्रेम आगे नेम कैसो, सब भयो जरि छार ।
कह गुलाल जो नाम मिलिया, अच्छर नहिं बिस्तार ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

मनुआ अगम अमर घर पायो ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है, बिनु कर डंक बजायो ॥१॥
बिनु पग नाच नचावन लागे, बिनु रसना गुन गायो ।
गावनहार के काया न माया, अनुभौ रंग बनायो ॥२॥
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, त्रिकुटी जा ठहरायो ।
लवकै बिजुली उड़ै गगन में, मुकुता तहँ झरि लायो ॥३॥
भयो अघोर निसु बासर नाहीं, सुन्न भवन दर† पायो ।
जन गुलाल पिय मिलो है सुहागिन, आनँद जोति जगायो ।४

॥ शब्द ५ ॥

गगना गरजि गरजि मन भावन ।
चारि सखी चहुँ दिस ह्वै गरजत, पचएँ बरसत सावन ॥१॥

*पाड़ी का झोपड़ा जो चंद रोज के लिये खेत में बना लेते हैं । †द्वार ।

छिमा सील सँतोष सागर भरो, धनि सतगुरु जिन अचल बनावन ।
कह गुलाल बरषा भयो पूरन, मारो घर मन रावन ॥ २ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हे मोरीसखियाँ लागलि गुरु कै साँट* भइलि मनभावन॥टेक
पाँच सखी मिलि मंगल गावहिं, मोतियन चौक पुराय ।
तारी दै दै भाँवरि फेरहिं, दुलहा बरनि न जाय ॥ १ ॥
चौके चार चतुर जन बैठे, आनँद बेद भनाय† ।
चंद्र लगन सिर सेँदुर बाँधल, अमर सोहाग बनाय ॥२॥
नौबति धुनि चहुं ओर दसौ दिसि, माँड़ो‡उदित सोहाय ।
रोम रोम मनसा भै पूरन, दुलहिन पिया मन भाय ॥३॥
माँड़ो जारि बरातिन मारल, खाइल गावँ कै लोग ।
कह गुलाल हम सबहिं सँघारल, पुरन भइल सब जोग ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अचरज हम इक देखल, पंडित करहु बिचार ।
कहा कथब औ कहा सुनब, कहा करब व्यौहार ॥ १ ॥
जगमग अचरज देखल, पंडित भइल बिचार ।
ज्ञान कथब औ धुनि सुनब, नाम करब व्यौहार ॥ २ ॥
कहवाँ से जिव आइल, कहवाँ जिव कर बास ।
कहवाँ जीव समाइल, कहवाँ सक्ति निवास ॥ ३ ॥
ब्रह्म से जिव आइल, नाभि कँवल मेँ बास ।
सुन्नहिं सक्ति समाइल, सिव घर सक्ति निवास ॥४॥

* लपेट, लगन । † पढ़ा जाता है । ‡ मँड़वा ।

कहवाँ सिव कर आसन, कहवाँ सिव कर ध्यान ।
कहवाँ सिव कर मंडप, कहवाँ सिव अस्थान ॥ ५ ॥
अगमे सिव कर आसन, सक्तिहिं सिव कर ध्यान ।
सुन्न भवन में मंडप, निगमे सिव अस्थान ॥ ६ ॥
कहवाँ से मन आइल, कहवाँ परल भुलाय ।
केहि ले मन घर गवनल, कैसे मन ठहराय ॥ ७ ॥
मन हीं से मन आइल, मोहहिं परल भुलाय ।
सक्तिहिं ले मन गवनल, सहजहिं घर ठहराय ॥ ८ ॥
कौन सब्द गुन गावल, कैसे बिंदु मिलाप ।
कौन द्वार ह्वै जाइब, कौन करब तहँ जाप ॥ ९ ॥
अगम सब्द गुन गावल, नादहिं बिंदु मिलाप ।
पछिम द्वार ह्वै जाइब, आपु करब तहँ जाप ॥ १० ॥
कह गुलाल यह अनुभव, सत्त कइल बीचार ।
जो यहि पदहिं बिचारल, सोई गुरू हमार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

खान पायो अधर कटोरा, उलटी चाल चलत मन मोरा ॥टेक॥
संग जगाती* पंथ बिकट है, बरबस लूटत डेरा ।
जत सब आवै तत सब खावै, ताकै† साँझ सबेरा ॥ १ ॥
काजी मुलना पीर औलिया, पंडित करत निहोरा ।
सुर नर नाग देव गंधर्बा, काहु न कीन्हो जोरा ॥ २ ॥
प्रेम प्रकास भयो जब मेरे, डंक दियो गढ़ तोरा‡ ।
कह गुलाल पिया सँग बनि बाजी, का करिहै जम जालिम मोरा ॥ ३ ॥

*कर लेने वाले । †देखता रहता है । ‡डंका बजा कर क़िले को फ़तह कर लिया ।

॥ शब्द ९ ॥

मन सहज सुन्न चढ़ि करु निवास ।
रूप रेख तहँ जाति पाँति नहिँ, अछय अमूरति करत बास१
बिनु कर ताल पखाउज बाजै, बिनु रसना गुन गाय ।
बाजे बिना सब्द धुनि होवै, बिनु पग नाच नचाय ॥२॥
चाँद सूर निसि बासर नाहीँ, तीन देव नहिं बेद चारि ।
कह गुलाल तहँ मास्यो बाजी, घर आयो मन सहज मारि ३

॥ शब्द १० ॥

जब हम प्रभु पायो बड़ भागी ।
तन मन धन न्योछावरि वास्यो, हरि चरनन चित लागी॥१॥
काम क्रोध ममता मद त्याग्यो, अभय अगम पद जागी ।
अर्ध उर्ध बिच भाठी साजी, पियत करारी पागी ॥२॥
तिरबेनी में लगी खुमारी, टरत नहीँ मन टारी ।
गंग जमुन के मध्य निरंतर, तहवाँ देव मुरारी ॥३॥
मुक्ता मनि मानिक तहँ बरसत, निझर झरी तहँ लागी ।
सेत सिँहासन बैठक पायो, जन गुलाल बैरागी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

जो पै कोउ उलटि निहारे आप ।
निरखि निरखि अंतर लै लावे, बिन माला के जाप॥१॥
सत सरूप सतगुरू बचन लिये, करहु जो अगम पयान ।
बिगसित कमल उगो है सहसमुख, भँवरा रहत लोभान२
तिरबेनी में तिलक बिराजै, बंक नाल चढ़ि जात ।
दसौ दिसा में जोति जगमगै, वा के तात न मात ॥३॥

अछय अभय अनुभव अनमूरति, संत सजीवन नाथ ।
जन गुलाल तहँ फिरहिँ करारी*, कोई संग न साथ ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

भाई मोहिं यही अचंभो भारी ।
तातेँ कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
मनि परकासित कहिये भुवंगा, सो है कुल अधिकारी ।
को पतिब्रता को अलवंता†, को ब्रिभिचारी बारी ॥२॥
कवने नीर कवन जल कहिये, को अमृत को खारी ।
को है कूप गंगाजल को है, को है सलिल डबारी‡ ॥३॥
को है कीट पतंग कौन है, को है नृपति भिखारी ।
को है चिउँटी हस्ति कवन है, को जन्मै को मारी ॥४॥
कह गुलाल यह बूझि थको जिव, निरवत को निरवारी ।
सतगुरु कृपा संत सरनागति, भवसागर तेँ उबारी ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

देखो संतो सुरति चढ़ी असमान, दूजा और न आन ॥टेक॥
जगमग जोति बरत अति निर्मल, देखि दरस कुरबान॥१॥
निरखि रूप मन सहज समानो, जम कर मरदल मान॥२॥
जन गुलाल पिय प्रेम लगन लगो, दियो सीस को दान॥३॥

॥ शब्द १४ ॥

प्रान पाहुन मोर ए री मना ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीन सँग लीये, पवन चढ़ो है घोरा ॥१॥
तत्त सिंहासन बैठक दीन्हो, जगत जोत चहुं ओरा ॥२॥

*अकेला । †जिस स्त्री को हाल में लड़का पैदा हुआ है । ‡डाबर या गड्ढे का पानी ।

पाँच सखी मिलि जेवन* बनावहिं, काहु न लगत निहोरा ॥३॥
पतरी† प्रेम परत है परस्पर, सुखमन भरत कटोरा ॥४॥
ज्ञान गुरू के विंजन परोसहिं, साँझ सकार सबेरा ॥५॥
सबहिं खियावल अपनहु खायल, चौथे पद पर डेरा ॥६॥
कह गुलाल मेरो पाहुन आयो, कबहुं न करिहौं फेरा ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

एकै नाम अधारा, मेरे एकै नाम अधारा हो ।
परखि परखि निरखत निस बासर, जग तें भयो निनारा हो ॥ १ ॥
अष्ट कमल में जीव बसतु है, सतगुरु सब्द बिचारा हो ।
ले कै पवन हंस जब गवन्यो, त्रिकुटी भौ उँजियारा हो ॥२॥
पैठि पताल मूल बंद बाँधो, सुखमन सेज सँवारा हो ।
निरझर झरत अमी तहँ बरखत, मनुवाँ तहाँ हमारा हो ॥३॥
गगन मँडल में नौबति बाजै, आठ पहर इकतारा हो ।
मास्यो ममता चित्त समानो, चौमुख दीपक बारा हो ॥४॥
छूटी देह नेह रहि इक सोँ, आदौ ब्रह्म बिचारा हो ।
कह गुलाल साहब हम पायो, जम का करि है हमारा हो ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

नैहर गरब गुमनिया हो, फरलि करम कै डार ।
ससुरे सँगति नहिं जाइब हो, करबहुं कौन बिचार ॥१॥
सासु ननद कै झगरा हो, सवति जो हमरी अपारि ।
सइयाँ हमरे कुबुजवा‡ हो, हम धन अल्प कुमारि ॥२॥

*भोजन । †पत्तल । ‡कुबड़ा यानी बूढ़ा ।

गाँव के लोगवा निरखे* हो, छिन छिन देँह निहार।
पार परोसिन डाहै हो, निस दिन करत कुफार† ॥३॥
घर कै मर्म नहिं जान्यो हो, महा कठिन दुख भार।
अँचरा पसार धन‡ बिनवै हो, कब दहुँ मरै भतार ॥४॥
भोर भइल मन मान्यो हो, छुटल सकल संसार।
जन गुलाल सत बोलहिं हो, मिललहिं कंत हमार ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

मन मगन भयो जब प्रभु पायो।
ज्ञान गुफा में निरंतर देख्यो, अनुभै गति तेहि आयो ॥१॥
छोड़ि करम ममता मद त्याग्यो, संसय सोक न आयो।
सहज आसन लै उड़्यो गगन में, मुक्ता भरि झरि लायो ॥२॥
फूल्यो काया उगे मनि मानिक, बिमल बिमल गुन गायो।
निसु बासर केवल परगासा, जम दुत निकट न आयो ॥३॥
प्रेम प्रीति हिरदे में राखे, अनतहिँ चित्त न जायो।
कह गुलाल अवधूत सोई है, भँवर गुफा घर छायो। ४

॥ शब्द १८ ॥

तेलिया रे तेल पेर बनाई।
कोल्हुवा हाँकै घनिया लगाई ॥ १ ॥
गाँव के लोगवा तेल को जाई,
पनियाँ मिलाय देत डहँकाई§ ॥२॥
यह तेलिया अब भयल जँजाल,
का मैँ कहौँ ठाकुर‖ मतवाल ॥ ३ ॥

---

*झुरते हैं। †खुराफ़ात, झगड़ा टंटा। ‡स्त्री। §ठग लेना। ‖ज़मींदार।

कह गुलाल यह निगुन अपार,
तेलिया बाँधल बरद की सार* ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

मैं तो राम चकरियाँ† मन लाऔंगा ।
तातें सहज सरूप समाऔंगा ॥ टेक ॥
पाँचहिं मारि पचीसहिं मारौं गढ़ पर दीप बराऔंगा॥१॥
उनमुनि धुनि में सुरति समाऔं उलटी गंग बहाऔंगा॥२॥
सुखमन के घर तारी लाऔं अमी अलूफा पाऔंगा॥३॥
आठो पहर करौं असवारी ज्ञान के खड्ग लगाऔंगा॥४॥
तरकस तेज पवन बँद लाऔं पकरि मवास ले आऔंगा॥५॥
साहब रीझै नौबति बकसे निसु दिन डंक बजाऔंगा॥६॥
जन गुलाल भयो दफ्तर दाखिल बहुरि न भवजल आऔंगा७

॥ शब्द २० ॥

बैरागी मन कहवाँ घर तुम किया, तातें सहज सरूपी भेप लिया ॥टेक॥
कवनि जुगति तुम आसन माँड़ो, कवनी देखो हीया ॥१॥
गंग जमुन तट आसन माँड़ो, तिरबेनी तट बारो दीया ॥२॥
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, छोड़ सकल जग दीया॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

ससुरवाँ पंथ कैसे जाब हो, नैहर अति बड़ कूर ॥टेक॥
काम न जानौं गुन नहिं आवे करब कवन हम ज्ञान ।
संगहिं सवति सोहागिन हमरी कैसे रहहि अब मान ॥१॥

---

*गऊ-शाला । †नौकरी ।

सासु ननद घर दारुनि भइलीँ पियवा नाहिँ हमार।
गाँव के लोगवा लइया* लावे भसुरे† मिलली भतार॥२॥
का से कहोँ दुख कौन सुने अब निसु दिन डहत अँगार।
धन जोबन दूनोँ हम खोवल पिया नहिँ अयलैँ हमार ॥३॥
नेम धरम कइकै मन लावल करम बुड़ल संसार।
कहैँ गुलाल अगमपुर बासी नैहर छुटल हमार ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

कहाँ जइये घर मिलल भोग, भ्रमत रहत सब फिरत लोग॥१
सहज सरोवर फुलल फूल, बिनसत‡ कमल भँवर रस भूल२
पियत पियत जब भयो है सूर, अनुभौ बाजा बजत तूर॥३
पायो घर जग छुटल फेर, नाम खजाना मिलल ढेर ॥४॥
ऋद्धि सिद्धि मेरे कवन काज, लोक बेद की छुटलि लाज॥५
थकित भये जब पाँच पचीस, तीनोँ देव मिले जगदीस॥६
कह गुलाल मन मिलल भाव,ज्ञान लहरि गै सिंधु समाय ॥७

॥ शब्द २३ ॥

पारस नारायन को मोहिँ लागे।
लोहे तैँ कनक कनक तैँ पारस, अनुभौ गति अनुरागे॥१
काठ तैँ चंदन चंदन तैँ मलयज§, मोल अमोलन लागे।
भृंग तैँ कीट कीट तैँ भृंग भयो, सत्य लगे जिव जागे॥२
काग तैँ हंस हंस परहंसन‖, जोगी जुगत समाधे।
जीतो जोग भोग सब त्यागो, जेइ नर मन को बाँधे ॥३
चढ़ि पहार निर्धार जोति मिलो, उलटि जु गयो सुभागे।
एकै ब्रह्म एक भयो साहब, कह गुलाल मन पागे ॥४॥

*चुग़ली। †जेठ। ‡सूख जाना। §ख़ास मलयागिर का ख़ालिस चन्दन। ‖परमहंस।

॥ शब्द २४ ॥

मनुवाँ संग लगाई झूँठ मुँठ खेलहीं ॥ टेक ॥

सासु ननद धैकै अब लिहलिन्हि, दमदहि*बँधलिन्हि जाई।
गोद कै बलकवा छोर अब लिहलिन्हि,बुढ़ियाचललपराई†॥

घर लुटवौलिन्हि सहर जरौलिन्हि,केहि गोहरावौं जाई ।
सवति भौजिया और जेठनिया, ठाढ़ी रहलि तँवाई‡॥२॥

कुल कुटुम्ब सबही पिस मरलिन्हि, का अब करौं उपाई ।
ठाढ़ी भइल धन सिर कर धूनै, का हम लइकै जाई॥३॥

छोड़हुं देस अनँद तब होइहै, सतगुरु लिह्यो बचाई ।
जन गुलाल काया गढ़ जीत्यो,दियो निसान बजाई॥४॥

भेष की रहनी

॥ चौपाई ॥

तूमा तीन भारती§ बनायो ।
चौथे नीर भरि हाथ लगायो ॥ १ ॥

सुखमन सीतल पीवत नीर ।
निकसि दसौ दिसि अनँद फकीर ॥ २ ॥

कुबरी‖ करम काट ले आई ।
ज्ञान खरादे रच्यो बनाई ॥ ३ ॥

सतगुरु के घर बैठक दीन ।
मनुवाँ तहाँ रहत लौलीन ॥ ४ ॥

*दामाद को । †भागना । ‡मुरझाई हुई । §भरत अर्थात मिश्रित धात का । ‖छड़ी ।

तिलक तत्त दियो लीलार ।
अगम भेख बन्यो टकसार ॥ ५ ॥
एकादस तिलक दियो जिन धीर ।
कहै गुलाल अलमस्त फकीर ॥ ६ ॥
असनवटी आसन तारी लावे ।
द्वादस बैठि गगन घर धावे ॥ ७ ॥
गगन जोति में रहे समाई ।
कह गुलाल आवे नहिं जाई ॥ ८ ॥
कोपिन* बाँधे मूल दुवार† ।
उलटे पवन उठे झनकार ॥ ९ ॥
अष्ट कँवल फूल्यो जब फूल ।
जन गुलाल हिँडोला झूल ॥ १० ॥
कंठी करम काटि जो डारे ।
अजपा जपे जोति तब बारे ॥ ११ ॥
सुमिरन करे बैस्नव तेई ।
कहैं गुलाल अतिथि है सेई ॥ १२ ॥
मुरछल मन फेरे चित लाई ।
अगम जोति दसहूँ दिसि छाई ॥ १३ ॥
सत्त सब्द ले मुरछल बाँधे ।
कहैं गुलाल फिरत सब धाँधे ॥ १४ ॥
पउवा‡ प्रेम पगर§ जो नावै ।
उनमुनि जाय गगन घर धावै ॥ १५ ॥

*लँगोटा । †गुदा चक्र । ‡ खड़ाँऊ । §पाँव ।

रिमझिमि बरसै मानिक मोती ।
कह गुलाल पउवा चढ़ सेती* ॥ १६ ॥
कमरबँद बाँधि अगम घर जोवै ।
उलटि सुखमना गतिहि बिलोवै ॥ १७ ॥
बजर† फाड़ बाँधे तत सार ।
कह गुलाल यह रहनि हमार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

माला जपौँ न मंतर पढ़ौँ, मन मानिक को प्रेम ।
कंथ गूदरि पहिरौँ नहीँ, कह गुलाल मेरे नेम ॥१९॥
गुलाल ताखो‡ तत दियो, प्रेम सेल्हि हिये नाय ।
सुमिरिनी मन महँ फिरयो, आठ पहर लै। लाय ॥२०॥
गूदर धागा नाम का, सूई पवन चलाय ।
मन मानिक मनि गन लग्यो, पहिर गुलाल बनाय २१
गुलाल माला नाम का, राखो गर में नाय ।
कोटि जतन छूटे नहीँ, रहो जोति लपटाय ॥२२॥

अरिल छंद

(१)

प्रान चढ़ो असमान सहज घर जाइया ।
सुन्न सहर झकझोर सुरति ठहराइया ॥
जोग जुगत सोँ नेह ब्रह्म में समाइया ।
कहै गुलाल अवधूत सत्य तब पाइया ॥

*सफ़ेद । †बज्र कपाट । ‡साधुवोँ की टोपी ।

(२)

सुन्न सरोवर घाट फूल इक पाइया ।
बिनु डाँड़ी का फूल केतिक मन भाइया ॥
अमी पियाला पिया भँवर रस पाइया ।
कहै गुलाल अतीथ राम गुन गाइया ॥

(३)

अष्ट कँवल जब फुल्यो उलटि के धाइया ।
बंक नाल भयो सूध अगम घर जाइया ॥
दसो दिसा बरि जोती तहाँ समाइया ।
कहे गुलाल सत सूर अनँद तब पाइया ॥

(४)

उनमुनि बंद लगाय सुरति ठहराइया ।
चाँद सूर दोउ बाँधि उर्धमुख धाइया ॥
सुखमन सीतल स्वाद चुभुकि रस पाइया ।
कह गुलाल हरि नाम रफत* तब पाइया ॥

(५)

अलह इमान लगाय सितून† बढ़ाइया ।
रफत सिफत की बातैं इलम‡ लखाइया ॥
रोज रहो मुस्ताक कबहुं नहिं सोइया ।
कहै गुलाल अवधूत यार तब पाइया ॥

*रब्त, मेल । †खंभा । ‡ज्ञान ।

(६)

परखि साहब सौँ रीति नाम लव लाइया।
सब घट पूरन सोई तहँा मन लाइया ॥
कोटिन चंद उगाय मोति झरि लाइया।
कहै गुलाल सोइ हंसा परसि अघाइया ॥

(७)

तिरगुन तेल बराइ कै जोति जगावई।
पँाच पचीस को लादि ब्रह्म घर छावई ॥
अनहद बजाइ अघोर अगम गुन गावई।
कहै गुलाल हरि नाम परम पद पावई ॥

(८)

अष्ट कँवल फूलाय पवन लै धावई।
सोरह कला सँपूर तहँा मन लावई ॥
घटत बढ़त नहिं जोति सीतल सत गावई।
कहै गुलाल सतलोक तबहिं नर पावई ॥

(९)

जोग जुगत को जानि कै जमहिँ नचावई।
सतगुरु के परताप गगन चढ़ि धावई ॥
जीव ब्रह्म सोँ नेह सो तबहिं समावई।
कहै गुलाल तब ज्ञान अचल पद पावई ॥

(१०)

सुंदर साहब जानि के प्रेम लगावई।
अजपा जपै सुजाप सुरति ठहरावई ॥

रबि ससि दूनोँ बाँधि निरंतर धावई ।
कहै गुलाल अतीथ तत्त घर छावई ॥

(११)

निर्मल रूप अपार सौँ सुरति लगाइया ।
बिनु पग चाले चाल अनँदपुर जाइया ॥
देत दमामा ढोल सो जमहिं नचाइया ।
कहै गुलाल सोइ सूर सहज घर पाइया ॥

(१२)

अकबति* अलह सौँ जानि सुबुक† सौँ बोलना ।
हर दम हक‡ ही लाइ रफत§ नहिं डोलना ॥
पंच फिरिस्ते|| पकरि नयन नहिं खोलना ।
कहै गुलाल सोइ साफ हिमत¶ नहिं डोलना ॥

(१३)

खुब** साहब सौँ प्रीति सुरति जो लावई ।
अलह इमान सोँ नूर कसब†† तब पावई ॥
इलम इमान लगाइ सुबुक† तब पावई ।
कहै गुलाल फकीर यार सोइ भावई ॥

(१४)

सब घट साहब बोल सत्त ठहरावई ।
निसु बासर मौजूद भिस्त‡‡ की चलावई ॥

*आक़िबत=परलोक । †कोमलता । ‡सत्य । §रब्त, मिलाप । ||दूत । ¶हिम्मत । **अच्छे । ††हुनर, गुन । ‡‡स्वर्ग ।

साफ साहब सौँ रफत पाक तब पावई।
कहै गुलाल फकीर खूब घर छावई॥

(१५)

ब्रह्म भयो जब पूर सूर सर* लावई।
बाजै अनहद घंट निसान समावई॥
भरो पदारथ नाम परखि अघ† जावई।
कहै गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पावई॥

(१६)

आपु करहु नर साफ साहब सत भावई।
निसु बासर करि प्रेम राम गुन गावई॥
जोग जुगत सौँ नेह सो परखि समावई।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई॥

(१७)

अर्ध उर्ध को खेल कोऊ नर पावई।
चाँद सूर को बाँधि गगन ले जावई॥
इँगल पिँगल दोउ बाँधि सहज तब आवई।
कह गुलाल हर रोज अनँद तब आवई॥

(१८)

रहित भयो घर नारी तत मन थीरा।
ब्रह्म भयो तब जीव गयो तब पीरा॥
निसु दिनि लायो ध्यान झरत मनि हीरा।
कहै गुलाल सोई सत अनँद फकीरा॥

*तीर। †पाप, क्लेश।

(१९)

अजर अमर पुर देस संत रन साजिया ।
मन पवना होउ साज नौबति धुनि बाजिया ॥
द्वादस चढ़ि मैदान जुद्ध तब लाइया ।
कह गुलाल मन सूरत पर चढ़ि गाजिया ॥

(२०)

राम रहे घर माहिं ताहि नहिं मानई ।
पूजहि पत्थल भीति मया मन सानई ॥
झूठ रहत हरि हाल करम बहु ठानई ।
कहै गुलाल जड़ भूल आपु नहिं मानई ॥

(२१)

सुन्न सहर आजूब* सहज धुनि लागई ।
इँगल पिँगल को खेल अमी तब पागई ॥
पुलकि पुलकि करि प्रेम अनँद छबि छाजई ।
कह गुलाल कोइ संत ताहि पंथ लागई ।

(२२)

इसिक अली† सौँ साफ अदल सोइ पाइया ।
रोज रहै मुस्ताक सकूनत‡ आइया ॥
क्योँकर बूझै आपु सभै नर रोइया ।
कहै गुलाल फकीर सत्त जिन जोइया§ ॥

(२३)

तीरथ दाम को आस अंध नर धावई ।
राम न चीन्हल साँच सो जन्म गँवावई ॥

*अचरजी । †मालिक । ‡ठिकाना । §खोज लिया ।

तिरगुन गुन महँ डोलत सबै नचावई ।
कह गुलाल नर भरमि भरमि जहँ ड़ावई* ॥

(२४)

झिलिमिलि झलकत नूर नैन पर नूरा ।
हर दम होत अघोर बजत तहँ तूरा ॥
रवि ससि दूनौं संग रखत पूजत पूरा ।
कह गुलाल आनँद गति बोलत सूरा ॥

(२५)

निर्मल हरि को नाम ताहि नहिं मानहीं ।
भर्मत फिरैं सब ठावँ कपट मन ठानहीं ॥
सूझत नाहीं अंध ढूँढ़त जग सानहीं† ।
कह गुलाल नर मूढ़ साँच नहिं जानहीं ॥

(२६)

माया मोह के साथ सदा नर सोइया ।
आखिर खाक निदान सत्त नहिं जोइया ॥
बिना नाम नहिं मुक्ति अंध सब खोइया ।
कह गुलाल सत, लोग गाफिल सब रोइया ॥

(२७)

दुनिया बिच हैरान जात नर धावई ।
चीन्हत नाहीं नाम भरम मन लावई ॥
सब दोषन लिये संग सो करम सतावई ।
कह गुलाल अवधूत दगा‡ सब खावई ॥

*ठगाते हैं । †घमंड में । ‡धोका ।

(२८)

साहब दायम* प्रगट ताहि नहिं मानई ।
हर दम करहि कुकर्म भर्म मन ठानई ॥
झूठ करहि ब्योहार सत्त नहिं जानई ।
कह गुलाल नर मूढ़ हक्क नहिं मानई ॥

(२९)

याही कहन हमारि जो कोऊ मानई ।
तातें सदा हजूर सही† जो ठानई ॥
रहै सदा निरसंक काल नहिं जानई ।
कहै गुलाल फकीर माया नहिं मानई ॥

(३०)

गर्ब भुलो नर आय सुझन नहिं साँइया ।
बहुत करत संताप राम नहिं गाइया ॥
पूजहिं पत्थल पानि जन्म उन खोइया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सभै मिलि रोइया ॥

(३१)

सुंदर साहब मानि के नेह लगावई ।
अर्ध उर्ध को खेल उलटि के धावई ॥
तिरगुन तेल बराय सो जोति जगावई ।
कह गुलाल सत लोक तुरत नर पावई ॥

(३२)

भजन करो जिय जानि के प्रेम लगाइया ।
हर दम हरि सौं प्रीति सिदक तब पाइया ॥

*सदा । †सत्य ।

बहुतक लोग होवान सुकृत नहिं साँइया ।
कह गुलाल सठ लोग जन्म जहँड़ाइया ॥

(३३)

एक करो नर साँच ताहि गुन गाइया ।
आठ पहर लव लाइ अनत नहिं जाइया ॥
लोक बेद की फाँसी तबहिं कटाइया ।
कह गुलाल हरि हेत का तुम बौराइया ॥

(३४)

राम भजहु लव लाइ प्रेम पद पाइया ।
सफल मनोरथ होय सत्त गुन गाइया ॥
संत साध सौं नेह न काहु सताइया ।
कह गुलाल हरि नाम तबहिं नर पाइया ॥

(३५)

झूँठि लगन नर ख्याल सबै कोइ धाइया ।
हर दम माया सौं रीति सत्त नहिं आइया ॥
बहत फिरत हर रोज काल धरि खाइया ।
कह गुलाल नर अंध धोख लपटाइया ॥

(३६)

ऐसा बचन हमार सत्त जो मानिया ।
चेत करहु नर आपु बृथा सब जानिया ॥
लोभ लहरि संबूह* ताहि सँग सानिया ।
कह गुलाल नर अंध धुंध मन आनिया ॥

*झुंड ।

(३७)

रवि ससि दूनौं बाँधि के सुरति लगाइया ।
अजपा जपै सुजाप सोहं डोरि लाइया ॥
लगन लगो निरंकार सुरति सँग पाइया ।
कहै गुलाल अतीथ सन्त गुन गाइया ॥

(३८)

यह संसार सयान आपु नहिं जानई ।
तुरत होत बिज्ञान खबरि नहिं मानई ॥
लोभ भरो हर रोज राम नहिं जानई ।
कहै गुलाल जम हाथे सबै बिकानई ॥

(३९)

सीतल साहब नाम पियत नहिं कोई ।
निसु दिन माया सौं हेतु पलक महँ रोई ॥
दिन दिन गाफिल होइ काहु नहिं जोई ।
कह गुलाल हरि हेतु गाफिल नर सोई ॥

(४०)

सुखमन सुंदर राज करत नहिं प्रानी ।
भटकत फिरै संसार साँच नहिं आनी ॥
मरि मरि रह हर हाल झूँठ सँग सानी ।
कह गुलाल तत ज्ञान आपु पहिचानी ॥

(४१)

उदित भयो जब ज्ञान कर्म मन नासई ।
भरो पदारथ नाम अचल पद पावई ॥

दिन दिन पूरन सोइ संत महँ भावई ।
कह गुलाल हरि हेतु कोई नर पावई ॥

(४२)

दोजख दुनिया भोग सबै नर सोइया ।
पाँच पचीस के फेर फिरत मति खोइया ॥
भटकि मरत संसार राम नहिं जोइया ।
कहै गुलाल सत्त बिन सब नर रोइया ॥

(४३)

आसिक इस्क लगाय साहब सौं रीझई ।
हरदम रहि मुस्ताक प्रेम रस पीजई ॥
बिमल बिमल गुन गाय सहज रस भीजई ।
कह गुलाल सोइ यार सुरति सौं जीवई ॥

(४४)

जगर मगर* को खेल कोऊ नर पावई ।
लोक बेद को फेर जो सबै नचावई ॥
रूह जगै हर हाल तत्त सोइ पावई ।
कह गुलाल ब्रह्म ज्ञान कोऊ दरसावई ॥

(४५)

जालिम जबर संसार बचन नहिं मानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान आपु नहिं जानिया ॥
तिरगुन गुन को संगम ज्ञान नसानिया ।
कह गुलाल नर अंध नेकु नहिं मानिया ॥

*जगमग ।

(४६)

आपु न चीन्हहि आपु सबै जहँड़ाइया ।
काम क्रोध को संगम सबै भुलाइया ॥
रटत फिरै दिन रैन थीर नहिं आइया ।
कह गुलाल हरि हेतु काहे नहिं गाइया ॥

(४७)

खोलि देखु नर आँख अंध का सोइया ।
दिन दिन होतु है छीन अंत फिर रोइया ॥
इस्क करहु हरि नाम कर्म सब खोइया ।
कह गुलाल नर सत्त पाक तब होइया ॥

(४८)

मन पवना को संगम कोइ नर पाइया ।
अनहद बजै अपार तो अलख लखाइया ॥
अनुभव फरत है ज्ञान सुरति ठहराइया ।
कह गुलाल सोइ संत निसान बजाइया ॥

(४९)

अष्ट कँवल दल फूल भँवर रस पाइया ।
सुखमन झरत है अमी तो स्वाद से खाइया ॥
नूर तजल्ली* बीच सुरति ठहराइया ।
कह गुलाल मन पाक अगम घर छाइया ॥

*प्रकाश ।

(५०)

तिरबेनी का तीर नूर झरि लागई ।
इँगल पिँगल को खेल सुन्न चढ़ि गाजई ॥
हर दम मन रहो लीन सुरति रस पागई ।
कह गुलाल ब्रह्म हेतु सत्त तब जागई ॥

(५१)

जालिम मन को बाँधि के सहज नचावई।
पाँच पचीस को रफत* नूर कस पावई ॥
उलटि सुखमना देस अचल घर छावई ।
कह गुलाल हर रोज प्रान तब भावई ॥

॥ ५२ ॥

साँच करहु नर आपु अवर मति धाइया ।
सतगुरु बचन बिचारि ताहि ठहराइया ॥
गंग जमुन के बीच फूल इक पाइया ।
कह गुलाल सत साजि के उर्ध समाइया ॥

(५३)

आइ बनी मेरि बाजी राम सोँ लाइया ।
आठ पहर को खेल सो सुरति लगाइया ॥
मन पवना दोउ दाँव सहज तब लाइया ।
कह गुलाल सोइ संत राम गुन गाइया ॥

(५४)

अलह हमारी जाति साफियत† आवई ।
खैर खुदाय सोँ रफत* अमन‡ सोइ पावई ॥

*रब्त, मेल । † निर्मलता । ‡शांति ।

कहा भयो दर हाल* पाक न लखावई ।
कह गुलाल हर रोज साफियत आवई ॥

(५५)

किसिम† कर्म को धर्म सबै नर धावई ।
भटकि मुआ संसार कसब नहिं आवई ॥
जोग जुगत नहिं नेह गाफिल गँवावई ।
कह गुलाल हर रोज कहा जहँड़ावई ॥

(५६)

इसिक करहु नर ताहि जाहि मन लाइया ।
हर दम पाक प्रवीन सो ताहि समाइया ॥
बहुरि नहीँ अवतार न कर्म सताइया ।
कह गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पाइया ॥

(५७)

पूरन ब्रह्म निहारि के सुरति लगावई ।
अजपा जपै हर हाल जुगत मन लावई ॥
घटत बढ़त नहिं कबहिं परम पद पावई ।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई ॥

(५८)

इसिम‡ अलिफ§ लगाइ नूर ठहराइया ।
पाँच पचीस को बाँधि उलटि के धाइया ॥
हर दम प्रभु सोँ नेह कहूं नहिं जाइया ।
कह गुलाल अतीथ ज्ञान तिन पाइया ॥

*अभी । †तरह तरह के । ‡नाम । §सीधा ।

(५९)

ज्ञान करो मन बाँधि के लगन लगाइया ।
निरखि रहो तहँ नाम तत्त ठहराइया ॥
जुग जुग अचल अपार परम पद पाइया ।
कह गुलाल सम द्रष्टि तबहिं नर आइया ॥

(६०)

केवल प्रभु को जानि के इलिम लखाइया ।
पार होइ तब जीव काल नहिँ खाइया ॥
नेम करहु नर आप दोजख नहिँ धाइया ।
कह गुलाल मन पाक तबहिं नर पाइया ॥

(६१)

भ्रम भूलो नर ज्ञान राम नहिं जानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान साँच नहिं मानिया ॥
झूठ दसा ब्योहार कपट बहु ठानिया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सबै गति हानिया ॥

(६२)

अष्ट कँवल फूलाइ निरंतर धावई ।
सुखमन सेज बिछाइ के मन पवढ़ावई* ॥
जोग जुगत सोँ नेह अनँद तब आवई ।
कहै गुलाल फकीर नाम तब पावई ॥

(६३)

यह संसार अयान† आपु नहिँ जानई ।
तुरत होय बिज्ञान खबरि नहिँ आनई ॥

*सुलाना । †नादान ।

लोभ लहरि हर रोज नाम नहिं मानई ।
कह गुलाल जम हाथे सबै बिकानई ॥

बारह मासी हिँडोला

॥ चौपाई ॥

हिँडोला आसा प्रभु पद लाई । यहि जग निर्फल जाई ॥१॥

॥ दोहा ॥

कर्म धर्म बनो नाव जक्त चढ़ि धावई ।
अवघट घाट कुघाट ये थिर नहिँ आवई ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

मास असाढ़ अघोर उपजो जन्म सो बनि आइया ।
चित्त चंचल भयो दामिनि छिनक छिनक छिपाइया ॥३
तृस्ना तेज जो पवन बरषत जहाँ तहाँ झरि लाइया ।
कामादि मोर जो बोल पल पल तेज सो घहराइया॥४ ॥

॥ दोहा ॥

सहज सुरति जो होय ज्ञान सोइ पावई ।
छिन छिन जिव उनुराग सो प्रेम लगावई ॥५॥

॥ छंद ॥

मास सावन भयो चहुं दिसि नवो द्वारे धाइया ।
सो करो कृषि* प्रीति प्रभु सौँ जाय गुरु सरनाइया ॥६॥
यह मन बिचारो भर्म टारो दुंद सकल बहाइया ।
प्रेम पूरन ज्ञान उपज्यो सुरति निरति समाइया ॥७॥

---

* खेती ।

॥ दोहा ॥

भरि भरि मोह अपार, समूह जगावई ।
रैन दिवस घहराय, तो थिर नहिं आवई ॥ ८ ॥

॥ छंद ॥

भादोँ जो भर्म भयावनो यह कर्म फंद लगाइया ।
ऊँच नीचे जाय डूबत आपु कौन बचाइया ॥ ९ ॥
दुबिधा जो धोख समूह धारा करत कर्म लजाइया ।
आपु खबरै भूल सब दिन तातेँ भटका खाइया ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जग जंजाल भुलाय, भटक सब जावई ।
नहिं चीन्हत प्रभु नाम, देसांतर धावई ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

कुवार समय बितीत भो जब काल जाल लगाइया ।
यहि भाँति समय सिरान मूढ़हु कौन तुमहिं बचाइया ॥१२॥
कह गुलाल कृपाल प्रभु बिनु झूठि रैन गँवाइया ।
यहि भाँति चारो मास बीतो आपु आप भुलाइया ॥१३॥

हिँडोला

(१)

हिँडोला करु आनँद मंगलचार ॥ टेक ॥
प्रथम सुकिरिति* नाम धरि के प्रेम पद हिये लाय ।
सतगुरु सब्द जे पूर दीन्हौँ सोक सबै नसाय ॥ १ ॥

*सुकृति ।

पाँच तीन पचीस त्यागो चौथ पद पर जाय ।
तहँ उठत लहरि अनंत बानी सखी देत झुलाय ॥ २ ॥
चाँद सूरज खंभ गाड़ो सुरति डोरि लगाय ।
मूल चक्र बिचारि बाँधो सुन्न नग्र समाय ॥ ३ ॥
प्रेम पटरी बैठि के झूलो गगन मैं आय ।
हारि हारि मन हारि बैठो अवर कहिं नहिं जाय ॥४॥
तहँ ज्ञान ध्यान न नेम पूजा अगम घर ठहराय ।
तहँ उठत जोति जे प्रेम भरि भरि लपट चहुं दिसि धाय ॥५॥
काम क्रोध जे मोह त्यागो जीव रहो समाय ।
संत सभा में जाय बैठो बहुरि इतहिं न आय ॥ ६ ॥
दसौ दिसि में फूल फूलो जोति जगमग पाय ।
सत्त रूप सरूप सोभा मो पै बरनि न जाय ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति सौं रीति करिकै रहो चरन समाय ।
कह गुलाल जो सरन आयो छोड़ि सबै बलाय ॥ ८ ॥

(२)

हिंडोला झूलत गुरुमुख आज ॥ टेक ॥

चँद सूरज खंभ रोप्यो सुरति डोरि लगाय ।
मंद मंद जो पवढ़* गगनहिं रह्यो जाय समाय ॥ १ ॥
तहँ होत अनहद नाद धुनि सुनि सहज चित्त लगाय ।
बिगसि कँवल अनंत सोभा भँवर रहे लोभाय ॥ २ ॥
अरध ऊरध उलटि चाल्यो सुखमना ठहराय ।
गंग जमुना सरसुती मिलि पदुम दरसन पाय ॥ ३ ॥

*झूलना ।

सुन्न सिखर समाधि बैठ्यो जोग जुगत उपाय ।
डारि तन मन चढ़्यो सिर दै जोति लहरि नहाय ॥४॥
अति अथाह अपार देख्यो नैन नाहिं समाय ।
पाँचो पचीसो तीनि त्याग्यो बानि निर्गुन गाय ॥ ५ ॥
आदि अंत अरु मध्य त्याग्यो अगम गति जो आय ।
चौथे पद पर बैठ जोगी मौज ढोल बजाय ॥ ६ ॥
जग्यो प्रेम जो नेम चरनन साध संगति पाय ।
त्यागि कर्म संताप तन को पाप दियो बहाय ॥७॥
मारि ममता मन बिचार्यो हंस रूप कहाय ।
कह गुलाल फकीर पूरा जो यह रहनि मैं आय ॥८॥

(३)

सब्द कै परल हिँडोलवा हो भूलब ताहि अधार ।
झुलत झुलत सुख उपजै हो उठै सहज झनकार ॥१॥
हिँडोलवा गुरुमुख झूलब झुलत झुलत जाइ पार ।
गावहिँ पाँच सोहागिनि हो छूटल झुलब हमार ॥२॥
आनँद कै झुलब हिँडोलवा हो तिहुँ पुर मंगलचार ।
पिय के सँग हम झूलब हो निस्चै प्रिय करतार ॥ ३ ॥
निरखत निरख न आवै हो बरनत बरनि न जाय ।
जो यहि झुलहिँ हिँडोलवा हो चरनन चित लाय ॥४॥
कह गुलाल हम झूलब हो सतगुरु के परताप ।
चरन कमल मन रातल हो तहवाँ पुन्न न पाप ॥५॥

(४)

निर्गुन झुलब हिँडोलवा हो, सत्त सब्द लगि डोर ।
सिव सक्ती मिलि झूलहिं हो, झुलब झकोरि झकोरि ॥१॥

मूल में खँभवा गड़ावल हो, पौढ़्यो दस द्वार ।
मन मानिक बरै तहवाँ हो, भीतर बाहर उँजियार ॥२॥
सुखमन राग भरावहिं हो, सहज उठे झनकार ।
धुनि सुनि हंसा रातल हो, बिगसि कमल कचनार ॥३॥
मिटलि कामना मन कै हो, तब छूटल संसार ।
अचल अमर घर पावल हो, फिर नहिँ औतार ॥४॥
संतन मिलि तहँ झूलहिं हो, अपनी अपनी बार ।
कह गुलाल हम झूलब हो, क्या झूलहि संसार ॥ ५ ॥

(५)

सत्त सब्द इक पुरुष हो, सुरति निरति लगि डोरि ।
मन मौज करि बैसब* हो, झुलब बहोरि बहोरि ॥ १ ॥
गावहु सखिया सहेलरि हो, आनँद मँगलचार ।
चकवा सब्द सुनि ब्याकुल हो, झरत है अधर अधार॥२॥
छेक्यो नगर नौद्वरिया हो, पाँच पचीस घर मारि ।
तीन देव लै बाँधल हो, अब के करिहै गोहारि ॥ ३ ॥
जीति कायापुर जोगी हो, जम कर नाता तोरि ।
जन गुलाल सत बोलहि हो, घर आयल मन मोर ॥४॥

(६)

हिँडोला अगम झूल झुलाय, झुलत अगमहिं पाय॥टेक॥
सुन्न सहर में फूल फूल्यो, अनँद मंगल गाय ।
चित्त चंचल पगो चरमन, अनत कहिं नहिं जाय ॥ १ ॥
नाम लज्जत† पुलकि लेवे, सोक मोह नसाय ।
झुलत झूलत मन बिरागी, ज्ञान घूँघट नाय‡ ॥ २ ॥

*बैठेंगे । †स्वाद । ‡डालना ।

झुलो जो सहजहि हिँडोलना, बिनु झुले झूल झुलाय।
जगर मगर हिँडोलना, झन झनक झनकत जाय ॥ ३ ॥
चरन सरन बिलोकि झूले, प्रीति सौं लपटाय।
अब कि बेर बिचारि झूले, मूल मँत्र जो पाय ॥ ४ ॥
अचल अगम हिँडोलना, झूलो जो तत्त लगाय।
सतगुरु सब्द अपार दीन्हो, ब्रह्म भेद लखाय ॥ ५ ॥
झुलत झूलत प्रान पति भो, मौज झूल झुलाय।
झुलै कोई संत पूरा, आपु खेल बनाय ॥ ६ ॥
अनंत कला हिँडोलना, अब थके झूलि न जाय।
आवा गवन न होय कबहीं, तहाँ जाइ समाय ॥ ७ ॥
कह गुलाल हिँडोलना, झूलो जो रूप बनाय।
नाम रँग जो रंग लागो, डंक* देत बजाय ॥ ८ ॥

(१)

हिँडोला झूलहु रामे राम ॥ टेक ॥

ध्यान धरु गुरु चरन गहिके, नाम लज्जत आय।
काम क्रोध को पकरि बाँधो, त्रिबिधि ताप बहाय ॥१॥
झूलै जो यह ज्ञान हिँडोलना, सत्त सब्द समाय।
अगम नीगम झूलहीं मिलि, अनहद डंक बजाय ॥ २ ॥
जोति परचे† बरै तहवाँ, सहज खेल बनाय।
सिव सक्ती सौं नेह लागो, सुख हिँडोलना पाय ॥ ३ ॥
अचल अस्थिर भयो जुग जुग, चित कहीं नहिं जाय।
झूलै कलोल हिँडोलना, सतसंग संग लगाय ॥ ४ ॥

*डंका। †प्रचंड।

आवा गवन न होय कबहीं, अचल घर पर जाय ।
झूलै जो सुखद हिंडोलना, मनसूब सूबा पाय ॥ ५ ॥
नाम पटरी बैठि कै, पोढ़ो अगम में जाय ।
सुखमन सुक्ख हिंडोलना, झुलत पार झुलाय ॥ ६ ॥
हद्द छोड़ बेहद्द बैठो, ब्रह्म ब्रह्महिं जाय ।
लोक लज्जा दूरि डारो, आपु आपु समाय ॥ ७ ॥
जाति पाँति न कर्म तहवाँ, एक ब्रह्महिं पाय ।
कह गुलाल हिंडोलना, झूलो जो मंगल गाय ॥ ८ ॥

(८)

हिंडोलना कर्म झुलावनहार ॥ टेक ॥
पाँच तीन पचीस धावहिं, नेकु नहिं ठहराय ।
पाप पुन्न को बीज लैके, बोवहिं खेत बनाय ॥ १ ॥
जन्म उत्तम पाय के रे, माया परल भुलाय ।
राम नाम न जानु भोंदू, चल्यो मूल गँवाय ॥ २ ॥
भूमि पानि अकास झूलहिं, झुलहिँ सूर फनिंद* ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस झूलहिं, झुलहिं मारुत† चंद ॥ ३ ॥
तैंतीस कोटि जो देव झूलहिं, मोह में लपटाय ।
बज्र बाँध को बाँध बाँध्यो, सबै बाँधि नचाय ॥ ४ ॥
जोगी जती जो सिद्ध झूलहिं, भेख रच्यो बनाय ।
झूलहिं जो नारद आदि मुनिवर, पार काहु न पाय ॥५॥

*शेषनाग । †पवन, हवा ।

सावित्रि लछमी गौरि झूलहिं, दसहु दिस में छाय ।
हंस विषमा गरुड़ झूलहिं थीर कबहुं न आय ॥ ६ ॥
अरध ऊरध मध्य धारा झुलो त्रिकुटी जाय ।
गगन मढ़े सुरति माँडो जोति देहु जगाय ॥ ७ ॥
झुला झूलि न जाय प्रभुजी अब न मोहिं झुलाय ।
जन गुलाल सो सरन आयो राखु चरन लगाय ॥ ८ ॥

(९)

तत्त हिँडोलवा सतगुरु नावल तहवाँ मनुवा
झुलत हमार ॥ टेक ॥
बिनु डोरी बिनु खंभे पवढ़ल, आठ पहर झनकार ॥१॥
गावहु सखियाँ हिँडोलवा हो, अनुभौ मंगलचार ॥२॥
अब नहिं अवना जवना हो, प्रेम पदारथ भइल निनार ॥३॥
छुटल जगत कर झुलना हो, दास गुलाल मिलो है यार ॥४॥

(१०)

प्रेम प्रीति रत झूलब हो, सुरति के डोर लगाय ।
प्रेम प्रीति मन रातल हो, हमरौ मरल भताय* ॥ १ ॥
पाँस पचीच तिन† बाँधल हो, सखियाँ संग लगाय ।
हम धनि पिय कि सोहागनि हो, मरिहै हमरि बलाय ॥२॥
अधर महल पर झूलब हो, फूलल कँवल हमार ।
सत्त सब्द गुन गावल हो, कर्‍यो मंगलचार ॥ ३ ॥
झूलब निर्गुन हिंडोलवा हो, जग से नाता तोरि ।
कह गुलाल हम झूलब हो, पिय सँग दै गठिजोरि ॥४॥

---

*पति यानी मन । †तीन ।

बारह मासा

(१)

बारह मासा जो ठहराई, जन्म सुफल तब जानो भाई ॥१॥

॥ असाढ़ ॥

मास असाढ़ जो आइया, सब जिय आसा लाय ।
प्रभु चरनन चित लागेऊ, इत उत नाहिन जाय ॥ २ ॥

छंद

पुरवा जो पवन झकोर ऊठि, बादर चहूं दिस धाइया ।
गरजि गगन अनंत धुनि छबि, नाम सौं लपटाइया ॥३॥
लपटाइ रहु रे नाम सौं, आनंद कहि नहिं जाइया ।
प्रेम प्रापत भयो तबहीं, आपु आपु बनाइया ॥ ४ ॥

॥ सावन ॥

सावन स्वास न मानई, गहि गहि रोकत जाय ।
पिय कै उदेस* न पायो, कैसे क जिय ठहराय ॥ ५ ॥

छंद

सुन्न में झनकार झन झन, मोति हूं झरि लाइया ।
धनि भाग बिरहिन तासु जीवन, जासु प्रभु ग्रह आइया ॥६॥
जासु प्रभु ग्रह आइया, तब अनँद मंगल गाइया ।
उठत निर्मल बानि निर्गुन, अभय डंक बजाइया ॥ ७ ॥

*संदेस, ख़बर ।

॥ भादौं ॥

भादौं भरम नसावई, ज्ञान कै सूरति लाय।
चहुँ दिसि दमकै दामिनी, चित चक्रित ह्वै जाय ॥८॥

छंद

सुखमन सेज सँवारि बहु विधि, अगम रंग लगाइया।
प्रेम सौं पवढ़ाइ प्रभु को, भाव अंकम* लाइया॥९॥
भाव अंकम लाइया, तब कर्म सब जरि जाइया।
अकल कला को खेल बनिया, अनंत रूप दिखाइया ॥१०॥

॥क्वार॥

क्वार पूरन करमना, समय सोहावन भाय† ।
कहिं जल थाह अथाह है, निर्मल बरनि न जाय ॥११॥

छंद

ब्रह्म पूर प्रकास चहुँ दिसि, उदित चंद सोहाइया।
एक नाम सौं रंग लागो, मगन माधो‡ भाइया ॥ १२ ॥
तत्त मद्धे तत्त मेरुयो§ आवागवन नसाइया।
मृग तृस्ना को नीर जैसे, भटकि भटकि लजाइया ॥१३॥

॥ कातिक ॥

कातिक कर्म प्रापति भयो, जो जा को जस भाय।
अपनो अपनो अंस जस, सो तस बीज मेराय ॥१४॥

छंद

यहि दिवस दस रँग कुसुम है, पुनि अंत ना ठहराइया।
नहिं प्रीति प्रानी करत प्रभु सोँ, सिर धुने पछताइया ॥१५॥

---

*अंक में, गोद में। †भाना, पसंद आना। ‡मन। §मिलाया।

सिर धुने पछताइया, तब हृदय ज्ञान भुलाइया ।
मरकट* मुठी धारै भरम ज्यों, आपु आपु बँधाइया ॥१६॥

॥ अगहन ॥

अगहन मास सोभित भयो, जीव जंतु सुख पाय ।
ऐसो जगत जहान जड़, घर दारा लपटाय ॥१७॥

छंद

तू चेत करु नर बावरे, आया कहाँ कहँ जाइया ।
यह काल कठिन कराल है, धरि साम भोरे खाइया ॥१८॥
साम भोरे खाइया धरि, तबहि सुद्धि भुलाइया ।
मृग तृस्ना को नीर जैसे, भरमि भटकि लजाइया ॥१९॥

॥ पूस ॥

पूस मास तुसार† आयो, कंपि जाड़ जनाइया ।
घर नाम साथ सनीप‡ नाहीं, पाल§ बहुत सताइया॥२०॥

छंद

ज्ञान अगिन उदगारि तापो, कर्म सबहिँ जराइया ।
इक जानि प्रभु को नाम लेवे, जाड़ निकट न आइया ॥२१॥
जाड़ निकट न आइया, तब सबै सुख जिय भाइया ।
मनहिं मन में बिचार आयो, मूल सो ठहराइया ॥२२॥

॥ माघ ॥

माघ जो मदन बसंत, तनहिँ तिरास जनावई ।
उनमद‖ मातल लोग, तबहीं धोखा पावई ॥२३॥

*बंदर । †ठंढ । ‡पास । §पाला । ‖मस्त ।

छंद

माया मोह समूह सागर, डुबत थाह न आइया ।
हरि चेत नाहिं बिचेत प्रानी, भरम गोता खाइया ॥२४॥
भरम गोता खाइया जब, तबहिं मती हेराइया ।
भयो बिहवल जबहिं प्रानी, सोक मोह लगाइया ॥२५॥

॥ फागुन ॥

फागुन फूल हुलास, न आनँद भावई ।
घर घर गावहिं लोग, तिरास जनावई ॥ २६ ॥

छंद

प्रान-पति बिनु कैसे जीवौं, ऐसो होरी जाइया ।
इक नाम सोँ नहिं संग बनिया, बृथा सम्मत* लाइया॥२७॥
बृथा सम्मत लाइया, तब ऐसही दिन जाइया ।
अब कहा पछतात हो, तुम कहै कवन बुझाइया ॥२८॥

॥ चैत ॥

चैत में बनराय फूलो, सुभग सोभा छाइया ।
ऊँच नीच सब उद्र पूरन, जा को जैसो आइया २९

छंद

त्रिगुन ताप संताप है नर, चेत काहे न लाइया ।
जिन जुक्ति जल तैं तन सँवारयो, ताहि क्यौं बिसराइया॥३०
ताहि क्यौं बिसराइया नर, आस लै लै धाइया ।
भूलि गे सब बात तबकी, कर्म माखी खाइया ॥३१॥

*सन ।

॥ बैसाख ॥

बैसाख कर्म बिचार बिनु, नर झूठि तौल जोखाइया* ।
बृथा माया मन भुलाया, धूर में लपटाइया ॥३२॥

जंजाल जाल को फाँद फाँद्यो, कठिन बाँध बँधाइया ।
बँध-छोर बंधन होय तब, जब नाथ करहिं सहाइया ॥३३॥
नाथ करहिं सहाइया, तब मैल सबहिं बहाइया ।
छबि कोटि चंद उदय कियो है, रूप बरनि न जाइया ॥३४

॥ जेठ ॥

जेठ दाया ज्ञान रूपी, संत मन ठहराइया ।
जिन अगम निगम बिचार कीन्हो, तत्त ब्रह्म समाइया ॥३५

छंद

कह गुलाल अपार स्वामी, गुरु कृपा घर आइया ।
धन भाग जीवन भक्त को, जिन परम पद यह पाइया ३६
परम पद यह पाइया, तब सहज घर ठहराइया ।
भयो अबिचल अभय ज्ञानी, समुँद लहरि समाइया ॥३७

बसंत

(१)

आनँद बसंत मन करु धमारि । मगन भईं तहँ पाँच नारि ॥ टेक ॥

*वज़न कराया ।

सब्द सोहावन ऋतु बसंत। हरि को नाम लिये खेलत संत॥१॥
दसौ दिसा में फूले फूल। ऋतु बसंत को इहै मूल॥२॥
अष्ट जाम तहँ उठै गुँजार। रुनझुन बाजै भव के पार॥३॥
आवै न जाय है रहत थीर। खेलत कोऊ प्रभु फकीर॥४॥
लोक वेद कै छुटलि आस। साध संगति महँ लियो बास॥५॥
कह गुलाल यह जाने कोय। आवा गवन न कबहिँ होय॥६॥

(२)

सुलभ बसंत नर नाम जान। यहि सिवाय मत झूठ आन॥१॥
कोउ जल किरिया करै तन सताय। कोउ नेती धोती प्रीति लाय॥२॥
कोउ बैठि गुफा में धरत ध्यान। कोउ भूलि भटकि पूजत पपान॥३॥
कोउ कर्म धर्म करै बिधि बिधान। कोउ सुरभि* सहस दे बिप्र दान॥४॥
कोउ तीरथ ब्रत में जाइ न्हाय। कारन आसा जन्म जाय॥५॥
कोउ नागा दूधा-धारि होय। बन खँड बसि गृह कबौं न जोय†॥६॥
कोउ जंत्र मंत्र करि जग भुलाय। कोउ मन महँ माया हेतु लाय॥७॥
यहि सिवाय जो जाने आन। जम सिर मारै दै निसान॥८॥
कह गुलाल यह हरित ज्ञान। राम नाम सो सत्त जान॥९॥

*गाय। †ढूंढना।

(३)

उपजै बसंत हरि भजन ज्ञान । पुलकि पुलकि मन ऋतु समान ॥ १ ॥
गुरु के बचन जब कली लाग । प्रेम पदारथ फूल्यो भाग ॥२॥
चित चेरा ह्वै कह हुलास । बैठु निरंतर अगम बास ॥३॥
दसौ दिसा में उठै सोर । पंच सखि गावैं अति झकोर ॥४॥
गगन मँडल में लागु रंग । खेलत हुलसत प्रभु के सँग ॥५॥
यह सुख प्रापत जेकरे* होय । कारन तेहि कछु रहै न कोय॥६॥
कह गुलाल यह जाने जोय । ता का आवागवन न होय ॥७॥

(४)

खेलत बसंत मन मगन मोर । उमँगि उमँगि चित प्रभु की ओर ॥ १ ॥
आतम फूल्यो भयो भोर । ऋतु बसंत मिलो मनुवाँ घोर ॥२॥
तिहुं पुर मह्वँ भयो सोर । दसौ दिसा हरि हरि हिलोर ॥३॥
बिमल बिमल गावैं सुर राग । ऊठत बानी गति अनुराग ॥ ४ ॥
आनँद मंगल मोर न तोर । बिगसि स्रैन छवि नैन कोर ॥५॥
धन्य भाग अस मिले बसंत । आपहिं अपने खेलत संत ॥६॥
कह गुलाल नहिं भाग थोर । प्रान पिया सँग मिलल जोर॥७

(५)

चेतहु क्यों नहिं नर हरि बसंत । दिन दस बीते काल अंत ॥ १ ॥

*जिसको ।

धावत धूपत मन को फेर। करत कुमति नहिं सुमति हेर ॥२॥
ठौर ठौर फिरते दिन जाय। भटकि भटकि भ्रम गोता खाय ॥ ३ ॥
ऐसे समय न पैहौ दाव। छोड़ो सब कछु लोक चाव ॥४॥
माया ठगनी ठगो ठगाय। मृग तृसना लालच लोभाय ॥५॥
साध सँगति निज इहै भेव। त्यागहु सबै जगत के देव ॥६॥
कह गुलाल यह गति बुझाय। फिर पछितैहौ काल खाय ॥७॥

(६)

परसत बसंत मन मगन मोर। फूल्यो काया भयो भोर ॥१॥
दुनिया नेम धर्म करै आस। तजत नाम करि करम बास ॥ २ ॥
दुख सुख मरन जिवन है पास। घटत बढ़त चौरासि बास ॥ ३ ॥
ऐसे समय बहुरि न दाव। दीन होत काकै पछिताव ॥४॥
साध सँगति नहिं करत भाव। जन्म जात जस लोह ताव॥५॥
आपु न चीन्हत फिरत अज्ञान। जम सिर मारहिं अंत समान ॥ ६ ॥
कह गुलाल का करौं बयान। जग नहिं मानत बड़ नदान ॥ ७ ॥

(७)

भल मन राजा खेलै बसंत। उठत सब्द हरि हरि अनंत ॥१॥
खेले नारद औ सुकदेव। नवो जोगेस्वर जानि भेव ॥२॥

*समय ।

प्रहलाद ध्रू खेले राखि कानि।अँबरिक खेले चक्र मानि ॥३॥
नामदेव खेले लइ करार । कबीर खेले उतरि पार ॥४॥
नानक खेले जुक्ति जानि । पीपा खेले भक्ति मानि ॥५॥
रयदास खेले डंक देइ । खेले मलूका अगम लेइ ॥६॥
चत्रभुज खेले कर्म धोय । तुलसी खेले सगुन जोय ॥७॥
यारी खेले सहज भाव । सतगुरु बुल्ला टरे न पाँव ॥८॥
सब संतन के चरन लाग । खेल गुलाल मेरो फस्यो भाग ॥९॥

(८)

मैं उपमा कवनि करौँ गुरु राय। उठत सब्द रह्योगगन छाय१
लहरि लहरि अति उठि झकोर। निरखि निरखि चित
चन्द्र चकोर ॥२॥
निरझरि झरत रहत अकास। हंस सरोवर लेत बास॥३॥
अगम अगोचर अति अथाह। वार पार नहिं ठैार राह ॥४॥
जो जावै सो रहत थीर। नाम बसंत खेलत फकीर ॥५॥
यहि सिवाय जो जानै आन।जम सिर मारत दे निसान ॥६॥
कह गुलाल यह उत्तम ज्ञान।नाम भजन सो सत्त जान॥७॥

(९)

आयो बसंत मन चकित मोर। ठैारठैार अति उठै झकोर॥१॥
नाम कली जब लग्यो गात।झस्यो करम तब गिस्यो पात॥२॥
गुरु कै बचन जब फूल्यो फूल। फूल्यो फूल भँवर रस भूल॥३॥
आदि अंत मध एक सूर*। दसैा दिसा में बजत तूर॥४॥
यह बसंत जो जाने कोय। आवा गवन कबहिं न होय॥५॥

*सुर।

संत सभा महँ बैठु जाय। सहज सुरति धरि काल* खाय॥६॥
कह गुलाल मन भयो थीर। सोई फाजिल है फकीर॥७॥

(१०)

मेरे ऋतु बसंत घर समय लागु। बाजत अनहद फाग जागु ॥टेक॥
मन राजा तहँ रच्यो रंग। पाँच पचीस तिन† लिये संग ॥१॥
खेलत खेल बहु बिधि बनाय। आनँद मंगल उठि बधाय ॥२॥
राम नाम सोँ बन्यो रीति। आठ पहर नहिँ टरत प्रीति ॥३॥
सुख सागर में बैठो जाय। निरखि निरखि गति रहो समाय
अगम अगोचर अलख राय। सिव ब्रह्मा जा को खोज न पाय ॥५॥
कह गुलाल सो दिखे हजूर। को मानै यह बचन फूर‡॥६॥

(११)

जग्यो बसंत जा के उदित ज्ञान।
अवर सबै नर है हैवान§॥ टेक ॥
काम क्रोध दोउ संग जोर।
करि अँधियार न होत भोर॥ १ ॥
टकटोरत दिन रैन जाय।
मोह महाबन पर्यो भुलाय ॥ २ ॥
माया परबल महत जान।
लोक बेद सब करत ध्यान ॥३॥

*काल को। †तीन। ‡सच। §पशु।

काल अगिनि नित ग्रसत जाय।
छतिया छूतिनि धरत खाय ॥४॥
नाम न जानहु सत्त ज्ञान।
जातेँ छूटे जग को तान ॥५॥
कह गुलाल यह बचन भाय।
फिर पछितैहौ जन्म जाय ॥६॥

(१२)

खेलत बसंत भयो अचल रंग।
ताल मृदँग डफ उठि तरंग ॥१॥
काया नगरी मन बिस्राम।
उलटि गयो तहँ एक नाम ॥२॥
आदि अंत नहिं मध्य तीर।
झरत अधर तहँ भरत नीर ॥३॥
बिगसि कमल भयो उदय भोर।
थकित भयो मन गयो जोर ॥४॥
पाँच पचीस तिन* बाँधि मारि।
आनँद मंगल करु धमारि ॥५॥
धन्य भाग जाके बरत जोति।
हंस रूप ह्वै चुँगत मोति ॥६॥
कह गुलाल मोरी पुजलि आस।
चरन कमल महँ लियो बास॥७॥

*तीन।

(१३)

खेलत बसंत आनँद धमारि ।
सिव ब्रह्मा जहँ मिल मुरारि* ॥१॥
उटत तरँग तहँ बरत जोत ।
बिमल बिमल धुन बानी होत ॥२॥
तन मन डारि कै रहो समाइ ।
गंग जमुन मिलि सिखर† पाइ ॥३॥
फिरत फिरत तहँ करत कोड़‡ ।
बैठो भवन महँ थकित गोड़§ ॥४॥
गगन मँडल में लगि समाध ।
ससि औ सूरहिं‖ राखु बाँध ॥५॥
लहरि लहरि बहै जोति धार ।
थकित भयो मन मिलि हमार ॥ ६ ॥
कह गुलाल मेरि पुजलि आस ।
चरन कमल महँ लियो है बास ॥ ७ ॥

(१४)

मन मधुकर¶ खेलत बसंत ।
बाजत अनहद गति अनंत ॥१॥
बिगसत कमल भयो गुँजार ।
जोति जगामग कर पसार ॥ २ ॥
निरखि निरखि जिय भयो अनंद ।
बाभल मन तब परल फंद ॥ ३ ॥

*बिश्नु । †चोटी। ‡आनंद । §पाँव । ‖दाहिनी बाँई स्वाँसा । ¶भँवरा ।

लहरि लहरि बहै जोति धार ।
चरन कमल मन मिलो हमार ॥ ४ ॥
आवै न जाइ मरै नहिँ जीव ।
पुलकि पुलकि रस अमिय पीव ॥ ५ ॥
अगम अगोचर अलख नाथ ।
देखत नैनन भयो सनाथ ॥ ६ ॥
कह गुलाल मोरी पुजलि आस ।
जम जीत्यो भयो जोति बास ॥ ७ ॥

(१५)

चलु मोरे मनुवाँ हरि के धाम ।
सदा सरूप तहँ उठत नाम ॥ टेक ॥
गोरखदत्त गये सुकदेव । तुलसी सूर भये जैदेव ॥ १ ॥
नामदेव रैदास दास । वहँ दास कबीर कै पुजलि आस ।२।
रामानंद वहँ लिय निवास । धना सेन वहँ कृस्न दास ।।३।।
चतुरभुज नानक संतन गनी । दास मलूका सहज बनी ।।४।।
यारी दास वहँ केसोदास । सतगुरु बुल्ला चरन पास ।।५।।
कह गुलाल का कहैाँ बनाय । संत चरन रज सिर समाय।।६।।

॥ होली ॥

(१)

आरति आनँद मंगल गायो सहज कै फाग लगायो ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है गूँज दसौ दिसि छायो ।।१।।
जागत जोति झलाझलि झलकत निरखत रूप लगायो ।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत तत्त अबीर उड़ायो ।। २ ।।

होरी होरी होत निरंतर सतगुरु खेल खिलायो ।
कह गुलाल स्वामी घर आये पुलकि पुलकि लपटायो ॥३॥

(२)

मेरे आनँद होरी आई री ॥ टेक ॥
आठ पहर धुनि लगी रहतु है,
कंटक काल पराई री ॥१॥
झिमल झिमल सखियाँ गुन गावहिं,
रंग दसौ दिसि छाई री ॥ २ ॥
अनुभौ फाग परम तत लागो,
पायो प्रेम लोभाई री ॥ ३ ॥
लोक बेद के धोखा छूटलि,
लज्जा गइलि लजाई री ॥ ४ ॥
प्राननाथ से होड़ा* लागल,
ब्रह्म पदारथ पाई री ॥ ५ ॥
कह गुलाल स्वामी बर पावल,
सतगुरु बचन सहाई री ॥ ६ ॥

(३)

सतगुरु सँग होरी खेलो अनहद तूर बजाई ॥ टेक ॥
काया नगर में होरी खेलो प्रेम कै परल धमारी ।
पाँच पचीस मिलि चाचरि गावहिं, प्रभुजी की बलिहारी॥१॥
सहज कै फाग पर्‍यो निस बासर, भरि छूटै पिचुकारी ।
नाद बिंदहीं गाँठि पर्‍यो जब, परलि परस्पर मारी॥२॥

*होड़, बाज़ी ।

तारी दै दै भाँवरि नावहिं, एक तें एक पियारी ।
तत्त अबीर उड़ावत कर धरि, काहू कोउ न सँभारी ॥३॥
अब खेलो मन महा मगन ह्वै, तन मन सर्बस वारी ।
कह गुलाल हम प्रभु सँग खेलल, पूजलि आस हमारी ।४।

(४)

सतगुरु घर पर परलि धमारी,
होरिया मैं खेलोँ गी ॥ टेक ॥
जूथ जूथ सखियाँ सब निकरीं,
परलि ज्ञान कै मारी ॥ १ ॥
अपने पिय सँग होरी खेलोँ,
लोग देत सब गारी ॥ २ ॥
अब खेलो मन महा मगन ह्वै,
छूटलि लाज हमारी ॥ ३ ॥
सत्त सुकृत सोँ होरी खेलो,
संतन की बलिहारी ॥ ४ ॥
कह गुलाल पिय होरी खेलो,
हम कुलवंती नारी ॥ ५ ॥

(५)

आरती ले चली बनाई । फगुवा घर घर आनँद गाई ॥टेक॥
पाँच पचीस औ तीन सोहागिनि, गावहिं प्रभु सोँ
चित लाई ॥ १ ॥
ऊँच नीच में आरति पूरन, दसौ दिसा में छाई ॥ २ ॥
लोक बेद सब दान दियो है, गगन में आरति गाई ॥३॥

सुर नर नाग देव मुनि थाके । काहु न आरति पाई ॥४॥
संत साध महँ आरति पूरन । उनहीं आरति पाई ॥५॥
कह गुलाल हम होरी खेले । सतगुरु फाग खेलाई ॥६॥

(६)

कोउ गगन में होरी खेलै ।
पाँच पचीसो सखियाँ गावहिं, बानि दसौ दिसि मेलै ॥१॥
देत डंक अनुभौ निसु बासर, झूमि झूमि गलि डोलै ।
प्रेम लसित पिचुकारी छूटत, तारी दै दै बोलै ॥ २ ॥
तत्त अबीर उड़त नभ छायो, ज्ञानहीन मति तोलै ।
थकित भयो पग मग न परत, लिंग सुधि बिसरी
गयो बोलै ॥ ३ ॥
अब की बार फाग दीजै प्रभु, जाम देवँ नहिं तो लै ।
कहै गुलाल कृपाल दयानिधि, नाम दान दै गेलै[†] ॥४॥

(७)

समय लगो हरि नाम हो, होरी आई ।
काया नगर में फाग बनायो, तिर बिधि रंग उगाई ॥१
पाँच सखी मिलि रास रचो है, अगम अबीर उड़ाई ।
सुखमन भरि पिचुकारी डारत, छिरकत प्रभुहिं बनाई ॥२
दसौ दिसा में चाचरि ऊठत, मारू प्रेम बजाई ।
लागी लगन टरत नहिं टारी, सुधि बुधि सबहिं भुलाई ॥३
लोक बेद न्योछावरि डारोँ, ममता मैल बहाई ।
कह गुलाल पिय साथ सोहागिनि, घरहीं होरी पाई ॥४॥

*तब तक । †गये ।

(८)

प्रेम नेम चाचरि रच्यो । पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥टेक॥
चाँद सूर उलटे चले, उड़त अबीर अकास ॥ १ ॥
इँगल पिंगल खेलन लग्यो, सुखमन सहज निवास ॥२॥
तिरबेनी फगुवा बन्यो । मानिक झरि चहुं पास ॥ ३ ॥
कुंज कुंज निरती पस्यो, चंद्र बदन प्रभु पास ॥ ४ ॥
कह गुलाल आनँद भयो, पूजलि मन की आस ॥ ५ ॥

(९)

निसु बासर होरी खेलै हो, सहज सुन्न धुनि लाई ॥टेक॥
बिगसि कमल चाचरी रच्यो है, दुन्द उठ्यो नभ छाई ।
प्रेम भरी पिचुकारी छूटत, तत्त अबीर उड़ाई ॥ १ ॥
बिनु बाजे तहँ बाज उठतु है, आनँद नाहिं समाई ।
कै बैराग सखी सब गावहिं, लज्जा जात लजाई ॥ २ ॥
संतन मिलि तहँ होरी खेलो, नौबत डंक बजाई ।
फगुवा दान मिल्यो मन पूरन, जन गुलाल बलि जाई ॥३॥

(१०)

अलख पुरुपसँगखेलोहोरी, गुरु नाम कै डंक बजोरी ॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु सिव खेल खेलावहिं, सब्द कै फाग रचो री ।
आतम नारि सखीं लै गवनहिं, तत्त कै गाँठि दियो री॥१
अगम अबीर उड़त दस हूं दिसि, प्रेम पिचुकारि भिँगो री ।
मनमोहन छवि रास रच्यो है, सुखमन निरत करो री॥२
लागी लगन टरत नहिं टारे, काहू कोउ न बुझोरी ।
कह गुलाल हम प्यारी पिया सँग, अनुभौ फाग बनो री॥३॥

(१२)

मन राजा खेले होरी, अनुभव तत्त अखाड़े ॥ टेक ॥
अनहद घंटा बाजु रैन दिन, ता में सुरति परो री ॥ १ ॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, सुरति सौं निरति भरो री२
काया नगर में होरी खेलो, रबि ससि दोऊ बटोरी ॥ ३ ॥
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, निरझर अगम झरो री ४
जाग्यो फाग परम पद लाग्यो, सतगुरु बचन फरो री ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम होरी खेलल, प्रभु सौं दै गँठजोरी ॥ ६ ॥

(१३)

फागुन समय सोहावन हो, नर खेलहु अवसर जाय ॥ १ ॥
यह तन बालू मंदिर हो, नर धोखे माया लपटाय ॥ २ ॥
ज्यौं अंजुली जल घटत है हो, नेकु नहीं ठहराय ॥ ३ ॥
पाँच पचीस बड़ि दारुन हो, लूटहिं सहर बनाय ॥ ४ ॥
मनुवाँ जालिम जोर है हो, डाँड़ लेत गरुवाय ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम बाँधल हो, खात है राम दोहाय ॥ ६ ॥

(१४)

प्रेम कै फरल मनोरवा[†] हो, दस दिस भयो प्रकास ॥ १ ॥
निस दिन नौबति बाजै हो, अनहद उठत अकास ॥ २ ॥
पाँच नारि गुन गावहिं हो, पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥ ३ ॥
अधर महल घर बैठक हो, मेटल जम कै त्रास ॥ ४ ॥
नहिं आइब नहिं जाइब हो, चरन कमल में बास ॥ ५ ॥
कहै गुलाल मनोरवा हो, छोड़ि देव जग आस ॥ ६ ॥

---

[x] भारी डंड । [†] एक राग का नाम ।

(१५)

नाम रंग होरी खेलो जाई, फिर पाछे पछिताई ॥ टेक ॥
यहि तन फागु मचो परमारथ, अवधि बदो दिन ढाई १
कालअगिन जब मस्तक जरि है, छूटी सब चतुराई २
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, चेतन अबिर उड़ाई ३
इँगला पिंगला दोउ भरत उर्ध मुख, छिरकत प्रभुहिं बनाई ४
दुइ बिधि फाग बनो या जग में, जिन जैसो मन भाई ५
कह गुलाल यह अगम फागु है, बिन सतगुरु नहिं पाई ६

(१६)

अधर रंग फगुआ मन खेलो, रबि ससि दूनों संग मेलो ॥टेक॥
मन बैराग चित चोर जे पैके, नेह निरंतर लाई ।
पाँच पचीस औ तीन गवासी, पकरि गगन ले जाई ॥ १ ॥
सुन्न नगर में आसन माड़ो, अद्भुत भेष बनाई ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव तहँ नाहीं, फाग बरनि नहिं जाई ॥ २ ॥
नादहिं बिंदहिं गाँठि परो है, ज्ञान कि जोति समाई ।
उठत लहरि अनंत राग तहँ अनुभौ चाचरि गाई ॥ ३ ॥
आवागवन रहित जबहीं भयो, जम सिर डंक बजाई ।
कह गुलाल काल जब अइहै, मरिहै हमरी बलाई ॥ ४ ॥

(१७)

काया बन खेलहु मगन फाग । अधर महल घर रंग लाग ।१।
चित चंचल जब संग लाग । पाँच पचीसो सोउ न जाग ॥२॥
सत सत लागल सहज आग । खेलत खेलत तब फरल भाग ।३

मुकर्रर ।

तत्त लगल जब सोहं ताग। निरतत मनुवाँ गतिहिं पाग ॥४॥
देख दमामा दुन्द भाग। तन नेवछावर देत फाग ॥५॥
एक अवर नहिं सबहिं त्याग। थकित भयल मन चरन लाग ६
कह गुलाल यह अगम फाग। जम जीतल घर राज लाग॥७॥

(१८)

होरी खुलि खेलो, प्रभु सोँ प्रीति लगाई।
सब सखियन एकहि मत कीयो, फाग बरनि नहिं जाई ॥१॥
काया नगर में होरी खेलो, ससि औ सूर समाई।
प्रेम जड़ित पिचुकारी छूटत, नौबति दै दै गाई ॥ २ ॥
दसौ दिसा चाचरि धुनि होवै, तत्त अबीर उड़ाई।
इँगल पिँगल दोउ रास बनावहिं, सो सुख बरनि न जाई॥३
थकित भयो सुधि बुधि हरि लीन्हो, तन मन सबहिं भुलाई।
कह गुलाल हम होरी खेल्यो, प्रभु सोँ गाँठि बँधाई ॥ ४ ॥

(१९)

कोउ आतम भक्ति ज्ञान जाने।
तब सहज सुरत मनुवा माने ॥ टेक ॥
याही रीति प्रीति चरनन सौं।
खोजि सतगुरु पहिचाने ॥ १ ॥
तबही होय प्रेम पद पूरन।
फाग परम पद आने ॥ २ ॥
एका एकी खेल बनो जब।
सिव घर सक्ति समाने ॥ ३ ॥

अनंत कोटि धुनि बाजा बाजे ।
अगम निगम लपटाने ॥ ४ ॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन ।
गति काहू ना जाने ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम नागरि* प्रभु सँग ।
नाम पर्‍यो दीवाने ॥ ६ ॥

(२०)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज झनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार।
दसो दिसा में होरी ऊठत, प्रभुजी के दरबार ॥१॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं, पंचम सुर रुचिकार†।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फागु खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार ।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छबि, झूमक‡ परल बिहार॥३॥
संतन सँग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कह गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(२१)

चित डोलन लागो मौजी चाचरि आयो री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, सोहं सुर भरि गायो री॥१॥
काया नगर में रास रचो है, सखियन झूमक नायो री ।
अष्ट जाम को खेल बनो है, नित सोहावन भायो री ॥२॥

---

*चतुर स्त्री । †मन भावन । ‡झूमका, होली की एक राग का भी नाम है ।

अगम अबीर उड़त दसहूं दिसि, मुरली धुनि छबि छायोरी।
कह गुलाल मेरो ऐसो साहब, घरहीं फाग मचायो री॥३॥

(२२)

हर दम बंसी बाजी, बाजि निवाजी मेरे मन में ॥टेक॥
जहँ सहज सरूप समाजी, सेत धजा सिर ऊपर गाजी॥१
उमँगि उमँगि मानिक मनि बरसत, मुक्ता तहँ झरि लागी२
सत्त सब्द ततकार उठत है, संत सदा सुख राजी ॥३॥
जम जीत्यो घर नौबति बाजै, कह गुलाल गति साजी ॥४॥

(२३)

अहो मन होरी मौज ले आव ॥१॥
दम दम जान तपावो, चित धरि ठाम ठमाव* ॥२॥
तत्त अबीर समूह उड़ावो, तिरबिधि रंग बहाव ॥३॥
काया नगर में रास रचो है, सहजहिं नूर जगाव ॥४॥
गगन मँडल में चाचरि ऊठत, उघट† ताल भरि गाव॥५॥
कह गुलाल प्रभु आयसु‡ दीन्हो, फागु नाम फल पाव ॥६॥

(२४)

मेरी नाथ सोँ होरी लागी री ॥टेक॥
पाँच पचीस मिलि चाचर गावहिं, घुघुकि घुघुकि रस पागी री॥ १ ॥
तत्त अबीर उड़त दसहूं दिसि, अनुभव तुरिया जागी री॥२॥
आठ पहर नौबति तहँ बाजै, धुनि सुनि पातक भागी री।३।
आनँद उठत रहत निसि बासर, रंग भरो अनुरागी री॥४॥

*अस्थान में ठहरावो। †ऊँचा। ‡आज्ञा।

खेलत खेलत मगन भयो मन, मिलि रहु नाम सुहागी री ५
कह गुलाल पिय होरी दीन्हो, हम धन बड़ी सभागी री ६

(२५)

मनुवाँ मोर भइल रँग बाउर* ।
सहज नगरिया लागल ठाउर† ॥१॥
ऊदित चंद झरे तहँ मोती ।
गरत‡ अमी वहँ नाम के जोती ॥२॥
अँगना बुहार के बाँधल केसा ।
कइलूँ सिँगरवा गइलूँ पिय के देसा ॥३॥
आनँद मंगल बाजत तूर ।
फरल लिलरवा भइलूँ पिय के हजूर ॥४॥
कह गुलाल नाम रस पाई ।
मगन भइल जिव गइल बलाई ॥५॥

(२६)

आजु मन रावल§ रचल धमारी ।
कुहुकि कुहुकि हरि मिलल सुखारी ॥१॥
काया नगर में खेल पसारी ।
भरि भरि रूप थर्कालि नौ नारी ॥ २ ॥
जगर मगर अति लगत पियारी ।
बाजत अनहद धुनि झनकारी ॥ ३ ॥
तहाँ न रवि ससि पुरुष न नारी ।
आपुहिं अपने भइल बुझारी ॥ ४ ॥

*मस्त । †ठिकाने । ‡निचुड़ता है । §सिपाही ।

कह गुलाल हम फाग बिचारी ।
अब न खेलब सतगुरु बलिहारी ॥ ५ ॥

(२७)

को जाने हरि नाम की होरी ॥ टेक ॥
चौरासी में रमि रह पूरन, तीहुर* खेल बनो री ॥ १ ॥
घूमि घूमि के फिरत दसो दिसि, कारन नाहिं छुटो री॥२॥
नेक प्रीति हिये नाहीं आयो, नहिं सतसंग मिलो री॥३॥
कहै गुलाल अधम भो प्रानी, अवरे अवरि गहो री॥४॥

(२८)

मैं तो खेलौंगी प्रभुजी से होरी ॥ टेक ॥
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत, तत्त अबीर भरि झोरी ॥१॥
निसु बासर को फागु परो है, घूमत लगलि ठगौरी ॥२॥
लागो रंग सोहंग गुन गावहिं, निरतत बाँहा जोरी†॥३॥
कह गुलाल सुख बरनि न आवे, चाखत अधर कटोरी ॥४॥

(२९)

मन मैं हम खेलैं होरी, आनँद डंक बजाई ॥ टेक ॥
काया कोबर‡ भरि भरि लीन्हो, ज्ञान अबीर उड़ो री ।
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, सुरति सौं नेह लगो री॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, सहज के फाग बनोरी ।
लागो रंग टरत नहिं टारे, आपु तैं आपु पगो री ॥२॥
प्रेम पदारथ प्रापत भो जब, एक तैं एक बझो री ।
उमँगि उमँगि चित रूप समानो, तिहुं पुर भाग बढ़ो री॥३॥

*तीन तरह अर्थात गुनों का । †हाथ पकड़ के । ‡कलसा ।

धन्न भाग जिन यह गति पाई, वा का पटतर* कौन करो री।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, होरी हमरि फरो री ॥४॥

(३०)

कोऊ आतम जंत्र† बजावै।
आठ पहर धुनि लगै रहतु है, बिमल बिमल सुर गावै॥१॥
तिहुं पुर मद्धे फाग परो है, होरी चहुं दिसि भावै।
सुर नर मुनी नाग गंधर्बा, होरी चहुं दिसि धावै ॥ २ ॥
पाँच पचीस बनो खिलवाड़ी, नृप कहँ नाच नचावै।
ऐसो खेल बनो मूढ़न सौं, ता सँग जन्म गँवावै ॥ ३ ॥
ऐसो खेल नाहिं वनि आवे, जो यह खेल बचावै।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, जो यह खेल छोड़ावै ॥४॥

(३१)

चरनन में फागुन मन खेले अनत कहूँ नहिं डोले ॥टेक॥
आठ पहर नौबति धुनि बाजे, पल पल छिन छिन हौले ॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिँ, प्रभु से करत कलोले॥२॥
सुन्न नगर में होरी लै लै, जोति उजेरे खेले ॥ २ ॥
तत्त अबीर उड़त दसहूं दिसि, काहे को कोऊ तोले ॥४॥
ऐसो सुख जुग जुग नहिं कोई, जो तुम साँची खेले ॥५॥
कह गुलाल तब परदा छूटे, कबहुं न भवजल भूले ॥ ६

*बराबरी। †बाजा।

रेखता

(१)

सरन सँभारि धरि चरन तर रहो परि,
काल अरु जाल कोउ अवर नाहीं ॥१॥
प्रेम सोँ प्रीति करु नाम को हृदय धरु,
जोर जम काल सब दूरि जाहीं ॥ २ ॥
सुरति सँभारि कै नेह लगाइ कै,
रहो अडोल कहुं डोल नाहीं ।
कहै गुलाल किरपा कियो सतगुरू,
पस्यो अथाह लियो पकरि बाहीं ॥३॥

(२)

सुरति सोँ निरति मिलि ध्यान अजपा जपै,
ज्ञान का घोड़ लै सुन्न धावै ॥ १ ॥
सेत परकास आकास में फूलि रहो,
चित्त ह्वै भँवर तब जाय पावै ॥ २ ॥
वहँ गुंज अनहद गुँजै नाम तबहीं जगै,
प्रेम भो पूर नहिं अनत आवै ॥ ३ ॥
कहैँ गुलाल फकीर सो सूर है,
मैाज के खेल में खेल पावै ॥ ४ ॥

(३)

भक्ति परताप तब पूर सोइ जानिये,
धर्म अरु कर्म से रहत न्यारा ॥ १ ॥
राम सोँ रमि रह्यो जोति में मिलि रह्यो,
दुन्द संसार को सहज जारा ॥ २ ॥

भर्म भव मारि कै क्रोध को जारि कै,
चित्त धरि चोर को कियो यारा ॥ ३ ॥
कहै गुलाल सतगुरू किरपा कियो,
हाथ मन लियो तब काल मारा ॥ ४ ॥

(४)

मन मुक्ता होवै नाम रस नित लेवै,
हंस ह्वै रूप तब दसा पावै ॥ १ ॥
मोती मुक्ता चुँगै कीट में नहिं पगै,
सदा चेतन्य नहिं भरम आवै ॥ २ ॥
देखि दीदार सँभारि ले आपु को,
और नहिं फेर कहुँ दूरि धावै ३ ॥
कहैं गुलाल यहि भाँति जो जन होवै,
दिब्य दीदार सो दरस पावै ॥ ४ ॥

(५)

भयो जब दरस तब परस साहब मिलो,
अवर सब दूर नहिं नेर* आया ॥ १ ॥
पाप अरु पुन्न कहँ कर्म अरु धर्म कहँ,
तिक्त† संसार तैं अलख गाया ॥ २ ॥
अमल‡ अमलै§ पिवे नाम लेते जिवे,
ज्ञान अरु भेद कोउ नाहिं पाया ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल वे धन्य सो दास हैं,
मुलुक खुलास नाहिं आउ माया ॥ ४ ॥

*पास । †त्यागी । ‡नशा । §मल से रहित ।

(६)

प्रेम परतीत धरि सुरति सोँ निरति करि,
याही है ज्ञान सतगुरू पावै ॥ १ ॥
न तो धोख धंधा लिये कपट डारे हिये,
मोर अरु तोर में जन्म जावे ॥ २ ॥
नाम सोँ रीति नहिं साध सोँ प्रीति नहिं,
धोख लिये ज्ञान भरि जन्म धावे ॥ ३ ॥
कहै गुलाल यह बचन साँचो सुनो,
यही है सत्त जो कोऊ पावे ॥ ४ ॥

(७)

ज्ञान उद्योत* करि हृदय गुरु बचन धरि
जोग संग्राम के खेत आवै ॥ १ ॥
संत सो पूर है सूर माँड़े रहै,
कंच कुच† आदि नहिं ओर आवै ॥ २ ॥
अगम असाध यह मारि कैसे करै,
काटि के सीस आगे धरावै ॥ ३ ॥
कहैँ गुलाल तब राम किरपा करैँ,
जीति भा सूर सो खेत पावै ॥ ४ ॥

(८)

राम के काम मोकाम नहिं करत नर,
फिरत संसार चहुं ओर धाया ॥ १ ॥
करत संताप सब पाप सिर पर लिये,
साध औ संत नहिं नेह लाया ॥ २ ॥

*प्रकाशित । †कनक कामिनी ।

बाँधिहै काल जंजाल जम जाल में,
  रहत नहिं चेत सब सुधि हेराया ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल जो नाम को जानिहै,
  जीतिहै काल सोइ ज्ञान पाया ॥ ४ ॥

(९)

सब्द समसेर* लै ज्ञान तरकस† भरा,
  पवन का घोड़ मैदान धाया ॥ १ ॥
पाँच अरु तीन पच्चीस को बाँधि कै,
  पकरि कै जेर जंजीर नाया ॥ २ ॥
जागती जोति दीवान आपन किया,
  बचा नहिं कोऊ जिन सिर उठाया ॥ ३ ॥
मुलुक मवासि‡ खवास§ आपन किया
  गैब की फौज अदल|| चलाया ॥ ४ ॥
गरजि नीसान अनहद्द नौबति बजै,
  जीत के काल मैदान पाया ॥ ५ ॥
कहै गुलाल अगम्म अपार में,
  बैठु जे तखत तिहुं लोक राया ॥ ६ ॥

(१०)

सुन्न मोकाम में जिकिरि सौदा करे,
  गरजि घन गरजि घन गरजि भारी ॥ १ ॥

*तलवार। †तीरों के रखने का चोंगा। ‡मवासी अर्थात पाँच चोर काम क्रोध लोभ मोह अहंकार। §सेवक। ||इंसाफ़।

फूल अनुभौ फुले भँवर ता में भुले,
फूल नहिं भँवर नहिं गति नियारी ॥ २ ॥
सब्द सोहं उठै जीव ता में बसै,
सुखमना सहज तहँ बहत नाड़ी ॥ ३ ॥
पैठि पाताल असमान को छेदि कै,
ब्रह्म सोँ ब्रह्म भयो ब्रह्म भारी ॥ ४ ॥
रहत आसक्त तब डंक अनुभौ दियो,
ज्ञान भो पूर नहिं सुरति टारी ॥ ५ ॥
कहैँ गुलाल सतगुरू सो पूर है,
छत्र सिर फेरि दियो कर्म जारी ॥ ६ ॥

(११)

गुरू परताप जब साध संगति करै,
फुलै तब ब्रह्म संतोष आया ॥ १ ॥
आपना जाप तेँ जाप अजपा जपो,
चाँद अरु सूर को बाँधि नाया ॥ २ ॥
सहज नाड़ी बहै सब्द अनुभौ गहै,
सुरति औ निरति मिलि नाम गाया ॥ ३ ॥
नैन बिनु सूझिया पिंड बिनु जूझिया,
जीति के काल अनहद बजाया ॥ ४ ॥
परो आ डंक चहुँ ओर दसहूं दिसा,
गैब का ज्ञान अदल चलाया ॥ ५ ॥
कहैँ गुलाल सो साफ साहब हुआ,
आपना काज आपुहिं बनाया ॥ ६ ॥

(१२)

जिन आपु ना सँभारा । सो बहि मुए संसारा ॥ १ ॥
चित चेत हूं जो आवे । चित चरन में समावे ॥ २ ॥
तब होय प्रभु कि दाया । तब सतगुरुउन पाया ॥ ३ ॥
जब सतगुरु बोलि बानी । तब झरत रतन खानी ॥४॥
यह दिल में समावे । चित अनत नाहिं जावे ॥५॥
रहु चरन में समाई । गुरु देइ रहु दुहाई ॥ ६ ॥
जब गुरू कहे मेरा । तब काज होय तेरा ॥ ७ ॥
तब फरे सतगुरु बानी । तबभयो जुग जुग ध्यानी॥८॥
लवलीन होय जबहीँ । तोहिं राम मिलै तबहीँ ॥९॥
यह भेद कवन पावै । जेहिं सतगुरू बतावै ॥१०॥
कहै गुलाल जानी । तुम सुनहु संत ज्ञानी ॥११॥

(१३)

सतगुरु जो कीन्ह दाया । तब काढ़ लियो माया ॥ १॥
भजु राम रे गँवारा । इस तनहिं का* निहारा ॥२॥
यह जायगो रे भाई । जल छोड़ पियो काई ॥ ३ ॥
कहँ इस्क है दिवाना । मन कपट में भुलाना ॥ ४ ॥
यह दाव है रे भइया । तुम काहि† में भुलइया ॥५॥
यह खे़ल नाहिं भाई । दिन ऐस ही चलि जाई ॥ ६ ॥
कुफरान जिकिर छोड़ो । पद साँच देव गोड़ो‡ ॥ ७ ॥
तब काज होय तेरा । तब नाहिं कोउ नेरा ॥ ८ ॥

*क्या । †किस । ‡सच्ची राह में पैर धरो ।

वे जिकिर में ठहराने । वह पाँच हैं बिराने* ॥ ९ ॥
अवर कहीं धावे । तौ निकट नाहिं आवे ॥१०॥
पच्चीस हैं बरजोरे । कुफरान बाज सोरे† ॥११॥
यह काया कोट गाढ़ी । बिकटे जु ठाठ ठाढ़ी ॥१२॥
यह भेद नाहिं पावे । नर धोख धंध धावे ॥१३॥
यह करत रहैं जोरे । काहू मुखहुँ न मोरे ॥ १४ ॥
जो नाम के अनुरागी । तिन निकट नाहिं लागी॥१५॥
वह मस्त हैं दिवाने । महबूब साहब जाने ॥१६॥
नित रहत वे उदासी । नहिं जायँ प्राग कासी ॥१७॥
घर हीं में साहब सेवैं । पग अनत नाहिं देवैं ॥१८॥
कहै गुलाल बैरागी । जेहि नाम रटन लागी ॥१९॥

(१४)

अहो सुनो आइ भाई । इह कवनि है बड़ाई ॥ १॥
जिन स्राब‡ तें सँवारा । उन का§ तेरा बिगारा ॥२॥
तुम वाहि सुकर मानो । साँचे साहब को जानो ॥३॥
यह करम है घनेरा । नर फिरत रहत बैारा ॥ ४ ॥
कहिं पत्थल और पानी । जा पूजहिं अज्ञानी ॥ ५ ॥
यह काम नाहिं तेरा । तू का भुलै मैं मेरा ॥ ६ ॥
उस द्वार पै जो जाया । फिर कबहिं नाहिं आया ॥७॥

*पाँचो बिरोधी दूत नामके सुमिरन से स्थिर हो जायँगे । †पच्चीस प्रकृतियाँ ज़बरदस्त नास्तिकता रूपी बाज़ सरीखी हैं । ‡पानी, बुंद । §क्या ।

खबरदार बंदा जानो। अब हीं तैं जीव आनो ॥८॥
यह मति जबून होई। मरले भुलो न कोई* ॥९॥
वह हक्क है दिवानी†। तुम का भुलो रे प्रानी ॥१०॥
जो करत है पसारा। सो सबहिं काल मारा ॥११॥
तुम खबरि लेहु भाई। अपनि अपनि आई ॥१२॥
यह काम नाहिं कोई। जा को तु फिरत रोई ॥१३॥
अजहु चेत बावरे। तेरा चला जात दाव रे॥१४॥
तैं पकरु सुमिरु नाम। तेरा पूर होय काम ॥१५।
साध संतन पग धरो। प्रेम प्रीति भक्ति करो ॥१६॥
तुम जानहु न दोई। आपै साहब वोई ॥१७॥
वहँ दुबिधा न आवे। तब पदवि दास पावे ॥१८॥
गुलाल कह दिवाना। प्रभु के चरन समाना ॥१९॥

(१५)

अहो यार भाई। यह मति सुनो जु आई ॥१॥
धरि नाम मारु तीन। रहु सुखमना लवलीन ॥२॥
जहँ पंच हैं वइ नाद। वहँ बाद ना बिबाद ॥३॥
वहँ बरत नाहिं रोजा। वहँ काहु को न खोजा ॥४॥
वहँ जाति ना बड़ाई। कोउ रंक है न राई ॥५॥
वहँ दुबिधा नहिं आवे। तब दास पदवि पावै ॥६॥
वहँ हिंदू नहिं तुरुक। वहँ ठाँव नाहिं लुरुक‡ ॥७॥
जो जावे सो पावे। नहिं धोख धंध धावे ॥८॥

---

*यह मति यानी साहब को भूल कर पत्थर पानी की पूजा करना बुरी है इस सीख को मरते दम तक न भूलो। †न्याय-करता। ‡लुढुकना, गिरना।

वहँ भेद है न कोई। वहँ जाति नाहिं दोई ॥ ९ ॥
वहँ बंधु ना बिरादर। वहँ घात नाहिं आदर ॥ १० ॥
जिन इश्क वही पाया। वह आवहीं नहिं माया ॥११॥
सब रोज ध्यान धारी। वह मिलि रहे अपारी ॥ १२ ॥
सुर नर नाग देवा। सबहीं करैं जो सेवा ॥ १३ ॥
वह राम के भिखारी। हर दमै लागि तारी ॥ १४ ॥
चित अनत नाहिं जावे। मौज साहब की पावे ॥ १५ ॥
वह रहत हैं निनारा। वह राम के हैं प्यारा ॥ १६ ॥
बेमहल* जो धावे। सो का सवाब† पावे ॥ १७ ॥
यह भूले जो भाई। सबहि तिन को जाई ॥ १८ ॥
खबरदार हो बंदा। तुम का भुलो रे अंधा ॥ १९ ॥
मालूम मझब‡ सोई। जिन आपु भिस्त जोई ॥ २० ॥
जो अवर कहीं धावे। तौ निकट नाहिं आवे ॥ २१ ॥
गुलाल कहत पुकारी। वह बचन की बलिहारी ॥ २२ ॥
नर चेत करो वोई। अवर काम नाहिं कोई ॥ २३ ॥

(१६)

॥ दोहा ॥

अगम निगम सबहीं थको, रहो अचल ठहराय।
कह गुलाल यह रेखता, कोइ बिरला साहब पाय।

॥ रेखता ॥

अहो मन देखो भाई, का कर्म भूलो जाई ॥१॥
जब जोर जबरि जावे, तब खूब खबरि आवे ॥२॥

*बेठिकाने। †भलाई। ‡अच्छा पंथ।

का भूलो दिवाना, यह जायगा गुमाना ॥ ३ ॥
जब दिल में सिदिक* आवे, तब धोख धंध जावे ॥४॥
यह सुख सितून बड़ाई, तेरे काहु काम न आई ॥ ५ ॥
भजु राम नाम प्यारा, लियो बुन्द तैं निकारा ॥ ६ ॥
इह चित में धरो वोई, अवर काम नाहिं कोई ॥ ७ ॥
इह मन बड़ा बलइया, इह मन करे सहइया ॥ ८ ॥
इह मनहिं धोख देवे, इह मन चेता होवे ॥ ९ ॥
इह मन बूझु भइया, इह जन्म पदारथ जइया ॥१०॥
इह मन नाच नचइया, इह मन आस लेवइया ॥११॥
जिन मनै नहिं पहिचाना, वे भूले फिरहिं दिवाना ॥१२॥
जब हाथ इ मन आवे, तब दाँव बंद† पावे ॥ १३ ॥
इह इस्क करै भाई, इह करकसा बलाई ॥ १४ ॥
जिन इह कि ताय‡ पाया, तिनहिं आपु बनाया ॥१५॥
का जायँ मथुरा कासी, वह मिलि रहे अबिनासी ॥१६॥
कह गुलाल जो पावे, बहुरि न भवजल आवे ॥१७॥
जो जिकिर खेल खेले, सोइ आपु आपु में मेले ॥१८॥
बेमहल न जावे, सो खेल ऐस पावे ॥ १९ ॥
वरे रूह महताब, इस्क लगे वइ सिताब§ ॥ २० ॥
तब कुफर‖ न होवे, तब हक्क अदल जोवे ॥ २१ ॥
वइ मस्त है फकीर, दिल चसम है हीर¶ ॥ २२ ॥

*सत्य। †घात। ‡आँच, तपन। §जल्द, तुर्त्त। ‖नास्तिकता। ¶दिल और आँखों में हीर (साराँश) यानी मालिक का प्रेम बसा है।

दरद[*] माहिँ[†] आवे, काहू जोर[‡] ना सतावे ॥२३॥
अवर करत है जो कोई, दोजख[§] भिस्त[||] में समोई ॥२४॥
गुन अवर का बिचारा, तिन चेत भव सँभारा ॥२५॥
एक एक ते बिचारा, सोइँ संत है पियारा ॥२६॥
तिन्हँ पीर अपनाया, अवर फिरत हैं बैारायाा ॥२७॥
इह लोक कर्म जोरे, बेमहल बात तोरे ॥२८॥
सब कहत है ज्ञाना, खबरि अवरि मैदाना ॥२९॥
जोर जुलुम अकस आवे, तोहिं कहो को बचावे ॥३०॥
इह माया है ठगइया, खबरदार देखु भइया ॥३१॥
जबून नाहिं खावे, न तो गैब गोता पावे ॥३२॥
चित चेत हो गँवारा, नहिं जन्म बार बारा ॥३३॥
इक सिद्ध सेव सेवो, वोइ नाम से लैा लेवो ॥३४॥
सोइ जोगि ब्रह्मचारी, वोइ सिद्ध है मुरारी ॥३५॥
जिन ऐसा पद पावे, तिन नाम अचल गावे ॥३६॥
कह गुलाल जो पइया, सोइ नाम में समइया ॥३७॥
जो राम को भजइया, वोइ संत सो कहइया ॥३८॥
अवर धोख ही जु धावे, दर धोख सोई पावे ॥३९॥
नाहीँ है इस्क यारा, बेमहल को पसारा ॥४०॥
जब रे आया जोरे, कुफरान करत बैारे ॥४१॥
रूह हक्क नाहिं जाना, तुम का भुलो गुमाना ॥४२॥
इह ऐसी है देही, कोउ काम नाहिँ होही ॥४३॥

*दया। †अंतर में। ‡जुल्म, सख़्ती। §नर्क। ||स्वर्ग।

बार बार धोख देवे, खबर कबहुं नाहिं लेवे ॥४४॥
यह झूठ है पसारा, खबरदार बंदे यारा ॥४५॥
इस्क करो साँच सोई, जहँ काहु जोर न होई ॥४६॥
मन सुबानी* सानी, तू खबरि नाहिं जानी ॥४७॥
वाह वाह भाई मेरा, यह जायगा सब तेरा ॥४८॥
जुलम न करो कोई, यह काम नाहिं कोई ॥४९॥
इस्क जिसे न हूआ, सो खाक नाहिं घूवाँ ॥५०॥
जो थोरि लजत† पावे, तौ वाही में भावे ॥५१॥
जब मन मुरीद होवे, तब जागे भा‡ सोवे ॥५२॥
सोइ राम रमै भइया, खलक कवन की चलइया॥५३॥
हरि दम दम बोले, राम राम रमत डोले ॥५४॥
जब कुफर न खावे, हक एक ही लगावे ॥५५॥
अस रहनि जो रहइया, मन कर्मना टरइया ॥५६॥
जन होवे जो तेरा, तौ कवन करे मेरा ॥५७॥
महबूब होय सोई, इस्क चरन में समोई ॥५८॥
सब पीर दरद जाने, कबौं धोखहूं न आने ॥५९॥
वे डौल§ हैं फकीर, मौज मौज माहिं धीर ॥६०॥
जो सरन उन कि जावे, अद्भुत पदार्थ पावे ॥६१॥
कह गुलाल सुनु ज्ञानी, तिन राम नाम जानी ॥६२॥

*अच्छी बानी। †लज्ज़त ‡या। §ढंग। ‖मौज ही मौज में धीर (अस्थिर) हैं।

मंगल

(१)

गुन जानी गुनवंत नारि, कंत मन भाइल हो ।
सुभ दिन लगन सोधाय, तवहिं मन लाइल हो ॥ १ ॥
अर्ध उर्ध के मध्य, तो चौक पुराइल हो ।
मुक्ता भरि भरि थाल, तो आरति बनाइल हो ॥ २ ॥
गंग जमुन क़े घाट, तो कलस धराइल हो ।
मानिक बरे दिन रात, तो चँवर डुलाइल हो ॥ ३ ॥
चौमुख दीपक बारि, तो माँड़ो छाइल हो ।
निर्झरि झरी तहँ लाय, अमृत फल पाइल हो ॥ ४ ॥
गावहिं सखियाँ सहेलरि, दुलहिन भाइल हो ।
दास गुलाल सोहागिनि, प्रभु सँग पाइल हो ॥ ५ ॥

(२)

अबिनासी दुलहा हमारा हो ॥
जीतो जोग भोग सब त्यागो, भवसागर सोँ न्यारा हो ॥१॥
किरपा कीन्हो सतगुरु दीन्हो, उलटा चौक पसारा हो ॥२॥
तम मन धन न्योछावरि डारोँ, कंत मिलो प्रभु यारा हो ॥३॥
सुखमन सेज निरंतर डासोँ*, सोहं चँवर सुढारा† हो ॥४॥
ताही पलँग मोर पिय बैसहिँ, गावौँ मंगलचारा हो ॥५॥
अगम अपार अनुभव अनमूरत, लोक बेद से पारा हो ॥६॥

*बिछाऊँ । †सुंदर रीत से हिलाया ।

कहै गुलाल भाग हम पायो, कियो है चरन अधारा हो॥४

(३)

सतगुरु लगन धरावल, जक्तहुं जानी हो।
हरि से हूै है ब्याह, बधू अब रानी हो* ॥ १ ॥
आयल लगन सँदेसवा, रोवहिं सब प्रानी हो।
छोड़ि है देस हमार, बहुरि नहिं आनी हो ॥ २ ॥
तिरगुन तेल लगाय के, दुलही बनाइल हो।
सुखमन करहिं बधावर, तो चौक पुराइल हो ॥ ३ ॥
तिरबेनी थल नीर, पवन लेइ जाइल हो।
कंचन कलस भराय, तो मानिक जगाइल हो ॥ ४ ॥
अजर अमर कै माँड़ो, मोतियन छाइल हो।
चैामुख दियना बारि, सखी सब गाइल हो ॥ ५ ॥
गावहिँ बृज की नारि, तो प्रभुहिँ रिझाइल हो।
कामिनि हृदय हुलास, कंत मन भाइल हो ॥ ६ ॥
पूरब चंद उदय कियो, तब भाँवर नाइल हो।
सँदुर बंदन चारु†, अभय पद पाइल हो ॥ ७ ॥
जन गुलाल सोहागिनि, कंत बनाइल हो।
पूरन प्रेम हमार, तो नौबति बजाइल हो ॥ ८ ॥

(४)

मूल कँवल चित लावल, सुरति चढ़ल असमान।
जगमग जोति जगावल, जम कर मरदल मान ॥ १ ॥

---

*अभी तक (स्त्री) थी मगर मालिक के साथ ब्याह होने से रानी हो जाऊंगी। †सुंदर।

पाँच पचीस धरि बाँधल, तीन देव निरवारि ।
बिगसित कँवल मन भावल, पावल देव मुरारि ॥ २ ॥
तन मन सर्बस वारल, आनँद केलि हुलास ।
हरखि हरखि गुन गावल, प्रभु अपनो लियो पास ॥ ३ ॥
सुखमन सेज बिछावल, पूजलि आस हमार ।
जन गुलाल पिया बिलसहिँ, रोम रोम बलिहार ॥ ४ ॥

(५)

आजु मेरे मंगल अनँद बधावर, आरति करबोँ ॥ टेक ॥
सहज के थार सत्त की बाती, प्रेम के अच्छत भरबोँ ॥१॥
सुन्न सिखर पर आरत होवै, तिरबेनी तट बरबोँ ॥ २ ॥
गगन मँडल में सखि सब गावहिँ, भाँवर दै सुर भरबोँ ॥३॥
सिव के घरे सक्ति जब आई, गुन औगुन बीचरबोँ ॥४॥
ऐसी आरति जो नर गावै, बहुरि न भवजल डरबोँ ॥५॥

आरती

(१)

मन में जानिये हो, सत्त सब्द चित लाय ।
पूरन आरति करि जेहि आवै, ता के गुरू सहाय ॥ १ ॥
बिन गुरु ध्यान ज्ञान का करिये, अनतहिँ जाय बहाय।
सहज समाधि हृदय जिन लायो, जारो बिषय बलाय॥२॥
सुन्न सिखर जिन आसन माँड़ो, तिरबेनी तट जाय ।
उड़ो हंस गगनी चढ़ि धावो, आनँद जोति जगाय ॥३॥
गावँ न ठावँ न नावँ न देवा, सेवा सत्त लगाय ।
पूरन ब्रह्म अमर अबिनासी, सहजहिँ रहो समाय ॥४॥

अति अथाह थाह नहिँ अबिगत, जलहीँ जल मीलाय।
कह गुलाल पूरन घर पायो, घटिहै हमरि बलाय ॥ ५ ॥

(२)

गगन के थार बनाय, प्रेम भरि आरति वारी।
चैामुख चमकत जोति, उठत झन झनकारी ॥ १ ॥
मन पवना को फेर, सहज घर लागलि तारी।
उनमुनि लागो बंद, थकित भइँ नौ दस नारी ॥ २ ॥
पाँच पचीस तिनि* जारि, सहज घर लागलि तारी।
लोक बेद कियो दान, दई तब आरति वारी ॥ ३ ॥
कोटिन चंद उगाय, अमी रस नाना गारी।
गुरुमुख भयो प्रसाद, मनहिं मन आरत प्यारी ॥ ४ ॥
धन सतगुरु बलिहारि, चरन छबि पर जिय वारी।
कह गुलाल बैाराह, आरति फूललि फुलवारी ॥ ५ ॥

(३)

सहज घर आरति मौज में लागी ॥ टेक ॥
बिनु बाजे बाजा धुनि होवै, बिनु चरनन गति साजी॥१॥
गगन मँडल अनहद धुनि बाजै, प्रेम प्रीति हिये जागी॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु सीव तहँ नाहीँ, अलख पुरुष अनुरागी॥३॥
अधर महल में आरति होवै, सेत छत्र छबि साजी॥४॥
कोटिन चंद निछावरि वारौँ, आरति भइ बड़ भागी॥५॥
संत साध मिलि आरत होवै, कहि गुलाल बैरागी॥६॥

(४)

आरति नैन पलक पर लागी ॥ टेक ॥
निरझर झरत रहत निसु बासर, सब्द सनेही जागी॥१॥

*तीन

बिनु करताल पखाउज बाजै, बिनु रसना अनुरागी ॥२॥
सुभग सरूप सोहावन सुंदर, सेत धजा सिर साजी॥३॥
सुखमन चँवर ढुरत निःअंतर, आरत हमरी गाजी॥५॥
कह गुलाल आरति हम पायो, लोक बेद मति त्यागी॥६॥

(५)

आरती मनुवाँ मौज की कीजै, प्रेम निरंतर साहब लीजै॥१॥
पहिली आरति अनुभव आवै, जुग जुग अचल परम पद पावै ॥२॥
दुसरी आरति दुबिधा धोवै, सतगुरु सब्द अगम गति जोवै॥३॥
तिसरी आरति त्रिकुटी थाना, मन पवना लै जोति समाना॥४॥
चौथी आरति त्रिभुवन रीझै, सहज सरूप आरती कीजै॥५॥
पँचईं आरति पाँचो गावै, गगन मँडल में मठ गै छावै॥६॥
छठईं आरति छः चक्र बेधावै, उलटि निरंतर सुन्न बसावै॥७
सतईं आरति सहज धुनि गावै, अनहद सुनि धुनि घंट बजावै॥८॥
अठईं आरति आपु बनावै, बिगसै कमल अमी तब पावै॥९
नवईं आरति नौ द्वार लगावै, जम जीते तब मंगल गावै१०
दसईं आरति दसो घर पूरा, जोति मिलो मनुवाँ भयो सूरा॥११॥
एकादस* आरति करन जिन जानी, कहैं गुलाल सोई ब्रह्म ज्ञानी ॥१२॥

*ग्यारहवीं।

(६)

ऐसी आरति करु मन लाय, महा प्रसाद ठाकुर के चढ़ाय॥१॥
प्रेम कै पतरी प्रीति लगाय, भाव के व्रिंजन रुचिर बनाय॥२॥
संत साध मिलि आरत गाय, प्रभु के सिर पर चँवर ढुराय ॥३॥
सुर नर मुनि सब आस लगाय, गिरा परा किनका बिन* खाय ॥४॥
सिव ब्रह्मा जाको खोजत धाय, प्रभु को जूँठन भागहुं पाय॥५॥
सतगुरु बुल्ला† अलख लखाय, संतन सीत गुलालहुं पाय॥६॥

(७)

अरति मनुवाँ करु बनवारी,
सदा सुफल हरि नाम उचारी ॥१॥
सतगुरु सब्द अगम जो पावे,
निसु दिन नौबत डंक बजावै ॥२॥
गरजे गगना मनुवाँ हरखे,
चौमुख मानिक मोती बरखे ॥३॥
आरति एक अनँदपुर वारी,
सहजहिं सुखमन लागी तारी ॥४॥
ऐसी आरति जिन नर गाया,
ता के निकट न आवे माया ॥ ५ ॥

(८)

हरि हरि राम नाम लीजै ।
निसु दिन अनहद नौबति दीजै‡ ॥१॥

*चुनकर । †बुल्ला साहब गुलाल साहब के गुरू का नाम है । ‡बजाइये ।

चौमुख दियना बारि कै मन संपुट कीजै* ।
बिगसि कमल गगना चढ़ो तन को दान दीजै ॥२॥
अगम जोति झरत मोति मुक्ता मनि सीजै ।
प्रेम नेम अमी रस आरती भनीजै† ॥ ३ ॥
अति अभेव अलख देव सेव साँच कीजै ।
आरति आनंद कंद जन गुलाल जीजै ॥ ४ ॥

(९)

हिंदू हृदय जो आरति पावे, राम नाम कै मसल‡ चलावे ॥१॥
गगन मँडल में आरति वारे, तब हीं जीव निछावरि डारे ॥२
सुन्न को थार सत्त की बाती, सुरति निरति बारै दिन राती ३
सुखमन भाँवरि दै दै गावे, ब्रह्मा बिस्नु सिव संग न भावे४
अचल अमूरति आरति तारी, थकित भयो घर नौ दस नारी ॥ ५ ॥
रोम रोम आरति बलिहारी, सकल मनोरथ आरती उतारी६
अजर आस आरति धरि जोरा, आरति सत्त थकित मन मोरा ॥ ७ ॥
तन मन धन न्योछावरि वारी, माया मोह त्याग सब झारी८
आरत सहजहिं सुमिरन करई, आरति चरन सरन तर परई९
आरति प्रेम नेम जब होई, भला बुरा नहिं बूझै कोई ॥१०॥
आरति फिरि जब निरति समाई, मुक्ता अच्छर सिदि§ बनाई ॥ ११ ॥
आरति जब घर बरलि बनाई, रोम रोम पद आरति पाई१२
कह गुलाल हम आरति पाई, जन्म जन्म कै संस मिटाई१३

*मन को सब ओर से बटोर लो । †कहो, गावो । ‡चरचा । §सत्य ।

(१०)

मुसलमान जो आरति करई, सिदिक सबूरीं हर दम धरई१
बेमहाल आरति नहिं करई, फजिर बारि आरति जो धरई २
आरति इस्क इमाने धरई, अल्लह अगुने बानी फरई* ॥३॥
आरति बैत आप जो होई, दुरमति छोड़ि असल चित जोई ४
आरति मुसहफ† प्रीति परोये, जुलमहिं मारि हक्क तब जोये५
आरति किसमत करम जब आई, मजहब पाय तब आरति गाई ॥ ६ ॥
मन मिरदंग आरती गावे, जुलुम जब्र काहू न सतावे ॥७॥
आरति बुंद अकिन जब्र वारा, सुरति बिसुरति गयो सब भारा ॥ ८ ॥
आरतिपुर अमले जिन पाई, कह गुलाल सो है गुर-भाई ९

(११)

राम राम राम राम आरती हमारी, दुनिया है सब देवान देव पूजै भारी ॥ टेक ॥
सतगुरु जब दियो करार, स्रवन सुन्यो दै बिचार।
याही सिदिक जिव हमार, नेम बरत धारी ॥ १ ॥
जोग जुगत मन हमार, ताप रहै पवन भार।
काया थार जोति भरि कै, त्रिकुटी ले वारी ॥ २ ॥
उनमुनी घन गरजि जोर, सुखमन कै करि झकोर।
बंक नाल मेरु डंड, अलख पुरुष भारी ॥ ३ ॥
सेस फनि मनी अनंद, प्रान प्रभु की करत कंद।
जोतो जोग रोग सोग, करम भरम डारी ॥ ४ ॥

*मालिक के निर्गुन नाम की धुन गाजने लगे। †कुरान।

अति अथाह नाहिं थाह, परस भयो गुरु कि बाँह* ।
नाहिं आदि अंत मद्ध, एक ही निहारी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सुनो यार, आरति पूरन हमार ।
राज करौं दसौ दिसा, छत्तर सिर धारी ॥ ६ ॥

(१२)

मन माना मैं मनहिँ जान, आरत सो ज्ञानी ॥ टेक ॥
द्वादस में सुरति तान, उठत तत्त बानी ॥ १ ॥
गल गल जीव ब्रह्म मिलो, अलख पुरुष भारी ॥ २ ॥
बेद भेद सब खुवार, पत्थल जल मानी ॥ ३ ॥
राम नाम हेतु नाहिं, पसु समान जानी ॥ ४ ॥
आपु अपन चिन्हत नाहिं, फिरत भुलानी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सत फकीर, दुनिया बैारानी ॥ ६ ॥

(१३)

लागत मोहिं पियारा, आरति लागत मोहि पियारा ॥टेक॥
सुखमन के घर आरति माँड़ो, रबि ससि दूनोँ वारा ॥१॥
तिरबेनी तिर आरति बारल, भाँवरि देत उतारा ॥२॥
गगन मँडल में आरति गावल, मुक्ता भरि भरि थारा ॥३॥
दसौ दिसा में आरति पूरन, धन सतगुरु बलिहारा ॥४॥
सिव सक्ती जब गाँठि परो है, देखल आपु बिचारा ॥५॥
कह गुलाल आरति हम पावल, फगुआ फरल लिलारा॥६॥

*दख़ल ।

॥ पहाड़ा ॥

एका एक अमल जो पावे, साँचा सतगुरु भावे ।
प्रेम पदारथ हिय में राखे, सुमिरत हीं सुख पावे ॥१॥
दुआ दोष जो दुरमति छोड़े, तिरगुन ताप बहावे ।
सुरति निरति लै आसन माँड़े, सकल सँतोष जो आवे॥२॥
तिया तिरकुटी जो मन राखे, झिलिमिलि जोति जगावे ।
उनमुनि लागो बंद सहज धुनि, चंद मँडल घर छावे ॥३॥
चौथे पद पर पग जो नावे, अनुभौ डंक बजावे ।
गगन मँडल में बाजी माँड़ो, बंक नाल चलि जावे ॥४॥
पँचएँ परम तत्त जो जानो, सुनि भगवत मन लावे ।
पाँच पचीस तीनि बसि करि के, सेत छत्र सिर छावे॥५
छटएँ छिमा सील जो उपजे, सत्त सँतोस चढ़ावे ।
नौ दर छोड़ि दसौ दिसि धावे, सहज समाधि जो पावे ॥६॥
सतएँ सदा सरन मन राखे, सब्द कै भेष बनावे ।
कोटि चंद न्योछावरि वारे, मानिक जोति जगावे ॥७॥
अठएँ अगम जोति जो वारे, दरस परस चित लावे ।
सोहं सब्द सुरत* निस बासर, अनतहिं कतहुं न जावे ॥८॥
नौवेँ नाम निरंजन नौका, कनहरि† गुनहिँ चलावे ।
साँचै गहे झूँठ नहिँ आवे, भवसागर तरि जावे ॥९॥
दसएँ द्वार कि ताली खोलै, अविगति गतिहिँ समावे ।
सकल कामना मन ह्वै पूरन, मन कै मौज मिलावे ॥१०॥
एकादस नाम जो पूरन पावे, अगम निगम नहिं भावे ।
कह गुलाल तब सतगुरु चीन्हे, घरहीं में घर छावे ॥११॥

*ध्यान । †खेवट ।

॥ मिश्रत ॥

॥ शब्द १ ॥

मोहिं नाथ मिलावहु कौने गुना,
प्रभु करि लीजै अपनो जना ॥ टेक ॥
दुख सुख संपति जीव को लागी,
अंत काल बसि सात जना ॥१॥
यह मन चंचल चोर अन्याई,
भक्ति न आवत एक किना* ॥२॥
कृपा कियो प्रभु दृष्टि निहार्‍यो,
सब थकि लागि रहल कोना† ॥३॥
अमर मोर पिय उपजे न बिनसे,
पुलकि पुलकि मिलि कै गवना ॥४॥
कह गुलाल हम भये सोहागिनि,
अब नहिं अवना नहिँ जवना ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सब्द सनेह लगावल हो, पावल गुरु रीती ।
पुलकि पुलकि मन भावल हो, ढहली‡ भ्रमभीती§ ॥१॥
सतगुरु कृपा अगम भयो हो, हिरदय बिसराम ।
अब हम सब बिसरावल हो, निस्चय मन राम ॥२॥
छूटत जग ब्योहरवा हो, छूटल सब ठाँव ।
फिरब चलब सब थाकल हो, एकौ नहिं गाँव ॥३॥

*किनका । †किनारे । ‡गिरी । §दीवार ।

यहि संसार बेइलवत* हो, भूलो मत कोइ ।
माया बास न लागे हो, फिर अंत न रोइ ॥४॥
चेतहु क्योँ नहिं जागहु हो, सोवहु दिन राति ।
अवसर बीति जब जइहै हो, पाछे पछिताति ॥५॥
दिन दुइ रंग कुसुम है हो, जनि भूलो कोइ ।
पढ़ि पढ़ि सबहिं ठगावल हो, आपनि गति खोइ ॥६॥
सुर नर नाग ग्रसित भो हो, सकि रह्यो न कोइ ।
जानि बूझि सब हारल हो, बड़ कठिन है सोइ ॥७॥
निस्चै जो जिय आवै हो, हरि नाम बिचार ।
तब माया मन मानै हो, न तो वार न पार ॥८॥
संतन कहल पुकारी हो, जिन सूनल बानी ।
सो जन जम तेँ बाचल हो, मन सारँग पानी ॥९॥
अवरि उपाव न एको हो, बहु धावत कूर ।
आपुहि मोहत समरथ हो, नियरे का दूर ॥१०॥
प्रेम नेम जब आवे हो, सब करम बहाव ।
तब मनुवाँ मन माने हो, छोड़ो सब चाव ॥११॥
यह प्रताप जब होवे हो, सोइ संत सुजान ।
बिनु हरि कृपा न पावे हो, मत अवर न आन ॥१२॥
कह गुलाल यह निर्गुन हो, संतन मत ज्ञान ।
जो यहि पदहिं बिचारे हो, सोइ है भगवान ॥१३॥

*एक खुश्बूदार फूल की लता जो बहुत फैलती है और जिसका फूल बहुत जल्द कुम्हला जाता है उसके सरीखा ।

॥ शब्द ३ ॥

अवचक आयल पिया के सँदेसवा तब हम उठि सँग
लागलि हो ॥ टेक ॥

छूटलि लाज सरम धै खाइल छुटलि बंधु परिवारा हो।
नेम छुटल गति अवर भइल जिव, हँसत सकल संसारा हो १
प्रेम बान हिरदय गहि मास्यो, बिन सर* निकस्यो पारा हो।
घूमि घूमि घायल ज्यौं घूमत, गिरत परत मतवारा हो २
घर हम लाइ भये बौराहे, जरलि मढ़ी उगि† तारा हो।
बिगस्यो कमल भँवर रस लुबधो, पियत अमी रस धारा हो३
गाँव के लोगवा हँसि हँसि खेदे, घर कै भूत पछारा हो।
कह गुलाल जब ब्रह्म अगिन लगि, तब घर में मन मारा हो४

॥ शब्द ४ ॥

जात रही सुभ घरिया हो।
बिच ठइयाँ‡ परल बिचार हो सजनी ॥ १ ॥
इक कोस गइलो दुइ कोस गइलो।
सुगम मिलल ब्योपार हो सजनी ॥ २ ॥
नाना रूप निरंजन नागर।
करमन लिहल पसार हो सजनी ॥ ३ ॥
रोम रोम छबि बरनि न आवे।
इक साँईं कंत पियार हो सजनी ॥ ४ ॥
नेम धरम नहिं करम भरम नहिं।
निर्गुन रूप निनार हो सजनी ॥ ५ ॥

*गाँसी। †उदय हुआ। ‡ठौर, मुक़ाम।

कह गुलाल सतगुरु बलिहारी ।
मिलि हौं प्रान पियार हो सजनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसन अचरज देखहु जाई ।
जुग जुग दुबिधा पंथ चलाई ॥ १ ॥
अपनहिं काया गोपि लुटाई, पारथ बीर न धनुष चढ़ाई* २
घर घर नारि पुरुष सँग होई, एकै ठाकुर अवर न कोई ३
यह जग मिथ्या फिरत बनाई, चढ़त चरख फेरत दिन जाई ४
कहिं राजा कहिं दुख सुख-दाई, अपनहिं गोपी कान्ह कहाई ॥ ५ ॥
आतम राम सकल जग छाई, धंधा धोख मरत बौराई ॥६॥
कह गुलाल अब राम दोहाई, हम बचली संतन सरनाई ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु की सोभा बनी है रसाल ।
धन्न सो घरी धन्न वह पल है,
जा सिर उगो है भाल ॥ १ ॥
आठ पहर सनमुख हौं निरखो,
अनुभौ अविगत लाल ।
जासु दरस सुर नर मुनि ध्यावहिं,
खोजत फिरत बेहाल ॥ २ ॥

*पारथ अर्जुन का नाम है । जब अर्जुन श्री कृष्ण के गुप्त होने पर उन के रनवास को पहुंचाने गोकुल को चले तो रास्ते में काबा लोगों ने घेरा—अर्जुन ने उनको बान से मार कर भगाना चाहा पर कितना ही धनुष को चढ़ाया वह न चढ़ी और काबा लोगों ने ऐसे बीर के आछत उन को लूट लिया ।

बनी बनी कौतुक बनि आवे,
अनत कला सो ख्याल ।
लोभी लंपट हीन करम बसि,
ता को भयो है दयाल ॥ ३ ॥
का बरनोँ छबि बरनि न आवे,
अल्प बुद्धि सठ* बाल ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम,
लियो अपनाय गुलाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साँचा है साँचा हरिनाम, संत रटत हैं आठौ जाम ॥१॥
सनकादिकन्ह लियो सुकदेव, नारद कीन्हो संतन सेव ॥२
अंबरीक लियो जनक बिदेह, लियो जोगेसरन्ह माया खेह३
ध्रू प्रहलाद भरि लियो करार, लियो है कूबरी कंचन थार४
लियो हनुमान लियो सुग्रीम, लियो बिभीषन पंडो भीम५
नामदेव भरि लियो कबीर, लियो मलूका नानक धीर ६
रैदास लियो है मीराबाई, नरसी जन लियो खेल कन्हाई ७
यारीदास लियो गुरु सँग पाय, केसो बुल्ला दूनो भाय॥८॥
सतगुरु बुल्ला सहज लखाय, कह गुलाल सब चरन समाय ९

॥ शब्द ८ ॥

हरि चेतहु रे नर जन्म बाद†, डहकत फिरत कहा माया
बाद‡ ॥ १ ॥
नर भूले करि पुन्न पाप, जन्म जन्म होवै सँताप ॥२॥

---

*मूरख, दुष्ट । †निरफल । ‡झगड़ा ।

पाँच पचीस तिन* घरहिं लाग, निस बासर जरै अपनि आग ॥ ३ ॥
तीरथ ब्रत करे देव मानि, सबहिं भुले करि कुल की कानि४
उपजत बिनसत जन्म खोय, लाज भरो चलो मूँह गोय† ५
काहू काहु न खोजत पाय, गरब भुलो सब चलो गँवाय ६
कह गुलाल नहिं साँच आय, तातेँ धै धै काल खाय॥७॥

॥ शब्द ९ ॥

काया नगर सोहावन जहँ बसैँ आतम राम ॥१॥
मन पवन तहँ छाइब कठिन करेरो‡ काम ॥२॥
सुर नर नाग नचावहिं भोर होय भा साम ॥३॥
करम धरम देत भाँवरि फिरत रहे आठो जाम ॥४॥
ऐसो नगर कस भाइब जम सिर देत दमाम§ ॥५॥
कह गुलाल हम त्यागल हर दम बोलत राम ॥६॥

॥ शब्द १० ॥

हे मन गगन गरजि धुन भारी ।
लेके पवन भवन मन लावो थकित भईं नौ नारी ।
सुखमन सेज जे सुरति सोहागिनि निर्गुन कंत पियारी॥१॥
निसु बासर हर दम दम निरखत पूजलि आस हमारी॥२॥
जासु नाम सुर नर मुनि ध्यावहिं अगम बेद उच्चारी ।
सोइ प्रभुजी ने आनि कृपा कियो पल पल लेत करारी ॥ ३ ॥

*तीन । †मुँह छिपा कर । ‡कड़ा । §दमामा=डंका ।

प्रेम पगो मन थकित भयो है पूरन ब्रह्म निहारी ।
कह गुलाल राम को सेवक प्रभु की गती निनारी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

हे मन नाचहु प्रभु के आगे ।
सरन सरन करि चरनन लागे ॥ १ ॥
अंबरीक नाचे धरे करार, नारद नाचि बजावहिं तार॥२॥
नाचहिं ब्रह्मा सिव सनकादि, नाचहिं मुनि बषिष्टदे आदि ॥ ३ ॥
नाचहिं चाँद सूर मारूत, सुर नर मुनि नाचहिं भर जूत॥४॥
नाचहिँ कलि के भक्त अनूप, पुलकि पुलकि नाचहिँ मिलि रूप ॥ ५ ॥
कह गुलाल धर मनहिं नचावै, सोई साध परम पद पावै ॥६॥

॥ शब्द १२ ॥

देखो सखी पावस समय आजु आई ।
अपनी अपनी सक्ति जहाँ लगु, जीव जंतु सब छाई ॥१॥
पाँच पचीस बिरह रस भरि भरि निसु,दिन तनहिं सताई ।
मनुवाँ प्रबल अनल ह्वै डाहै, मानहु देत दोहाई ॥ २ ॥
गरजत गगन अघोर चहूँ दिसि, नाना भाँति सुनाई ।
मगन भयो पिय के रँग राते, अद्भुत खेल बनाई ॥३॥
पाप पुन्न तौलत दिन खोयहु, करबहु कैान उपाई ।
जम राजा जब धै लै चलिहैं, एको सुधि नहिं आई ॥४॥
प्रभु के साथ लगी है बाजी, सत्त कै खेल बनाई ।
जन गुलाल खेलहि तन मन दै, रुचि* सौं सीस चढ़ाई ॥५॥

*उत्साह ।

॥ शब्द १३ ॥

संतों फिर जिवना नहिं हौंदा* ।
का तैं भरमि भरमि गति खौंदा† ॥ १ ॥

माटी को तन माटिहिं मिलि है, पवनहिं पवन समौंदा‡ ।
सकल पदारथ छोड़ि नाम धन, झूठ फँसा री फौंदा§ ॥२॥
संत साध कै रीति न जानहि, मुवल अरु जिंदा गंदा ।
हरि मद माते मस्त दिवाने, प्रेम पियाला पिंदा‖ ॥३॥
दोजखभिस्त भिस्त नहिं दोजख, जिकिर¶ मुहाला** किंदा।
कह गुलाल अनुभौ जिन गायो, सोई मुसलम जिंदा ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

संतो जोगी एक अकेला ।
तातैं मरन जिवन नहिं खेला ॥ १ ॥

सत्त सबूरी सहज को कंथा†† सेल्ही सुभग सहेला ।
माति माति मगन घर फेरो, बहुरि न मनुवाँ दुहेला‡‡॥२॥
पाँचहुँ का परपंच मिटावो, मन पवना सँग रेला§§ ।
सुरति निरति ले आसन माँडो, तहाँ गुरू नहिं चेला ॥३॥
आठ पहर इक नाम उठतु है, ज्ञान ध्यान को मेला ।
कहै गुलाल अगमपुर बासी, संत चरन मन देला ॥४॥

*होगा । †खोताहै । ‡समाय जायगा । §फंदा । ‖पीते हैं । ¶सुमिरनी
**मुश्किल । ††कथरी, गुदरी । ‡‡मन को मस्त और मगन रख कर त्रकुटी की ओर उलटो तो फिर कुछ कठिनाई न रहेगी । §§मिल कर चलना ।

॥ शब्द १५ ॥

मन चित धरु रे, परम तत्त में रहु रे ॥ टेक ॥

ढंडस* करु मन तेँ दूर, सिर पर साहब सदा हजूर ॥१॥

रोम रोम जाके पद परगास, संत सभा में पावे बास ॥२॥

सत संतोष हृदय करु ज्ञान, काटि कर्म मिटि आवा जान ३

छोड़ि चंचलता होवहु सूर, निसु दिन झरत बदन† पर नूर ॥ ४ ॥

कह गुलाल मेरो नाम अधार, जम जीतल दुख गइल हमार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

जो चित लागै राम नाम अस ॥ टेक ॥

त्रृषावंत जल पियत अनँद अति ।
थकलहि गाँव‡ मिलत है जौन जस ॥ १ ॥

निर्धन धन सुत बाँझ बसत चित ।
संपति बढ़त न घटत जौन अस ॥ २ ॥

करत है कपट साँच करि मानत ।
मगन होत नर मूढ़ सकल पसु ॥ ३ ॥

प्रेम गलित चित सहन सील अति ।
सर्ब भूत पर करत दया रस ॥ ४ ॥

आनँद उदित अगम गति ज्ञानी ।
त्रिलोक नाथ पति काहे न होइ बस ॥ ५ ॥

सतगुरु प्रीति परम तत सत मत ।
बिमल बिमल बानी में रहत लस ॥ ६ ॥

*झगल, अकड़ । †चिहरा । ‡ठिकाना ।

कह गुलाल मिल संत सिरोमन ।
काहे करत कछु करत कवन कस ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

कहत है खाली मैं देखलौं राम, दुनिया भूलति माया के काम ॥ १ ॥
चारिउ जुग देख्यो सब ठाँव, तुह बिनु एको न देखलौं गाँव२
तीरथ ब्रत महँ तुम्हरो नाम, तुह बिनु यह जग कौने काम३
जोग जग्य देखलौं सब टोय*, तुह बिनु एकौ सिद्ध न होय४
नेम धर्म पूजा बिस्वास, तुह बिनु यह सब झूठी आस॥५॥
जप तप संजम नेम अचार, तुह बिनु भौंदू फिरत गँवार६
कहै गुलाल सुनौ नर लोय, आसा मुक्ति बहे मति कोय॥७

॥ शब्द १८ ॥

नदिया भयावनी कैसे चढ़ौं मैं बेरे† ॥ टेक ॥
घाट न चलत बाट नहिं पायो, संगी सुभग घनेरे ॥ १ ॥
दरब नहीं कछु हासिल‡ देना, उतरल चहो सबेरे ॥ २॥
सुमिरो चरन सत्तगुरू गोबिंद, प्रेम प्रीति हिये ले रे ॥३॥
ठौर ठौर घटवार टिकाने, केलि करत गयो डेरे ॥ ४ ॥
पायो घर मेटी सब संसा, संगी सकल छुटे रे ॥ ५ ॥
दास गुलाल दया सतगुरु की, निरभय है पद नेरे§ ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

सुनु सखि मोर बचन इक भारी ।
उलटि गगन चढ़ि लावो तारी ॥ १ ॥

*ढूंढ कर । †बेड़ा, नाव । ‡घाट महसूल । §पास ।

गहि करि बाँधो नवो दुवारी ।
हंसा निज घर कइल धमारी ॥ २ ॥
मनुवाँ मोर चालल रसना* री ।
बैठल जीव तहँ मिलल मुरारी ॥ ३ ॥
छिन छिन गारत नाम अगारी† ।
पीवत मनुवाँ भइल सुखारी ॥ ४ ॥
आवै न जाय मरै नहिं जीवै ।
अचल अमर घर डेरा लेवै ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम पिया कि पियारी ।
तब घर पावल छुटल धँधा री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

सोई दिन लेखे जा दिन संत मिलाप ॥ टेक ॥
संत के चरन कमल की महिमा, मोरेबूते‡बरनिनजाहि॥१॥
जल तरंग जल ही तें उपजे, फिर जल माहिं समाइ ॥२॥
हरि में साध साध में हरि हैं, साध से ग्रंतर नाहिं ॥३॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस साध सँग, पाछे लागे जाहिं ॥४॥
दास गुलाल साध की संगति, नीच परम पद पाहिं ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

रोम रोम में रमि रह्यो, पूरन ब्रह्म रहि छाय ।
अविगत गति को जानई, सिव सनकादिक धाय ॥१॥
सुर नर मुनि सब गावहीं, काहु न पायो पार ।
जो जन सरन गये भक्तन के, तिन पद पायो सार ॥२॥

*अंतर का रस लेने वाली जीभ । †फूल यानी शराब की रूह । ‡बल ।

अछय अमर आनंद है, ज्ञान उदित आलेख।
सर्ब भूत में पूरि रह्यो है, सो प्रभु छिन छिन देख॥३॥
निस दिन नौबति बाजही, निझर झरे तहँ नूर।
उमँगि उमँगि तहँ गावहीं, कोउ बैठे साधू सूर॥४॥
कह गुलाल सो पावई, सतगुरु की परतीत।
तब जिय निस्चय आवई, सबहिं भये तब मीत॥५॥

॥ चुने हुए दोहे ॥

सत्त सब्द गुन गायऊ, संतन प्रान अधार ।
अगम अगोचर दूरि है, कोऊ न पावत पार ॥१॥
उठ तरंग दसहूं दिसा, भाँति भाँति के राग ।
बिन पग नाच नचायऊ, बिनु रसना गुन गाय ॥२॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ नहीं, सहज सरूप अपार ।
जन गुलाल दिल सों मिलो, सोई कंत हमार ॥३॥
बिन जल कँवला बिगसेऊ, बिना भँवर गुंजार ।
नाभि कँवल जोती बरै, तिरबेनी उँजियार ॥४॥
सुखमन सेज बिछायऊ, पवढ़हिं प्रभू हमार ।
सुरति निरति ले जायऊ, दसो दिसा के द्वार ॥५॥
पुलकि पुलकि मन लायऊ, आवा गवन निवार ।
जन गुलाल तहँ भायऊ, जम का करिहै हमार ॥६॥
मन पवनहिं जीतो जबै, महसुन* माहिं समाध ।
सुखमन जोति सँवारेऊ, बरि बरि होत प्रकास ॥७॥
ओअंकार समाइलो, जोति सरूपी नाम ।
सेत सुहावन जगमगर, जीव मिलल सतनाम ॥८॥
जिन यह ब्रह्म बिचारल, सोई गुरू हमार ।
जन गुलाल सत बोलही, झूठ फिरहि संसार ॥९॥
दृष्टि पदारथ फरल सोइ, सहज कै परलि धमार ।
अति अद्भुत तहँ देखल हो, पुलकि पुलकि बलिहार ॥१०॥
बरनत बरनि न आवई, कोटि चंद छबि वार ।
दसव दिसा पूरब सोई, संत सदा रखवार ॥११॥

---

*महासुन्न ।

जिन पावल तिन गावल, अवर सकल भ्रम डार ।
कहै गुलाल मनोरवा*, पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम कै परल हिँडोलवा, मानिक बरल लिलार ।
कहँ गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार ।
काया नगर में रँग रचो, प्रान नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिं अगम अपार ।
प्रान तबहिं उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिं औतार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार ।
तीन लोक के ऊपरे, मिललहिँ कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीं, दुख सुख नहिं संताप ।
घटत बढ़त नहिं छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥
संत सभा में बैठ कै, आनँद उजल प्रकास ।
जन गुलाल पिय बिलसही†, पूजलि मन के आस ॥१८॥
बंक नाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार ।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छबि वार ॥१९॥
मुक्ता झरि बरषन लगो, दसो दिसा झनकार ।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार ॥२०॥
मानिक भवन उदिल तहाँ, भाँवर दै दै गाय ।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय ॥२१॥

*फाग के एक राग का नाम । †बिलास करता है ।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवैं उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजैं जिस में वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावैं और जो दुर्लभ ग्रंथ संतबानी के उन को मिलैं उन्हें भेज कर इस परोपकार के काम में सहायता करैं।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होता है तौ भी सर्व साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ से अधिक किसी का नहीं रक्खा गया है। जो लोग सबस्क्रैबर अर्थात पक्के गाहक होकर कुछ पेशगी जमा कर देंगे जिस की तादाद दो रुपये से कम न हो उन्हें एक चौथाई कम दाम पर जो पुस्तकैं आगे छपैंगी बिना माँगे भेज दी जायँगी यानी रुपये में चार आना छोड़ दिया जायगा परंतु डाक महसूल उन के ज़िम्मे होगा और पेशगी दाम न देने की हालत में वी॰ पी॰ कमिशन भी उन्हें देना पड़ेगा। जो पुस्तकैं अब तक छप गई हैं (जिन के नाम आगे लिखे हैं) सब एक साथ लेने से भी पक्के गाहकों के लिये दाम में एक चौथाई की कमी कर दी जायगी पर डाक महसूल और वी॰ पी॰ कमिशन लिया जायगा।

अब मीरा बाई के भजन और दरिया साहब बिहार के महात्मा का दरियासागर ग्रंथ जो अब तक दूसरी प्रति लेख की न मिलने के कारन रुका हुआ था हाथ में लिये गये हैं।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जून, १९१० ई॰ इलाहाबाद।

संतबानी पुस्तक-माला